31
Mat 16.5-12
Mar 8.13-21

| Warnung | vor | dem | Sauerteig |
|---|---|---|---|
| 1.) | | | 1.) |
| prp dt | | | |
| ἐν | | | |
| In | | den | Zeiträumen, |
| prp dt | | pn dt ne pl | |
| | | οἷς | |
| in | | welchen | war es |
| | | wdenen | |
| | | prp gn | |
| so, | | ausgrund | des |
| | | voraus | |
| | | angesichts | |
| | | durchweg | |
| | | während | |
| | | | pt a1 gn fe ps pl kt |
| | | ἐπι-συν-αχθεισῶν | |
| | | (faktischen) allgebiets-Zusammen-Geführtworden(seiend)en | |
| | | (faktischen) allgebiets-Gesammeltworden(seiend)en | |
| | | (faktischen) allgebiets-Gesyn-Agogtworden(seiend)en | |
| | | nu gn fe pl | |
| τῶν | | μυριάδων | τοῦ |
| der | | Zehntausenden | der |
| | | Myriaden | |
| gn ma | | | |
| ὄχλου | | | |
| Belästigenden | | entstand sie | eine |
| Menge | | | |
| Volksmenge, | | | |
| | | | prp ak |
| | | ὥσ-τε | |
| Enge, | | als-außerdem | hinein in |
| | | so daß | hfür |
| 3 p pl ak ma | | | |
| sie | | die | Gefahr |
| | | if pr | pn ak ma pl |
| | | κατα-πατεῖν | ἀλλήλους |
| bestand es, | | herab-zu treten | einander, |
| | | allbezüglich-zu treten | |
| | | nieder-zu treten | |
| | | 3 p a1 md ig | if pr |
| | | ἤρξατο | λέγειν |
| als-außerdem | | (jetzt) individuell anfing er | zu worten |
| so daß | | (jetzt) individuell begann er | die Worte zu gebrauchen |
| | | | zu sagen |
| ptp ak | | | ak ma pl |
| πρὸς | | τοὺς | μαθητὰς |
| zu | | den | Lernenden, |
| | | | Jüngern |
| 3 p gn ma | | av | |
| αὐτοῦ | | πρῶτον | |
| seinerseits | | vorher | : |
| seinen, | | zuerst | |

**Warnung vor dem Sauerteig**

In
den
Zeiträumen,
in
welchen
es
so
war,
ausgrund
des
(faktischen)a
(fortlaufenden)pt
allgebiets
Zusammengeführtwordenseins
der
Zehntausenden
der
Volksmenge,
entstand
eine
Enge,
so
daß
hfür
sie
die
Gefahr
bestand,
einander
niederzutreten,
so
daß
er
(jetzt)a
individuell
anfing,
vorher
zu
seinen d Lernenden
die
Worte
zu
gebrauchen:

| 2 p pl pr i! | 3 p pl dt ma | | |
|---|---|---|---|
| προσ-έχετε | ἑ-αυτοῖς | *Achtet* | |
| Zu *euch* hin-habet ihr | euch-selber | aufmerksam | Röm 16.17 |
| Aufmerket ihr | | auf | |
| Aufmerksam *achtet auf* ihr | | euch | |
| | | selber!, | |
| | | [1]*weg* | |
| | | [1]von | |
| | | [1]dem | |
| | | [1]Sauer*tei*g | Mat 13.33<br>Luk 13.21<br>1 Kor 5.7+8 |
| | | [1]der | |
| | | [1]Pharisäer, | Mat 16.6+11<br>Mar 8.15 |
| | | [1]welcher | |
| | | [1]irgend | |
| | | [1]Heuchelei | |
| | | [1]ist. | |

| ℵ, A, C, R: | hebrÜ: gn ma pl |
|---|---|
| \|τῶν | Φαρισαῖων\| |
| \|der | Klauespalter\| |
| | \|gleichteilig Abspaltenen\| |
| | \|Pharisäer\| |

| (NÜ) | grÜ: gn ma pl |
|---|---|
| (Φαρισαῖοις) | |
| (*Ab*trenner) | (Erläuternden) |
| (Gespaltenen) | (Pharisäer), |
| (Pharisäer) | |

| pna no fe |
|---|
| ἥ-τις |
| welcher-irgend |

| 3 p pr | |
|---|---|
| ἐστὶν | |
| ist sie | *eine* |
| ist sie | *eine* |
| ist es | *ein* |
| ist es | *ein* |
| ist sie | *eine* |
| ist sie | *eine* |

| no fe |
|---|
| ὑπό-κρισις |
| *Be***urteilung-unter***halb einer versteckten Maske* |
| *Verberg***ung** *eines anderen persönlichen* **Urteils-unter** *dem nach außen Dargestellten* |
| **Gericht-unter***halb einer versteckten Maske* |
| *anders* **Richten-***als* **unter** *dem nach außen Dargestellten* |
| Heuchelei |
| Schauspielerei |

| [B, L, P 075: | hebrÜ: gn ma pl] |
|---|---|
| [τῶν | Φαρισαῖων] |
| [der | Klauespalter] |
| | [gleichteilig Abspaltenen] |
| | [Pharisäer]. |

[1]aL,
Codex Vaticanus,
Codex Regius
und
Papyrus 075
schreiben
(Wortreihenfolge):
„*weg*
von
dem
Sauer*tei*g,
welcher
irgend
Heuchelei
der
Pharisäer
ist.“

**Hinweise**

*in Bezug auf*

**das**

**Nicht-Fürchten**

-

**Fünf**

**Spätzlein**

2.) 2.)

pn no ne [A, B, C, R]

οὐ-δ-ὲν [δὲ]

**Nicht-aber-ein** **[aber]**

א, C: pt pe no ne md/ps

|κεκαλυμμένον|

**|sich** *darstellende als den Anklage***ruf** *noch nicht* **Be***end***ethabendes**
**|sich Verhüllthabendes**
**|sich Verdeckthabendes**
**|sich Verschleierthabendes**

pt pe no ne md/ps (Vorgang + Zustand)

*sich darstellende als den Anklage***ruf** *noch nicht* **Be***end***etworden(seiend)es|**
**Verhülltworden(seiend)es|**
**Verdecktworden(seiend)es|**
**Verschleiertworden(seiend)es|**

[A, B, R: pt pe no ne md/ps

**[συγ-κεκαλυμμένον]**
**[sich** *darstellendes als ins***gesamt-***den Anklage***ruf** *noch nicht* **Be***end***ethabendes**
**[sich zusammen-Verhüllthabendes**
**[sich** *ins***gesamt-Verdeckthabendes**
**[sich** *ins***gesamt-Verschleierthabendes**

pt pe no ne md/ps (Vorgang + Zustand)]

*sich darstellendes als ins***gesamt-***den Anklage***ruf** *noch nicht* **Be***end***etworden(seiend)es]**
**zusammen-Verhülltworden(seiend)es]**
*ins***gesamt-Verdecktworden(seiend)es]**
*ins***gesamt-Verschleiertworden(seiend)es]**

3 p pr

ἐστιν

**ist es,**

pna no ne

ὃ οὐκ

**welches** **nicht**

3 p ft ps

ἀπο-καλυφθήσεται

**wird vom-Ruf** *her* **be***kannt***ge***mach***t werden es**
**wird von-***der Be***ruf***ung her* **be***kannt***ge***mach***t werden es**
**wird ent-hüllt werden es,**
**wird** *zur* **Ent-Deck***ung* **ge***bracht* **werden es**
**wird** *als* **Decke-wegge***nomm***en werden es**
**wird ent-schleiert werden es**

καὶ

**und** *ein*

aj no ne pna no ne

κρυπτὸν ὃ

**Verborgenes,** **welches**
**Verstecktes**

3 p ft ps

οὐ γνωσθήσεται

**nicht** **wird wissen***d***ge***mach***t werden es**
**wird kennen***d***ge***mach***t werden es**
**wird kenntlich werden es**
**wird kenntlich ge***mach***t werden es.**

[1]aL, **Codex Ephraemi** schreibt:
„**Aber es ist aber nicht eines,** *das* (*innerhalb eines Zeitverlaufs*)[pt] **verhüllt worden ist,**“

**Hinweise**
*in Bezug auf*
**das**
**Nicht-Fürchten**
-
**Zwei**
**Spätzlein**

Mat 10.26-31

[1]**Es**
[1]**ist**
[1]**aber**
[1]**nicht**
[1]**eines,**
[1]*das*
[1](*innerhalb eines Zeitverlaufs*)[pt]
[1]**verhüllt**
[1]**worden**
[1]**ist,**
**welches**
**nicht**
**enthüllt**
**werden**
**wird,**
**und**
*ein*
**Verborgenes,**
**welches**
**nicht**
**kenntlich**
**ge***mach***t**
**werden**
**wird.**

Mar 4.22
Luk 8.17

1 Kor 4.5

[1]aL,
**Codex Alexandrinus**,
**Codex Vaticanus**
und
**Textus Receptus**
schreiben:
„**Aber**
**es**
**ist**
**aber**
**nicht**
**eines,**
*das*
(*innerhalb eines Zeitverlaufs*)[pt]
**zusammen**
**verhüllt**
**worden**
**ist,**“

ohne (...) a+pt lesbar

| 3.) | | | 3.) | |
|---|---|---|---|---|
| prp ak | | prp ak | pn ak ne pl | |
| ἀνθ’ | | | ὧν | Darum, |
| Anstatt | | *von* | welchen | weil |
| | | Darum, weil | | so |
| pna ak ne pl | | | | viele |
| ὅσ-α | | | | |
| welche-diese | | | *Dinge* | *Dinge*, |
| so viele, wie | | | | wie |
| prp dt | | | | ihr |
| ἐν | | | τῇ | (*de facto*)[a] |
| in | | | dem | in |
| dt fe | | | 2 p pl a1 kt | dem |
| σκοτίᾳ | | | εἴπατε | Finsteren |
| *völlig Be*schatteten | | | (*de facto*) sagt ihr, | sagt, |
| Finsteren | | | | wird |
| prp dt | | | | in |
| ἐν | | | τῷ | dem |
| in | | | dem | Licht |
| dt ne | | | 3 p ft ps | gehört |
| φωτὶ | | | ἀκουσθήσεται | werden, |
| Licht | | | wird gehört werden es, | und |
| | | | pna ak ne | welches |
| καὶ | | | ὃ | ihr |
| und | | | welches | (*de facto*)[a] |
| prp ak | | | | zu |
| πρὸς | | | τὸ | dem |
| zu *hin* | | | dem | Ohr |
| ak ne | | | 2 p pl a1 kt | *hin* |
| οὖς | | | ἐλαλήσατε | in |
| Ohr | | | (*de facto*) sprecht ihr | den |
| prp dt | | | | Kammern |
| ἐν | | | τοῖς | sprecht, |
| in | | | den | wird |
| dt ne pl | | | 3 p ft ps | *per* |
| ταμείοις | | | κηρυχθήσεται | Herold |
| Wirtschaft*räum*en | | | wird geheroldet werden es | gebiets |
| Schatzkammern | | | wird *per* Herold *aus*ge*ruf*en werden es | der |
| Vorratskammern | | | wird gepredigt werden es | Gebäude*söller* |
| Kammern, | | | | *aus*ge*ruf*en |
| Kemenaten | | | | werden. |
| | | | prp gn | |
| | | ἐπὶ | | |
| | | gebiets | | |
| | | | gn ne pl | |
| τῶν | | | δωμάτων | |
| der | | | Gebäude | |
| | | | Gebäude*söller*. | |
| | | | Gebäude*dächer* | |

1 Tim 5.24+25

Mat 6.6

| 4.) | | 4.) | |
|---|---|---|---|
| | 1 p pr | | |
| λέγω | | | Ich |
| Worte ich | | - | |
| *Die* Wort*e gebrauch*e ich | | *zu* | aber |
| Sage ich | | - | |
| | | 2 p pl dt | *gebrauch*e |
| δὲ | | ὑμῖν | |
| aber | | euch, | *die* |
| | | dt ma pl | |
| τοῖς | | φίλοις | Wort*e* |
| den | | Freunden, | *zu* |
| | 1 p gn | | |
| μου | | | euch, |
| meiner*seits* | | *:* | |
| meinen, | | | meinen [d] Freunden*:* |
| | | pk+a1 kj | |
| μὴ | | | Ihr |
| Nich*t* | | | |
| | | 2 p pl a1 kj ps ig | *soll*(te)t |
| φοβηθῆτε | | | |
| (*jetzt*) fürchtenge*macht* werden *soll*(te)t ihr | | | (*jetzt*)[a] |
| (*jetzt*) *in* Furcht *versetz*t werden *soll*(te)t ihr | | | |
| (*jetzt*) *von* Furcht *erfaß*t werden *soll*(te)t ihr | | | nich*t* |
| | prp gn | | |
| ἀπὸ | | τῶν | von |
| von | | den | |
| | | א, א², A, R: pt pr gn ma pl | den |
| \|ἀπο-κτεννόντων\| | | | |
| Weg-Schaffen{*lass*en}den | | | den |
| *hin*weg-Umbringen{*lass*en}den | | | |
| ent*hemmt* -Umbringen{*lass*en}den | | | Leib |
| Umbringen{*lass*en}den[vn] | | | |
| | | [B: aS] | [vn]Umbringen{*lass*en}den |
| [ἀπο-κτεινόντων] | | | *in* |
| | | ak ne | |
| τὸ | | σῶμα | Furcht |
| den | | Leib | |
| | | Körper | *versetz*t |
| | | א: prp ak | |
| καὶ | | \|μετ’ | werden |
| und | | \|nach | |
| | 3 p pl ak ne | [א², A, B, R: prp ak | [1]und |
| αὐτὰ\| | | [μετὰ | [1]nach |
| sie\| | | [nach | |
| \|selbigen\| | | | [1]selbigen |
| | | pna ak ne pl] | |
| | | ταῦτα] | [1]*angesichts* |
| *all* | | diesen] | |
| | *prp gn* | | [1]*ihres* |
| | | | |
| *voraus* | | *ihrerseits* | [1](*fortlaufenden*)[pt] |
| *angesichts* | | *ihres* | |
| *ausgrund* | | | [1]nich*t*{*s*} |
| | | pt pr gn ma pl | |
| μὴ | | ἐχόντων | [1]Habens |
| nich*t*{*s*} | | Habenden | |
| | | | [1]*auch* |
| | | | |
| *auch* | | *nur* | [1]*nur* |
| | א, א², B, R: aj ak ne kp | [A: aj ak ne] | |
| \|περισσότερόν\| | | [περισσὸν] | [1](*de facto*)[a] |
| \|um *und* um mehr\| | | [um *und* um] | [1]darüber |
| \|darüber *hinaus* mehr\| | | [über *das* Maß *hinaus*] | [1]*hinaus* |
| | pna ak ne | if a1 kt | |
| τι | | ποιῆσαι | [1][ir]etwas |
| irgend | | (*de facto*) *zu* tun. | |
| [ir]etwas | | (*de facto*) *zu* machen | [1]mehr |
| | | | [1]*zu* |
| | | | [1]tun. |

Joh 15.14+15

Jes 51.12
Jer 1.8
Hes 3.9
Spr 29.25
Apk 2.10

[1]aL, **2. Korrektor Codex Sinaiticus**, **Codex Vaticanus** und **Textus Receptus** schreiben:
„**und nach** *all* **diesen** *angesichts ihres* (*fortlaufenden*)[pt] **nich***ts* **Habens**
*auch nur* (*de facto*)[a] **darüber** *hinaus* [ir]**etwas mehr** *zu* **tun.**“
[1]aL, **Codex Alexandrinus** schreibt:
„**und nach** *all* **diesen** *angesichts ihres* (*fortlaufenden*)[pt] **nich***ts* **Habens**
*auch nur* (*de facto*)[a] **über** *das* **Maß** *hinaus* [ir]**etwas** *zu* **tun.**“

ohne (...) a+pt lesbar

| 5.) | | | 5.) |
|---|---|---|---|
| | 1 p ft | [A, B, R] | |
| | ὑπο-δείξω | [δὲ] | |
| | Unterrichtend-zeigen werde ich | [aber] | |
| | Beispiel geben werde ich | | |
| | 2 p pl dt | prp ak | pn ak ma |
| | ὑμῖν | | τίνα |
| | euch | in Bezug auf | wen |
| | 2 p pl a1 kj ps ig (Zustand) | | 2 p pl a1 kj ps ig (Vorgang) |
| | φοβηθῆτε | | |
| | (jetzt) fürchtengemacht sein sollte ihr | | (jetzt) fürchtengemacht werden sollte ihr |
| | (jetzt) in Furcht versetzt sein sollte ihr, | | (jetzt) in Furcht versetzt werden sollte ihr, |
| | (jetzt) von Furcht erfaßt sein sollte ihr | | (jetzt) von Furcht erfaßt werden sollte ihr |
| | ✖ | | [A, B, R: |
| | \|,\| | | [: |
| | 2 p pl a1 i! ps ig (Zustand) | | 2 p pl a1 i! ps ig (Zustand / Vorgang)] |
| | [φοβήθητε] | | |
| | (Jetzt) fürchtengemacht seid ihr | | (Jetzt) fürchtengemacht werdet ihr] |
| | [(Jetzt) in Furcht versetzt seid ihr | | (Jetzt) in Furcht versetzt werdet ihr] |
| | [(Jetzt) von Furcht erfaßt seid ihr | | (Jetzt) von Furcht erfaßt werdet ihr] |
| | ✖ | prp ak | ak ma |
| | | | τὸν |
| | \|nämlich\| | in Bezug auf | den, |
| | prp ak | ak ne | prp ak |
| | μετὰ | τὸ | |
| | nach | dem | hinein in |
| | | | hfür |
| | ak ma | | |
| | irgend | genehmigt wurde es, | irgend |
| | rfeinen | | jemand |
| | if a1 kt | | pt pr ak ma |
| | ἀπο-κτεῖναι | | ἔχοντα |
| | (de facto) weg-zuschaffen | | Habenden |
| | (de facto) hinweg-umzubringen | | |
| | (de facto) enthemmt-umzubringen | | |
| | (de facto) umzubringenvn, | | |
| | ak fe | | ✖: if pr |
| | ἐξ-ουσίαν | | \|ἐμ-βάλλειν\| |
| | was aus-dem Sein ist | | \|hinein-werfen zu lassen\| |
| | aus dem Bereich-des Seins | | \|hinein-treiben zu lassen\| |
| | Autorität, | | |
| | Vollmacht | | |
| | [A, B, R: if a1 kt] | | prp ak |
| | [ἐμ-βαλεῖν] | | εἰς |
| | [(de facto) hinein-werfen zu lassen] | | hinein in |
| | [(de facto) hinein-treiben zu lassen] | | hin |
| | | | gr-hebrÜ: ak fe |
| | τὴν | | γέ-εν-ναν |
| | das | | Erdland-der Erstarrung |
| | die | | Schlucht,-da-Schlummern ist |
| | die | | Schlucht-des Gewimmers-und Schlummerns |
| | die | | Hölle |
| | die | | Ge-hen-na |
| | ✖ | | [A, B, R] |
| | \|.\| | | [!] |

[1]aL, Codex Alexandrinus, Codex Vaticanus und Textus Receptus schreiben:
„Ich werde euch aber unterrichtend zeigen,
in Bezug auf wen ihr (jetzt)[a] in Furcht versetzt werden sollte:
Werdet (jetzt)[a] in Bezug auf denjenigen in Furcht versetzt,
nach dem es [h]für einen genehmigt wurde, (de facto)[a] jemand umzubringen[vn],
Autorität habenden,
(de facto)[a] [h]in die Gehenna hineinwerfen zu lassen!“

| | |
|---|---|
| [1]Ich | |
| [1]werde | |
| [1]euch | |
| [1]unterrichtend | |
| [1]zeigen, | |
| [1]in | |
| [1]Bezug | |
| [1]auf | |
| [1]wen | |
| [1]ihr | |
| [1](jetzt)[a] | |
| [1]in | |
| [1]Furcht | |
| [1]versetzt | |
| [1]werden | |
| [1]sollte, | |
| [1]nämlich | |
| [1]in | |
| [1]Bezug | |
| [1]auf | |
| [1]den, | Jes 8.13<br>Apk 1.18 |
| [1]nach | |
| [1]dem | |
| [1]es | |
| [1h]für | |
| [1ir]einen | |
| [1]genehmigt | Hi 1.12<br>Hi 2.6 |
| [1]wurde, | |
| [1](de facto)[a] | |
| [1]jemand | |
| [1]umzubringen[vn], | |
| [1]Autorität | Ps 119.20 |
| [1]habenden, | |
| [1h]in | |
| [1]die | |
| [1]Gehenna | Jer 7.31+32<br>Mat 23.15 |
| [1]hineinwerfen | Mat 5.22+29 |
| zu | |
| lassen. | Mat 13.42+50 |

ohne (...) a+pt lesbar

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | 1 p pr | |
| ναὶ | | λέγω | |
| Ja, | | worte ich | |
| Gleichwohl | | *die* Worte *gebrauche* ich | |
| | | sage ich | |
| | | 2 p pl dt | |
| | | ὑμῖν | |
| - | | euch | |
| *zu* | | | |
| - | | | |
| | | | |
| | | | |
| | : | | |
| | *prp ak* | | pn ak ma |
| | | τοῦτον | |
| *In Bezug auf* | | diesen | |
| | 2 p pl a1 i! ps ig (Zustand) | | 2 p pl a1 i! ps ig (Vorgang) |
| φοβήθητε | | | |
| (*jetzt*) fürchtenge*macht* seid ihr | | (*jetzt*) fürchtenge*macht* werdet ihr | |
| (*jetzt*) *in* Furcht *versetzt* seid ihr | | (*jetzt*) *in* Furcht *versetzt* werdet ihr | |
| (*jetzt*) *von* Furcht *erfaßt* seid ihr | | (*jetzt*) *von* Furcht *erfaßt* werdet ihr | |
| | | | |
| | | | |
| | ! | | |
| 6.) | | | 6.) |
| | av | | |
| οὐχὶ | | | |
| Ist's nicht | | *daß* | |
| Ist's nicht *so*, | | : | |
| | aj no ne pl | | no ne pl |
| πέντε | | στρουθία | |
| fünfe | | Spätzlein | |
| | ⁎, B: 3 p pl pr md/ps | | 3 p pl pr md/ps (Vorgang) |
| \|πωλοῦνται\| | | | |
| \|sich verkaufen *lassen* sie | | verkauft werden sie\| | |
| | [A, R: 3 p pr md/ps | | 3 p pr md/ps (Vorgang)] |
| [πωλεῖται] | | | |
| [sich verkauft es] | | [verkauft wird es] | |
| *prp gn* | ItÜ: gn ne pl | | aj gn ne pl |
| | ἀσ-σαρίων | | δύο |
| *für* | Asse-*k*leine | | zweie, |
| | As-arion, | | |
| | | | |
| | | | |
| | ?, | | |
| | | nu no ne | prp gn |
| καὶ | ἓν | | ἐξ |
| und | eines | | aus |
| | | 3 p gn ne pl | |
| αὐτῶν | | οὐκ | |
| ihrer | | nicht | |
| ih*nen* | | | |
| | | 3 p pr | |
| ἔστιν | | | |
| ist es | | *ein* | |
| | | | pt pe no ne md/ps |
| | ἐπι-λελησμένον | | |
| | sich *all*gebiets-Vergessen*lass*enhabendes | | |
| | sich *all*gebiets-Unbemerkt*bleib*en*lass*enhabendes | | |
| | | | pt pe no ne md/ps (Vorgang + Zustand) |
| | | | |
| | *all*gebiets-Vergessenworden(seiend)es | | |
| | *all*gebiets-Unbemerkt*gebliebe*nworden(seiend)es | | |
| *prp gn* | | | gn ma |
| ἐν-ώπιον | τοῦ | | θεοῦ |
| im-Auge | des | | *Ein*setzers |
| | | | *Ab*setzers |
| | | | Schau*end*en |
| | | | Gottes. |

[1]aL, Codex Alexandrinus und Textus Receptus schreiben:
„Ist's nicht *so*, *daß* sich fünf Spätzlein *für* zwei Assarion verkauft?“

| | |
|---|---|
| Ja, | |
| Ich | |
| *gebrauche* | |
| *die* | |
| Worte | |
| *zu* | |
| euch: | |
| *in* | |
| *Bezug* | |
| *auf* | |
| diesen | Jes 8.13 |
| werdet | |
| (*jetzt*)[a] | |
| *in* | |
| Furcht | |
| *versetzt*! | |
| [1]Ist's | |
| [1]nicht | |
| [1]*so*, | |
| [1]*daß* | |
| sich | |
| [1]fünf | |
| [1]Spätzlein | |
| [1]*für* | |
| [1]zwei | |
| [1]Assarion | in Mat 10.29 „zwei“ |
| [1]verkaufen | |
| [1]*lass*en?, | |
| und | |
| nicht | |
| eines | weitere inhaltliche Text-Unterscheidung gegenüber Mat 10.29, dort: „*ohne zustimmendes* Nicken“ bzw. „*ohne einen* Deut“ |
| aus | |
| ih*nen* | |
| ist | |
| *ein* | |
| sich | |
| *all*gebiets | Ps 104.27+28 Mat 6.26 Heb 4.13 |
| Vergessen*lass*enhabendes | |
| im | welcher „Gott“ nicht eindeutig identifizierbar trotz des Mat 10.29 „Vaters“ |
| Auge | |
| des | |
| Gottes. | |

interlinearer |Text| = danebenstehend eine abweichende Lesart: [Text] - gelb = ausgewählter Text der Interlinear-Übersetzung - unterstrichen = DaBhaR-Konkordanz
ef = Endpunkt, ig = Anfangspunkt, kp = Zusammenziehung in einem Punkt, kt = Tatsache feststellend, gm = Sprichwort (Auslegung!) – md/ps = medio-passiv

ohne (...) a+pt lesbar

| 7.) | | 7.) | |
|---|---|---|---|
| ἀλλὰ | καὶ | Jedoch, | |
| *Etwas* **anderes** *war bestimmt* | **auch** | auch | |
| **Jedoch** | | | |
| | no fe pl | | |
| αἱ | τρίχες | die | |
| **die** | **Haare** | Haare | |
| | gn fe | | |
| τῆς | κεφαλῆς | eures [d] Hauptes | Luk 21.18 |
| **des** | **Hauptes** | sind | |
| 2 p pl gn | aj no fe pl | | |
| ὑμῶν | πᾶσαι | alle | |
| **eurer***seits* | **alle** | gezählt | |
| **eure,** | | worden. | |
| 3 p pe md/ps | 3 p pe md/ps (Vorgang + Zustand) | | |
| ἠρίθμηνται | | [1]Daher, | |
| **sich zählen** *lass***en haben sie** | **gezählt worden sind sie.** | [1]fürchtet | |
| | κ, A, R | | |
| μὴ | οὖν | [1]euch | |
| **Nich***t* | **daher** | [1]nich*t*! | |
| **Nicht***s* | | | |
| | 2 p pl pr i! md/ps | | |
| φοβεῖσθε | | *Voraus* | |
| **euch fürchtet ihr** | | *der* | |
| *individuell* **befürchtet ihr** | | | |
| 2 p pl pr i! md/ps (Zustand) | 2 p pl pr i! md/ps (Vorgang) | | |
| **fürchtenge***mach***t seid ihr** | **fürchtenge***mach***t werdet ihr** | vielen | |
| *in* **Furcht** *versetz***t seid ihr** | *in* **Furcht** *versetz***t werdet ihr** | Spätzlein | |
| *von* **Furcht** *erfaß***t seid ihr** | *von* **Furcht** *erfaß***t werdet ihr** | *eigne***t** | |
| | | ihr | |
| | | *euch* | |
| | ! | **durch***weg* | |
| | *prp gn* | *zur* | |
| *Voraus* | *der* | *Vollendungs***bring***ung***!** | Mat 6.26<br>Mat 12.12<br>Luk 12.24 |
| *Angesichts* | | | |
| aj gn ne pl | gn ne pl | | |
| πολλῶν | στρουθίων | | |
| **vielen** | **Spätzlein** | | |
| | 2 p pl pr | | |
| δια-φέρετε | | [1]aL, | |
| *hin***durch-tragt ihr** | | **Codex Vaticanus** | |
| **durch-Tragen** *von Leid zu einer höheren Vollendungsstufe gelang***t ihr** | | schreibt | |
| *euch* **durch***weg-zur Vollendungs***bring***ung eigne***t ihr** | | („**Daher**“ `fehlt`): | |
| *als* **Vorzüglich***ere leb***t ihr** | | „**Fürchtet** | |
| | | **euch** | |
| | ! | **nich***t***!**“ | |

interlinearer |Text| = danebenstehende eine abweichende Lesart: [Text] - gelb = ausgewählter Text der Interlinear-Übersetzung - unterstrichen = DaBhaR-Konkordanz
ef = Endpunkt, ig = Anfangspunkt, kp = Zusammenziehung in einem Punkt, kt = Tatsache feststellend, gm = Sprichwort (Auslegung!) – md/ps = medio-passiv

**Das**

**Gleichworten**
**Gleichsagen**
*Sich*-**Bekennen**

**und**

**das**

**individuell Leugnen**
*sich* **Weigern**
*sich Ver***weigern**

8.) 8.)

1 p pr

| | | |
|---|---|---|
| λέγω | | δὲ |
| **Worte ich** | - | **aber** |
| *Die* **Worte** *gebrauche* **ich** | *zu* | |
| **Sage ich** | - | |

2 p pl dt ℵ, ℵ¹ [A, B, B², R, P 075]

| | | |
|---|---|---|
| ὑμῖν | | [ὅτι] |
| **euch,** | \|:\| | \|daß\| |
| | | \|:\| |

aj no ma pn no ma

| | | |
|---|---|---|
| πᾶς | ὃς | ἂν |
| **All***jeder***,** | **welcher** | **gleichsam** |
| **Jeder** | | *in diesem* **Fall** |

ℵ, B², R, P 075: 3 p a1 kj kt

|ὁμο-λογήσῃ|
**|(***de facto***)** *inhaltlich gemäß der geweihten Schrift* **gleich-worten** *soll***te er|**
**|(***de facto***)** *in* **gleich***en***-Wort***en übereinstimm***en** *und bestätig***en** *soll***te er|**
**|(***de facto***) gleich***es-gemäß dem Bedeutungsinhalt der geweihten Schrift* **sagen** *soll***te er|**
**|(***de facto***)** *sich* **bekennen** *soll***te er** *zu mir***|**

[A, B: 3 p ft]

**[ὁμο-λογήσει]**
**[***inhaltlich gemäß der geweihten Schrift* **gleich-worten wird er]**
**[***in* **gleich***en***-Wort***en übereinstimm***en** *und bestätig***en wird er]**
**[gleich***es-gemäß dem Bedeutungsinhalt der geweihten Schrift* **sagen wird er]**
**[***sich* **bekennen wird er** *zu mir***]**

prp dt 1 p dt prp gn

| | | |
|---|---|---|
| ἐν | ἐμοὶ | ἔμ-προσ-θεν |
| **in***folge von* | **mir** | *ein***-zu** *hin-ge***setzt** |
| **in** *Verbindung mit* | | **vorne** *vor* |

gn ma pl

| | |
|---|---|
| τῶν | ἀν-θρ-ώπων |
| **den** | **Hinauf-Gewandt-Eraugenden** |
| | **empor-ragend-Augenden** |
| | **Hinauf-Gedrehten** |
| | **Männer-Augen** |
| | **Antlitzen²-***der* **Männer¹** |
| | **Angesichtern²-***der* **Männer¹** |
| | **Menschen,** |
| | **Leuten** |

[1]aL, **Codex Alexandrinus**, und **Codex Vaticanus** schreiben:
„**Ich aber** *gebrauch***e** *die* **Wort***e zu* **euch:**
**All***jeder***,**
**welcher gleichsam**
*sich* **in***folge von* **mir vorne** *vor* **den Menschen** *zu mir* **bekennen wird,**“
[1]aL, **2. Korrektor Codex Vaticanus**, **Textus Receptus** und **Papyrus 075** schreiben:
„**Ich aber** *gebrauch***e** *die* **Wort***e zu* **euch:**
**All***jeder***,**
**welcher gleichsam**
*sich* **(***de facto***)[a] in***folge von* **mir vorne** *vor* **den Menschen** *zu mir* **bekennen** *soll***te,**“

**Das**
*Sich*-**Bekennen**
**und** — Mat 10.32+33
**das**
*individuell*
**Leugnen**
[1]**Ich**
[1]**aber**
[1]*gebrauch***e**
[1]*die*
[1]**Wort***e*
[1]*zu*
[1]**euch***:*
[1]**All***jeder***,**
[1]**welcher**
[1]**gleichsam**
[1]*sich*
[1]**(***de facto***)[a]**
[1]**in***folge*
[1]*von*
[1]**mir**
[1]**vorne**
[1]*vor*
[1]**den**
[1]**Menschen** — Ps 119.46
[1]*zu*
[1]*mir*
[1]**bekennen** — Mat 10.32; Röm 10.9; 1 Joh 2.23
[1]*soll***te,**

| | | |
|---|---|---|
| καὶ<br>**auch** | [1]*zu* | |
| ὁ<br>**der** | [1]*ihm* | 1 Sam 2.30 |
| no ma<br>υἱὸς<br>**Sohn** | [1]**wird**<br>[1]*sich* | |
| τοῦ<br>**des** | [1]**auch**<br>[1]**in***folge* | |
| gn ma<br>ἀν-θρ-ώπου<br>**Hinauf-Gewandt-Eraugenden**<br>**empor-ragend-Augenden**<br>**Hinauf-Gedrehten**<br>**Mannes-Auges**<br>**Antlitz**[2]*-des* **Mannes**[1]<br>**Angesicht**[2]*-des* **Mannes**[1]<br>**Menschen** | [1]*von*<br>[1]**ihm**<br>[1]**der**<br>[1]**Sohn**<br>[1]**des**<br>[1]**Menschen** | |
| 3 p ft<br>ὁμο-λογήσει<br>*inhaltlich gemäß der geweihten Schrift* **gleich-worten wird er**<br>*in* **gleich***en*-**Wort***en übereinstimm***en** *und bestätig***en wird er**<br>**gleich***es-gemäß dem Bedeutungsinhalt der geweihten Schrift* **sagen wird er**<br>*sich* **bekennen wird er** *zu ihm* | [1]**vorne**<br>[1]*vor* | |
| prp dt<br>ἐν<br>**in***folge von*<br>**in** *Verbindung mit* | [1]**dem**<br>[1]**GOTT** | |
| 3 p dt ma<br>αὐτῷ<br>**ihm** | [1]**bekennen.** | Apk 3.5 |
| prp gn<br>ἔμ-προσ-θεν<br>*e***in-zu** *hin-ge***setzt**<br>**vorne** *vor* | [1]aL,<br>1. Korrektor Codex Sinaiticus,<br>Codex Alexandrinus,<br>Codex Vaticanus<br>und<br>Textus Receptus<br>schreiben: | |
| ℵ:<br>\|τοῦ<br>\|**dem** | „*zu* | |
| gn ma<br>θεοῦ\|<br>*Ein***setzer\|**<br>\|*Ab***setzer\|**<br>\|**Schau***end***en\|**<br>\|**Gott\|** | *ihm*<br>**wird**<br>*sich* | |
| [ℵ[1], A, B, R:<br>[τῶν<br>[**den** | **auch**<br>**in***folge* | |
| gn ma pl<br>ἀγγέλων<br>**Kündern**<br>[*Ver***kündern]**<br>**[Boten]**<br>**[Botschaftern]**<br>[*Be***auftragten]**<br>**[Auftrag***süberbring***ern]**<br>**[Weisung***süberbring***ern]**<br>**[Engeln]** | *von*<br>**ihm**<br>**der**<br>**Sohn**<br>**des**<br>**Menschen** | |
| τοῦ<br>**des** | **vorne**<br>*vor* | |
| gn ma]<br>θεοῦ]<br>*Ein***setzers]**<br>[*Ab***setzers]**<br>**[Schau***end***en]**<br>**[Gottes].** | **den**<br>**Engeln**<br>**des**<br>**GOTTES**<br>**bekennen.“** | Luk 12.9<br>Heb 1.4 |

ohne (...) a+pt lesbar

9.) 9.)

| | |
|---|---|
| ὁ | δὲ |
| Der | aber |
| pt a1 no ma pl md dp kt | prp ak |
| ἀρνησάμενός | |
| (*de facto*) i*ndividuel*l Leugnende | - |
| (*de facto*) sich Weigernde | *in Bezug auf* |
| (*de facto*) sich *Ver*weigernde | - |
| 1 p ak | ℵ, ℵ¹, B, R: prp gn |
| με | \|ἐν-ώπιον |
| mich | \|im-Auge |
| mich | |
| mi*r* | |
| | [A: prp gn] |
| τῶν\| | [ἔμ-προσ-θεν |
| der\| | [ein-zu *hin-ge*setzt |
| | [vorne *vor*] |
| | gn ma pl |
| τῶν] | ἀν-θρ-ώπων |
| den] | Hinauf-Gewandt-Eraugenden |
| | empor-ragend-Augenden |
| | Hinauf-Gedrehten |
| | Männer-Augen |
| | Antlitzen²-*der* Männer¹ |
| | Angesichtern²-*der* Männer¹ |
| | Menschen, |
| | Leuten |
| | ℵ: 3 p ft2 ps (dp) |
| \|ἀπ-αρνήσεται\| | |
| \|wird ab-geleugnet worden sein er\| | |
| \|wird verleugnet worden sein er\| | |
| \|wird verweigert worden sein er\| | |
| | [ℵ¹, A, B, R: 3 p ft ps (dp)] |
| [ἀπ-αρνηθήσεται] | |
| [wird ab-geleugnet werden er] | |
| [wird verleugnet werden er] | |
| [wird verweigert werden er] | |
| | prp gn |
| ἐν-ώπιον | |
| im-Auge | |
| | gn ma pl |
| τῶν | ἀγγέλων |
| der | Künder |
| | *Ver*künder |
| | Boten |
| | Botschafter |
| | *Be*auftragten |
| | Auftrag*süberbring*er |
| | Weisung*süberbring*er |
| | Engel |
| | gn ma |
| τοῦ | θεοῦ |
| des | *Ein*setzers |
| | *Ab*setzers |
| | Schau*end*en |
| | Gottes. |

[1]aL, Codex Alexandrinus schreibt:
„Aber der mich (*de facto*)[a] i*ndividuel*l vorne *vor* den Menschen Leugnende,
wird im Auge der Engel des Gottes verleugnet werden.“

[1]Aber
[1]der
[1]mich
[1](*de facto*)[a]
[1]i*ndividuel*l
[1]im
[1]Auge
[1]der
[1]Menschen
[1]Leugnende,
[1]wird
[1]im
[1]Auge
[1]der
[1]Engel
[1]des
[1]Gottes
[1]verleugnet
[1]worden
[1]sein.

[1]aL,
1. Korrektor Codex Sinaiticus,
Codex Vaticanus
und
Textus Receptus
schreiben:
„Aber
der
mich
(*de facto*)[a]
i*ndividuel*l
im
Auge
der
Menschen
Leugnende,
wird
im
Auge
der
Engel
des
Gottes
verleugnet
werden.“

Mat 10.33
Jud 4
Mar 8.38
Luk 9.26
2 Petr 2.1
1 Joh 2.22+23
Luk 12.8
2 Tim 2.12

| | | | |
|---|---|---|---|
| Schadenerklärung | | | |
| Lästerung | des | Geistes | |
| Verunglimpfung | der | Atmung | |
| Blasphemie | | | |
| 10.) | | | 10.) |
| | | | aj no ma |
| καὶ | | πᾶς | |
| Und | | all*jed*er, | |
| | | jeder | |
| | pna no ma | | 3 p ft |
| ὃς | | ἐρεῖ | |
| welcher | | {*Gedanken*} fließen *lass*en wird er | |
| | | reden wird er | |
| | | | ak ma |
| | | λόγον | |
| *ein* | | Wort | |
| *ein* | | Erwogenes | |
| *ein* | | Erwähltes | |
| *ein* | | Rechnung*slegen* | |
| *eine* | | Log*ik* | |
| | | | prp ak |
| | εἰς | | |
| | hinein in | | |
| | hin *Richtung auf* | | |
| | | | ak ma |
| τὸν | | υἱὸν | |
| den | | Sohn | |
| | | | gn ma |
| τοῦ | | ἀν-θρ-ώπου | |
| des | | Hinauf-Gewandt-Eraugenden | |
| | | empor-ragend-Augenden | |
| | | Hinauf-Gedrehten | |
| | | Mannes-Auges | |
| | | Antlitz[2]-*des* Mannes[1] | |
| | | Angesicht[2]-*des* Mannes[1] | |
| | | Menschen, | |
| | 3 p ft ps | | 3 p dt ma |
| ἀφ-εθήσεται | | αὐτῷ | |
| wird weg-gelassen werden es | | ihm. | |
| wird erlassen werden es | | | |
| wird vergeben werden es | | | |
| | dt ma | | |
| τῷ | | δὲ | |
| Dem | | aber | |
| | prp ak | | |
| εἰς | | τὸ | |
| hinein in | | den | |
| hin *Richtung auf* | | die | |
| | aj ak ne | | ak ne |
| ἅγιον | | πνεῦμα | |
| *zur* Führ*ung geeigne*te(n) | | Geist | |
| *zur* Führ*ung beauftrag*te(n) | | Atmung | |
| heilige(n) | | | |
| *zur* Verfüg*ung steh*ende(n) | | | |
| ✖: pt pr dt ma | | [A, B, R: pt a1 dt ma kt] | |
| \|βλασ-φημοῦντι\| | | [βλασ-φημήσαντι] | |
| \|*als* Schaden-Erklärenden\| | | [(*de facto*) *als* Schaden-Erklärenden] | |
| \|Lästernden\| | | [(*de facto*) Lästernden] | |
| \|*Ver*lästernden\| | | [(*de facto*) *Ver*lästernden] | |
| \|Verunglimpfenden\| | | [(*de facto*) Verunglimpfenden] | |
| \|blas-phemisch *Red*enden\| | | [(*de facto*) blas-phemisch *Red*enden] | |
| | | | 3 p ft ps |
| οὐκ | | ἀφ-εθήσεται | |
| nicht | | wird weg-gelassen werden es | |
| | | wird erlassen werden es. | |
| | | wird vergeben werden es | |

| | |
|---|---|
| Lästerung des Geistes | Mat 12.31+32<br>Mar 3.28-30 |
| Und | |
| all*jed*em, | |
| welcher | |
| *ein* | |
| Wort | |
| hin | |
| *Richtung* | Joh 7.12 |
| *auf* | |
| den | |
| Sohn | |
| des | |
| Menschen | |
| reden | |
| wird, | |
| ihm | |
| wird | |
| es | |
| erlassen | |
| werden. | |
| Dem | |
| aber | |
| [(*de facto*)[a]] | |
| hin | |
| *Richtung* | |
| *auf* | |
| den | |
| *zur* | |
| Führ*ung* | Heb 6.4-6<br>Heb 10.29 |
| *beauftrag*ten | |
| Geist | |
| Lästernden | Heb 10.26 |
| wird | |
| es | *Zeitdauer am längsten |
| nicht* | |
| erlassen | |
| werden. | |

| Betreffs | des | eigenen | Sprechens |
|---|---|---|---|

**11.)** **11.)**

| | |
|---|---|
| ὅτ-αν | δὲ |
| **Wann-gleichsam** | **aber** |
| **W**enn-*der* **Fall** *eintritt*, *daß* | |
| ℵ, B: 3 p pl pr kj | [A, R: 3 p pl pr kj] |
| \|εἰσ-φέρωσιν\| | [προσ-φέρωσιν] |
| \|**hinein-bringen** *soll*ten sie\| | [herzu-bringen *soll*ten sie] |
| \|hinein-tragen *soll*ten sie\| | [herzu-tragen *soll*ten sie] |
| 2 p pl ak | ℵ, D: prp ak |
| ὑμᾶς | \|εἰς\| |
| **euch** | \|hinein in\| |
| | \|$^{n}$in\| |
| [A, B, R: prp ak] | |
| [ἐπὶ] | τὰς |
| [auf *zu*] | **die** |
| ak fe pl | |
| συν-αγωγὰς | καὶ |
| **Zusammen-Führung***sort***e** | **und** |
| *Ver***sammlung***sort***e** | |
| **Syn-agogen** | |
| *prp ak* | |
| | τὰς |
| *auf zu* | **die** |
| ak fe pl | |
| ἀρχὰς | καὶ |
| **Anfang***seiend***en** | **und** |
| *Rang***anfang***smächt***e** | |
| **Fürstlichkeiten** | |
| *prp ak* | |
| | τὰς |
| *auf zu* | **die** |
| ak fe pl | pk+a1 kj |
| ἐξ-ουσίας | μὴ |
| *was* **aus**-*dem* **Sein** *ist Seiend***en** | **nich***t* |
| **aus** *dem Bereich-des* **Sein***s Seiend***en** | |
| **Autoritäten** | |
| **Vollmacht** *Habend***en,** | |
| **Erlaubnis** *Habend***en** | |
| ℵ, B, P 075: 2 p pl a1 kj kt | |
| \|μεριμνήσητε\| | |
| \|(*de facto*) *euch* **sorgen** *soll*(te)t ihr | ,\| |
| \|(*de facto*) **Anteil** *nehm***en** *soll*(te)t ihr\| | |
| [A, R: 2 p pl pr i!] | |
| [μεριμνᾶτε] | |
| [*euch* **sorgen sollt ihr** | !,] |
| [**Anteil** *nehm***en sollt ihr**] | |
| av | cj |
| πῶς | ἢ |
| **wie** | **oder** |
| *prp ak* | pn ak ne |
| | τί |
| *in Bezug auf* | **was** |
| | 2 p pl a1 kj md kt |
| ἀπο-λογήσησθε | |
| (*de facto*) **euch weg-worten** *könn***tet** / *soll***tet ihr** | |
| (*de facto*) **von-euch** *aus die* **Wort***e der Rechtfertigung gebrauch***en** *könn***tet** / *soll***tet ihr** | |
| (*de facto*) **euch verantworten** *könn***tet** / *soll***tet ihr** | |
| (*de facto*) **euch verteidigen** *könn***tet** / *soll***tet ihr** | |
| | pk ak ne |
| ἢ | τί |
| **oder** | **was** |
| | 2 p pl a2 kj kt |
| εἴπητε | |
| (*de facto*) **sagen** *könn***tet** / *soll***tet ihr,** | |

[1]aL, **Codex Alexandrinus** und **Textus Receptus** schreiben:
„**Wann gleichsam aber sie euch auf die Zusammenführung***sort***e** *zu*
**und** *auf* **die Fürstlichkeiten** *zu* **und** *auf* **die Vollmacht** *Habend***en** *zu herzu***bringen** *soll***ten,**
**sollt ihr** *euch* **nich***t* **sorgen,**“
[1]aL, **Codex Vaticanus** schreibt:
„**Wann gleichsam aber sie euch auf die Zusammenführung***sort***e** *zu*
**und** *auf* **die Fürstlichkeiten** *zu* **und** *auf* **die Vollmacht** *Habend***en** *zu herzu***bringen** *soll***ten,**
*soll*(te)t ihr *euch* (*de facto*)[a] **nich***t* **sorgen!,**“

| Betreffs | des | eigenen | Sprechens | |
|---|---|---|---|---|
| [1]Wann | | | | Mat 10.19+20 Mar 13.11 |
| [1]gleichsam | | | | |
| [1]aber | | | | |
| [1]sie | | | | |
| [1]euch | | | | |
| [1h]in | | | | |
| [1]die | | | | |
| [1]Zusammenführung*sort***e** | | | | |
| [1]und | | | | |
| [1]*auf* | | | | |
| [1]die | | | | |
| [1]Fürstlichkeiten | | | | |
| [1]*zu* | | | | |
| [1]und | | | | |
| [1]*auf* | | | | |
| [1]die | | | | |
| [1]Vollmacht | | | | |
| [1]*Habend***en** | | | | |
| [1]*zu* | | | | |
| [1]hineinbringen | | | | |
| [1]*soll***ten,** | | | | |
| [1]*soll*(te)t | | | | |
| [1]ihr | | | | |
| [1]*euch* | | | | |
| [1](*de facto*)[a] | | | | |
| [1]nich*t* | | | | |
| [1]sorgen, | | | | Jer 1.7 |
| wie | | | | |
| oder | | | | |
| *in* | | | | |
| *Bezug* | | | | |
| *auf* | | | | |
| was | | | | |
| ihr | | | | |
| (*de facto*)[a] | | | | |
| von | | | | |
| euch | | | | |
| *aus* | | | | |
| *die* | | | | |
| Wort*e* | | | | Luk 21.14 |
| *der* | | | | |
| *Rechtfertigung* | | | | |
| *gebrauch***en** | | | | |
| *könn***tet** | | | | |
| oder | | | | |
| was | | | | |
| ihr | | | | |
| (*de facto*)[a] | | | | |
| sagen | | | | 2 Mos 4.12+15 Luk 21.15 |
| *könn***tet,** | | | | |

ohne (...) a+pt lesbar

12.) 12.)

| | | |
|---|---|---|
| τὸ | | γὰρ |
| der | | denn |
| die | | |
| | aj no ne | no ne |
| ἅγιον | | πνεῦμα |
| *zur* **Führ***ung geeigne***te** | | **Geist** |
| *zur* **Führ***ung beauftrag***te** | | **Atmung** |
| **heilige** | | |
| *zur* **Verfüg***ung steh***ende** | | |
| | ℵ, B, R: 3 p ft | [A: 3 p a1 kj kt] |
| \|διδάξει\| | | [διδάξῃ] |
| \|**lehren wird er / sie**\| | | [(*de facto*) **lehren** *würde* **er / sie**] |
| \|**belehren wird er / sie**\| | | [(*de facto*) **belehren** *würde* **er / sie**] |
| | 2 p pl dt | prp dt |
| ὑμῖν | | ἐν |
| **euch** | | **in** |
| | 3 p dt fe | dt fe |
| αὐτῇ | τῇ | ὥρᾳ |
| **ihr** | **dem** | **Zeitabschnitt** |
| **selben** | **der** | **Jahreszeit** |
| | **der** | **Stunde** |
| *prp ak* | pn ak ne pl | |
| | ἃ | |
| *hinein in* | **welche** | *Dinge* |
| [h]*in Richtung auf* | | |
| [h]*für* | | |
| | 3 p pr ips | if a2 kt |
| | δεῖ | εἰπεῖν |
| *irgend* | **Bind***ung besteht* **es** | (*de facto*) *zu* **sagen.** |
| [ir]*etwas* | *ver***bind***lich bedeutet* **es** | |
| | *stattfinden* **muß es** | |

[1]aL, **Codex Alexandrinus** schreibt:
„**denn der** *zur* **Führ***ung beauftrag***te Geist** *würde* **euch** (*de facto*)[a] **in derselben Stunde lehren,**“

[1]**denn**
[1]**der**
[1]*zur*
[1]**Führ***ung*
[1]*beauftrag***te**
[1]**Geist**
[1]**wird**
[1]**euch**
[1]**in**
[1]**derselben**
[1]**Stunde** — Joh 14.26, Joh 15.26, 1 Kor 2.13
[1]**lehren,**
[h]*für*
**welche**
*Dinge*
(*de facto*)[a]
[ir]*etwas*
*zu*
**sagen** — Luk 21.15
**Bind***ung*
*besteh***t.**

| | | |
|---|---|---|
| | | mehr Haben *Woll*en |
| Warnung | *in* Bezug *auf* | Habgier |
| | | Übervorteilung |

13.) 13.)

| | | |
|---|---|---|
| 3 p a2 ig | | pn no ma |
| εἶπεν | δέ | τις |
| (*Jetzt*) sagte er | aber | irgend |
| | | jemand |
| κ, B, P 075: prp gn | | gn ma |
| ἐκ | τοῦ | ὄχλου |
| aus | der | Belästigenden |
| | | Menge |
| | | *Volks*menge |
| A, R = 2 | A, R = 3 | A, R = 4 |
| | 3 p dt ma | |
| | αὐτῷ | |
| *zu* | ihm | *:* |
| | A, R = 1 | |
| | *vo* | vo ma |
| | | διδάσ-καλε |
| *Du*, | | ruf*haben*der[2]-Geber[1] |
| | | verhüll*tmach*ender[2]-Geber[1] |
| | | idealer[2]-Geber[1] |
| | | vortrefflicher[2]-Geber[1] |
| | | Lehrer, |
| | 2 p a1 i! ig | |
| | εἰπὲ | τῷ |
| | (*jetzt*) sage du | dem, |
| | | dem |
| | dt ma | 1 p gn |
| | ἀ-δελφῷ | μου |
| | *der des* gleichen-Mutterschoßes *ist*, | meiner*seits* |
| | Bruder, | meinem, |
| | | if a1 md kt |
| | | μερίσασθαι |
| | *daß* | (*de facto*) i*ndividuel*l *zu* teilen |
| | prp gn | 1 p gn |
| | μετ’ | ἐμοῦ |
| | mit | meiner |
| | | m*ir* |
| | prp ak | |
| | | τὴν |
| | *hinein in* | die |
| | [h]*für* | das |
| | | das |
| | | das |
| | | das |
| | | das |
| | | das |
| | | das |
| | | ak fe |
| | | κλη-ρο-νομίαν |
| | | *aufgrund von* Denken[3]-*bestimmt*e-fließen*de*[2]-*Be*ruf*ung*[1] |
| | | *in* bestimmter[2] *Form gemäß-dem Ab*gebrochene[1] |
| | | bestimmungsge*mäß*e[2]-Los*teil*[1] |
| | | *aufgrund von* Bestimmung[2]-*zugeordneten* Los*teil*[1] |
| | | gesetz*mäß*ige[2]-Los*teil*[1] |
| | | *aufgund von* Gesetz[2]-*zugeordnete* Los*teil*[1] |
| | | *aufgund von* Bestimmung[2]-Erb*teil*[1] |
| | | *aufgund von* Gesetz[2]-Erb*teil*[1] |
| | | |
| | | |
| | *bestimmt ist es* | ! |

[1]aL, **Codex Alexandrinus** und **Textus Receptus** schreiben:
„*Es* sagte aber jemand (*jetzt*)[a] *zu* ihm aus der *Volks*menge:“

Warnung
*in*
Bezug
*auf*
Habgier

[1]*Es*
[1]sagte
[1]aber
[1]jemand
[1](*jetzt*)[a]
[1]aus
[1]der
[1]*Volks*menge
[1]*zu*
[1]ihm*:*
*Du*,
Lehrer,
sage
meinem [d] Bruder
(*jetzt*)[a],
*daß*
*es*
[h]*für*
*ihn*
*bestimmt*
*ist*,
(*de facto*)[a]
i*ndividuel*l
das
gesetz*mäß*ige
Los*teil*
mit
m*ir*
*zu*
teilen!

| 14.) | | 14.) |
|---|---|---|
| | no ma | |
| ὁ | | |
| **Der** | *Angesprochene* | |
| | | |
| | | 3 p a2 ig |
| δὲ | εἶπεν | |
| **aber** | (*jetzt*) **sagte** er | |
| | | |
| | | 3 p dt ma |
| | αὐτῷ | |
| *zu* | **ihm** | |
| | | |
| | | |
| | : | |
| | | |
| vo | | vo ma |
| | ἄν-θρ-ωπε | |
| *Du* | **Hinauf-Gewandt-Eraugender**<br>**empor-ragend-Augender**<br>**Hinauf-Gedrehter**<br>**Mannes-Auge**<br>**Antlitz**[2]*-des* **Mannes**[1]<br>**Angesicht**[2]*-des* **Mannes**[1]<br>**Mensch,** | |
| | | |
| pn no ma | | 1 p ak |
| τίς | με | |
| **wer** | **mich** | |
| | | |
| | | 3 p a1 kt |
| | κατ-έστησεν | |
| | (*de facto*) **herab-*be*ständigte** er | |
| | (*de facto*) *all*bezüglich-*in den* **Stand** *einsetz*te er | |
| | | |
| | | |
| *als* | *einen* | |
| | | |
| ℵ, B, P 075:ak ma | | [A, R: ak fe] |
| \|κριτὴν\| | [δι-καστὴν] | |
| \|*Be*urteiler\| | [*als* **durch***weg*-Gebrannten] | |
| \|Richter\| | [*Auf*zeiger] | |
| | [Recht*sprech*enden] | |
| | [Recht*sprech*er] | |
| | [Recht*ausübend*en] | |
| | | |
| | | |
| ἢ | | |
| **oder** | *als* | |
| | | |
| | | ak ma |
| | μεριστὴν | |
| *einen* | **Teiler** | |
| | *Auf*teiler | |
| | | |
| ℵ: prp gn | | 2 p pl gn |
| \|ἐφ’ | ὑμῶν\| | |
| \|gebiets | euer\| | |
| | \|eu*ch*\| | |
| | | |
| [ℵ², A, B, R: prp ak | | 2 p pl ak] |
| [ἐφ’ | ὑμᾶς] | |
| [auf *zu* | euch] | |
| | | |
| | | |
| | ? | |

[1]aL, Codex Alexandrinus und Textus Receptus schreiben:
„**wer** *setzte* **mich** (*de facto*)[a] *all*bezüglich *in den* **Stand** *als einen* Recht*sprech*er
**oder** *als einen* **Aufteiler** auf euch *zu ein*?“

**Der**
*Angesprochene*
**aber**
**sagte**
(*jetzt*)[a]
*zu*
**ihm**:
*Du*
**Mensch,**
[1]**wer**
[1]*setzte*
[1]**mich**
[1](*de facto*)[a]
[1]*all*bezüglich
[1]*in*
[1]*den*
[1]**Stand**
[1]*als*
[1]*einen*
[1]**Richter**
[1]**oder**
[1]*als*
[1]*einen*
[1]*Auf*teiler
[1]**eu***ch*
[1]**gebiets**
[1]*ein*?

[1]aL,
2. Korrektor Codex Sinaiticus
und
Codex Vaticanus
schreiben:
„**wer**
*setzte*
**mich**
(*de facto*)[a]
*all*bezüglich
*in*
*den*
**Stand**
*als*
*einen*
[1]**Richter**
**oder**
*als*
*einen*
**Aufteiler**
**auf**
**euch**
*zu*
*ein*?“

2 Mos 2.14
Joh 18.36
Apg 7.27+35

ohne (...) a+pt lesbar

| 15.) | | 15.) |
|---|---|---|
| | 3 p a2 ig | |
| εἶπεν | δὲ | |
| (*Jetzt*) **sagte** er | aber | |
| | prp ak / 3 p pl ak ma | |
| πρὸς | αὐτούς | |
| zu | sie | |
| | *ihnen* | |
| | | |
| | | |
| | : | |
| | 2 p pl pr i! | |
| ὁρᾶτε | καὶ | |
| **Sehet** ihr | und | |
| *Zu*sehet ihr | | |
| | 2 p pr i! md/ps / 2 p pr i! md/ps (Zustand) | |
| φυλάσσεσθε | | |
| euch **bewahret** *laß*t ihr | *zum euch* Bewahren *veranlaß*t seid ihr | |
| | 2 p pr i! md/ps (Vorgang) / prp gn | |
| | ἀπὸ | |
| *zum euch* Bewahren *veranlaß*t werdet ihr | von | |
| | aj gn fe / gn fe | |
| πάσης | πλεον-εξίας | |
| allem | mehr-Haben *Woll*en | |
| aller | **Habgier** | |
| aller | Übervorteilung | |
| | | |
| | | |
| | !, | |
| | | |
| ὅτι | οὐκ | |
| da | nicht | |
| | prp dt | |
| ἐν | τῷ | |
| in | dem | |
| in*folge von* | dem, | |
| | if pr / pn dt ma | |
| περισσεύειν | τινὶ | |
| **um** *und* **um** *zu hab*en | irgend | |
| über *das* Maß *hinaus zu hab*en | jemandem | |
| Überfluß *zu hab*en, | | |
| Überströmendes *zu hab*en | | |
| | no fe | |
| ἡ | ζωὴ | |
| das | **Leben,** | |
| | 3 p gn ma / 3 p pr | |
| αὐτοῦ | ἐστιν | |
| seiner*seits* | ist es | |
| sein, | | |
| | prp gn | |
| ἐκ | τῶν | |
| aus | den | |
| | pt pr gn ne pl | |
| ὑπ-αρχόντων | | |
| *im* unt*er*en-Anfang *als Ausgangspunkt der Daseinsgrundlage Sei*enden | | |
| *im* unt*er*en-Beginn *als Ausgangspunkt der Daseinsgrundlage Sei*enden | | |
| *gehör*enden **Besitztümern,** | | |
| א, A, R: 3 p gn ma | [א², B: 3 p dt ma] | |
| \|αὐτοῦ\| | [αὐτῷ] | |
| \|seiner*seits*\| | [ihm]. | |
| \|seinen\| | | |

Er
aber
sagte
(*jetzt*)[a]
zu
i*hnen:*
Sehet
zu
und
*laß*t*
euch*
bewahren*
von
aller
Habgier!,
da
nicht
in*folge*
*von*
dem,
Überfluß
*zu*
*hab*en,
[1]jemandem
[1]sein [d] Leben
[1]aus
[1]den
[1]seinen
[1]*gehör*enden
[1]Besitztümern
[1]ist.

[1]aL,
2. Korrektor Codex Sinaiticus
und
Codex Vaticanus
schreiben:
„jemandem
sein [d] Leben
aus
den
ihm
*gehör*enden
Besitztümern
ist.“

Mat 13.22
Mar 4.19
Luk 8.14
Eph 5.3
1 Tim 6.10

*e ohne den Sohn Gottes unmöglich

Mat 7.14

Mat 19.21
Mar 10.21
Luk 18.22

**Danebenwurf**
**Unmittelbarer** *Ent***wurf** *anhand eines grundlegenden lehrhaften Beispiels*
*Darstellung* **neben** *einer verhüllten Gegebenheit an einem indirekt veranschaulichten Ent***wurf**
**Parabel**
**Vergleich**

**von**

**dem**

**unbesonnenen**
*nicht* **ziel***gerichtet* **denkenden**
**unklugen**

**Viel***hab***enden**
**Fülle***hab***enden**
**Reichen**

16.) 16.)

3 p a2 ig

| | |
|---|---|
| εἶπεν | δὲ |
| (*Jetzt*) **sagte er** | **aber** |
| καὶ | |
| **auch** | *einen* |
| | *einen* |
| | *eine* |
| | *eine* |
| | *einen* |

ak fe

παρα-βολὴν
**Daneben-Wurf**
**unmittelbaren-***Ent***wurf** *anhand eines grundlegenden lehrhaften Beispiels*
*Darstellung* **neben** *einer verhüllten Gegebenheit-an einem indirekt veranschaulichten Ent***wurf**
**Para-bel**
**Vergleich**

prp ak — 3 p pl ak ma

| | |
|---|---|
| πρὸς | αὐτοὺς |
| **zu** | **sie** |
| | **i***hn***en** |

pt pr no ma

| | |
|---|---|
| | λέγων |
| *als* | **Wortender** |
| | *die* **Wort***e Gebrauch***ender** |
| | **Sagender** |

:

gn ma — pna gn ma

| | |
|---|---|
| ἀν-θρ-ώπου | τινὸς |
| **Hinauf-Gewandt-Eraugenden** | **irgend** |
| **Empor-Ragend-Augenden** | **ᵢᵣeines** |
| **Hinauf-Gedrehten** | |
| **Mannes-Auges** | |
| **Antlitz²-***des* **Mannes¹** | |
| **Angesicht²-***des* **Mannes¹** | |
| **Menschen** | |

aj gn ma

| | |
|---|---|
| πλουσίου | |
| **Viel***hab***enden** | *irgend* |
| **Fülle***hab***enden** | *ᵢᵣeines*, |
| **Reichen** | |

κ, B, R: 3 p a1 kt — [A: aS]

| | |
|---|---|
| \|εὐ-φόρησεν\| | [ηὐ-φόρησεν] |
| (*de facto*) **Wohl-***Er***trag** *hat***te er / sie / es** | |
| (*de facto*) **Eu-phorisches** *hat***te er / sie / es** | |

no fe

| | |
|---|---|
| ἡ | χώρα |
| **der** | **Raum** |
| **das** | **geräumige** *Gebiet***.** |
| **die** | **Gegend** |

**Parabel**
**von**
**dem**
*nicht*
**ziel***gerichtet*
**denkenden**
**Reichen**

**Er**
**sagte**
**aber**
(*jetzt*)[a]
*eine*
**Parabel**
**zu**
**i***hn***en,**
*indem*
*er*
(*wie folgt*)[pt]
*die*
**Wort***e*
*gebrauch***te***:*
**Das**
ᵢᵣeines
**reichen**
**Menschen**
**geräumige**
*Gebiet*
*hat***te**
(*de facto*)[a]
**Wohl***er***trag.**

ohne (...) a+pt lesbar

| 17.) | | 17.) |
|---|---|---|
| καὶ | | |
| Und | | |
| | | 3 p ipe md/ps dp |
| δι-ελογίζετο | | |
| individuell durchgehend-wortfolgerte er | | |
| individuell durch-rechnete er | | |
| individuell durchgehend über das Normale hinaus-erwog er | | |
| individuell überlegte er | | |
| individuell sich durch-Logik leiten ließ er | | |
| | | 3 p ipe md/ps dp (Vorgang) |
| zum durchgehend-Wortfolgern veranlaßt wurde er | | |
| zum durch-Rechnen veranlaßt wurde er | | |
| zum durchgehend über das Normale hinaus-Erwägen veranlaßt wurde er | | |
| zum Überlegen veranlaßt wurde er | | |
| zum sich durch-Logik leiten lassen veranlaßt wurde er | | |
| | | prp dt |
| | ἐν | |
| als | in | |
| א, A, R: 3 p dt ma | | [B, L: 3 p dt ma] |
| \|ἑ-αυτῷ\| | [αὐτῷ] | |
| \|sich-selbst\| | [ihm] | |
| | [sich] | |
| | | pt pr no ma |
| λέγων | | |
| Wortender | : | |
| als Worte Gebrauchender | | |
| Sagender | | |
| | | pna ak ne |
| τί | ποιήσω | |
| Was | tun werde ich, | |
| | machen werde ich | |
| ὅτι | οὐκ | |
| da | nichts | |
| | | 1 p pr |
| ἔχω | ποῦ | |
| habe ich, | wo | |
| | wohin | |
| | | 1 p ft |
| συν-άξω | τοὺς | |
| zusammen-führen lassen werde ich | die | |
| {ein}sammeln lassen werde ich | | |
| syn-agogen lassen werde ich | | |
| | | ak ma pl |
| καρπούς | μου | |
| Früchte, | meinerseits | |
| | meine | |
| ? | | |

[1]aL, **Codex Vaticanus** und **Codex Regius** schreiben:
„*indem er* **in** *sich* (*wie folgt*)[pt] **sagte**:“

Und
er
erwog
individuell
durchgehend
über
das
Normale
hinaus,
[1]indem
[1]er
[1]in
[1]sich
[1]selbst
[1](wie folgt)[pt]
[1]sagte:
Was
werde
ich
tun,
da
ich
nichts
habe,
wohin
ich
meine [d] Früchte
zusammenführen
lassen
werde?

18.) 18.)

3 p a2 ig
καὶ εἶπεν
Und (*jetzt*) sagte er :

pna ak ne 1 p ft
τοῦτο ποιήσω
Dies tun werde ich :
machen werde ich

1 p ft2
καθ-ελῶ
*Von oben* **herab-entheben** *lassen* **haben werde ich**
*All*bezüglich-entheben *lassen* haben werde ich
*Von oben* herab-*be*seitigen *lassen* haben werde ich
*Von oben* **herab***nehmend-be***seitigen** *lassen* **haben werde ich**
*All***bezüglich-***be***seitigen** *lassen* **haben werde ich**
**Jeweils-***be***seitigen** *lassen* **haben werde ich**
**Entsprechend-***be***seitigen** *lassen* **haben werde ich**

1 p gn
μου τὰς
meiner*seits* die

ak fe pl aj ak fe pl kp
ἀπο-θήκας καὶ μείζονας
Weg-Setzungen und größere
Scheunen,
Apo-Theken

κ, κ1: 1 p ft
|ἀν-οικο-δομήσω|
|hinauf-wohn-bauen *lassen* werde ich|
|oben-wohn-bauen *lassen* werde ich|
|oben-*zum* **Woh***nen-er***bauen** *lassen* werde ich|
|wieder-wohn-bauen *lassen* werde ich|
|wieder-*zum* **Woh***nen-er***bauen** *lassen* werde ich|
|wieder-*als* **Behaus***ung-auf***bauen** *lassen* werde ich|

[κ2, A, B, R: 1 p ft]
[οἰκο-δομήσω]
[wohn-bauen *lassen* werde ich]
[*zum* **Woh***nen-er***bauen** *lassen* werde ich]
[*als* **Behaus***ung-auf***bauen** *lassen* werde ich],

1 p ft
καὶ συν-άξω
und zusammen-führen *lassen* werde ich
{*ein*}sammeln *lassen* werde ich
syn-agogen *lassen* werde ich

κ, κ2, A, B, R: aj ak ma
ἐκεῖ πάντα
dort all

κ, κ2, A, R: ak ne pl 1 p gn
|τὰ γενήματά μου|
|die Gewordenen meiner*seits*|
Werde*erträge* meine,|
|Werde*erträge der Frucht*e|
|erzeugten *Gewächs*e|

[κ1, B: ak ma] [κ1: 1 p gn]
[τὸν σῖτον] [μου]
[das Getreide,] [meiner*seits*]
[mein,]

[κ1, A, B, R:
[καὶ τὰ
[und die

ak ne pl 1 p gn]
ἀγαθά μου]
*zur* **Führ***ung* **befähig***ten Ländereien* meiner*seits*]
[Güter, meine,]

[1]aL, **1. Korrektor Codex Sinaiticus** schreibt:
„**und ich werde größere wieder** *als* **Behaus***ung auf***bauen** *lassen*,
**und ich werde dort mein** [d] **Getreide und meine** [d] **Güter zusammenführen** *lassen*,“
[1]aL, **2. Korrektor Codex Sinaiticus** schreibt:
„**und ich werde größere** *als* **Behaus***ung auf***bauen** *lassen*,
**und ich werde dort all meine** [d] **erzeugten** *Gewächs***e zusammenführen** *lassen*,“
[1]aL, **Codex Alexandrinus** und **Textus Receptus** schreiben:
„**und ich werde größere** *als* **Behaus***ung auf***bauen** *lassen*,
**und ich werde dort all meine** [d] **erzeugten** *Gewächs***e und meine** [d] **Güter zusammenführen** *lassen*,“
[1]aL, **Codex Vaticanus** schreibt:
„**und ich werde größere** *als* **Behaus***ung auf***bauen** *lassen*,
**und ich werde dort all das Getreide und meine** [d] **Güter zusammenführen** *lassen*,“

Und
er
sagte
(*jetzt*)[a]:
Dies
werde
ich
tun: Jak 4.13-15
Ich
werde
meiner*seits*
die
Scheunen
jeweils
*be*seitigen
*lass*en
haben,
[1]und
[1]ich
[1]werde
[1]größere
[1]wieder
[1]*als*
[1]*Be*haus*ung*
[1]*auf*bauen
[1]*lass*en,
[1]und
[1]ich
[1]werde
[1]dort
[1]all
[1]die
[1]erzeugten
[1]*Gewächs*e
[1]meiner*seits*
[1]zusammenführen
[1]*lass*en,

ohne (...) a+pt lesbar

| 19.) | | 19.) | |
|---|---|---|---|
| | | 1 p ft | |
| καὶ | | ἐρῶ | und |
| und | | {*Gedanken*} fließen *lass*en werde ich | |
| | | reden werde ich | ich |
| | | | |
| | | τῇ | werde |
| *zu* | | der | |
| dt fe | | 1 p gn | *zu* |
| ψυχῇ | | μου | |
| Erkaltenden | | meiner | meiner d Seele |
| *zu* Kühlenden | | | |
| Behauchten | | | |
| Beatmeten | | | reden: |
| Seele, | | | |
| Psyche | | | *Du*, |
| | | | |
| | | | Seele, |
| : | | | |
| | | vo fe | du |
| | | ψυχή | |
| *Du*, | | Erkaltenden | hast |
| | | *zu* Kühlenden | |
| | | Behauchten | |
| | | Beatmeten | viele |
| | | Seele, | |
| | | Psyche | Güter, |
| 2 p pr | | aj ak ne pl | |
| ἔχεις | | πολλὰ | |
| hast du | | viele | *die* |
| aj ak ne pl | | | |
| ἀγαθὰ | | | (*im Verlauf dieses Zeitlaufs*)pt |
| *zur* Führ*ung* be*fähig*te *Ländereien* | | *als* | |
| Güter, | | | hfür |
| pt pr ak ne pl md/ps dp | | pt pr ak ne pl md/ps dp (Zustand) | |
| κείμενα | | | viele |
| *individuel*l *Da*liegende | | *zum Da*liegen *Veranlaß*tseiende | |
| pt pr ak ne pl md/ps dp (Vorgang) | | prp ak | Jahre |
| | | εἰς | |
| *zum Da*liegen *Veranlaß*twerdende | | hinein in | *individuel*l |
| | | hfür | |
| aj ak ne pl | | aj ak ne pl | *da*liegen. |
| ἔτη | | πολλά | |
| Jahre, | | viele. | Ruhe |
| 2 p pr i! md/ps | | 2 p pr i! md/ps (Zustand) | |
| ἀνα-παύου | | | *individuel*l |
| *Individuel*l hinauf-ruhe du | | *zum* Hinauf-ruhen *veranlaß*t sei du | |
| *Individuel*l wieder-ruhe du | | *zum* wieder-Ruhen *veranlaß*t sei du | wieder, |
| 2 p pr i! md/ps (Vorgang) | | 2 p a2 i! ig | |
| | | φάγε | iß |
| *zum* Hinauf-ruhen *veranlaß*t werde du | | (*jetzt*) iß du, | |
| *zum* wieder-Ruhen *veranlaß*t werde du, | | | (*jetzt*)a, |
| 2 p a2 i! ig | | 2 p pr i! md/ps | |
| πίε | | εὐ-φραίνου | |
| (*jetzt*) trinke du, | | dich wohl-gesinnt *verhalt*e du | trinke |
| | | dich fröhlich *verhalt*e du | |
| 2 p pr i! md/ps (Zustand) | | 2 p pr i! md/ps (Vorgang) | (*jetzt*)a, |
| | | | |
| wohl-gesinnt sei du | | wohl-gesinnt werde du | sei |
| fröhlich sei du | | fröhlich werde du | |
| | | | fröhlich! |
| | | | |
| ! | | | |

Spr 18.11
Spr 27.1

Prd 8.15
1 Kor 15.32

**20.)** **20.)**

3 p a2 kt — 3 p dt ma

| | | | |
|---|---|---|---|
| εἶπεν | δὲ | αὐτῷ | |
| (*De facto*) sagte er | aber | *zu* | ihm |

ℵ, B, R, P 075: no ma

| | |
|---|---|
| ὁ | \|θεός\| |
| der | \|*Ein*setzer\| |
| | \|*Ab*setzer\| |
| | \|Schau*end*e\| |
| | \|Gott\| |

[A: no ma]

| | |
|---|---|
| [κύριος] | |
| [Geltende] | : |
| [Herr] | |

vo — aj vo ma

| | | |
|---|---|---|
| | ἄ-φρων | |
| *Du* | Un-Besonnener | ! |
| | *nicht*-ziel*gerichtet* Denkender | |
| | Un-Kluger | |

prp dt — pna dt fe — dt fe

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ταύτῃ | τῇ | νυκτὶ |
| *In* | dieser | der | Nacht |

ak fe — 2 p gn

| | | |
|---|---|---|
| τὴν | ψυχήν | σου |
| die | Erkaltende | deiner*seits* |
| | *zu* Kühlende | deine, |
| | Behauchte | |
| | Beatmete | |
| | Seele, | |
| | Psyche | |

ℵ, A, R: 3 p pl pr — [B, P 075: 3 p pl pr]

| | |
|---|---|
| \|ἀπ-αιτοῦσιν\| | [αἰτοῦσιν] |
| \|*da*von-ursäch*lich ersuch*en sie\| | [ursäch*lich ersuch*en sie] |
| \|*da*von-erbitten sie\| | [erbitten sie] |
| \|ab-fordern sie\| | [fordern sie]. |

pna ak ne pl

| | | | |
|---|---|---|---|
| ἃ | | δὲ | |
| Welche | *Dinge* | aber | *auch* |

2 p a1 ig — pn dt ma

| | |
|---|---|
| ἡτοίμασας | τίνι |
| (*jetzt*) bereitet *hast* du | wem |

3 p ft md (dp)

| | |
|---|---|
| ἔσται | |
| i*ndividuell zu eigen* sein wird es | ? |
| i*ndividuell* gehören wird es | |

[1]aL, Codex Alexandrinus schreibt:
„*Es* sagte (*de facto*)[a] aber der Herr *zu* ihm*:*
*Du nicht* ziel*gerichtet* Denkender! *In* der dieser Nacht fordern sie deine [d] Seele ab.“
[1]aL, Codex Vaticanus und Papyrus 075 schreiben („ab“ `fehlt`):
„*Es* sagte (*de facto*)[a] aber der Gott *zu* ihm*:*
*Du nicht* ziel*gerichtet* Denkender! *In* der dieser Nacht fordern sie deine [d] Seele.“

**21.)** **21.)**

av

| | | |
|---|---|---|
| οὕτως | | ὁ |
| *Auf* diese *Weise* | *ist er* | der |
| Also | | |
| So | | |

pt pr no ma — ℵ, B: 3 p dt ma

| | |
|---|---|
| θησ-αυρίζων | \|αὐτῷ\| |
| *für* anderntags-Setzende | \|ihm\| |
| Speichernde | \|sich\| |

[ℵ², A, R, P 075: 3 p dt ma]

| | |
|---|---|
| [ἑ-αυτῷ] | καὶ |
| [sich-selber], | und |

prp ak

| | | |
|---|---|---|
| | μὴ | εἰς |
| *ist er* | nicht | hinein in |
| | | [h]in *Richtung auf* |

ak ma — pt pr no ma

| | | |
|---|---|---|
| | θεὸν | πλουτῶν |
| *den* | *Ein*setzer | viel *Besitz*ender |
| | *Ab*setzer | Fülle *Besitz*ender |
| | Schau*end*en | Reich*tum Besitz*ender. |
| | Gott | |

[1]aL, 2. Korrektor Codex Sinaiticus, Codex Alexandrinus, Textus Receptus und Papyrus 075 schreiben:
„*Auf* diese *Weise ist* der sich selber Speichernde
und nicht *ist er* [h]in *Richtung auf* Gott Reich*tum Besitz*ender.“

| | |
|---|---|
| [1]*Es* | |
| [1]sagte | *Sohn Gottes spricht von sich in der 3. Person |
| [1]aber | |
| [1](*de facto*)[a] | |
| [1]der | |
| [1]Gott* | |
| [1]*zu* | |
| [1]ihm*:* | |
| *Du* | |
| *nicht* | |
| ziel*gerichtet* | |
| Denkender! | |
| *In* | |
| der | |
| dieser | |
| Nacht | Ps 52.7 Apg 12.23 Jak 4.14 |
| fordern | |
| sie | |
| deine [d] Seele | |
| [1]ab. | |
| Welche | |
| *Dinge* | |
| du | |
| auch | |
| (*jetzt*)[a] | |
| bereitet | Ps 62.11 |
| *hast*, | |
| wem | |
| wird | |
| es | |
| i*ndividuell* | |
| *zu* | |
| *eigen* | |
| sein? | Ps 49.17+18 |
| [1]*Auf* | |
| [1]diese | |
| [1]*Weise* | |
| [1]*ist* | |
| [1]der | |
| [1]sich | Ps 39.7 Mat 6.19-21 1 Tim 6.17-19 |
| [1]Speichernde, | |
| [1]und | |
| [1]nicht | |
| [1]*ist* | |
| [1]*er* | |
| [1][h]in | |
| [1]*Richtung* | |
| [1]*auf* | |
| [1]Gott | |
| [1]Reich*tum* | Jak 5.1-6 |
| [1]*Besitz*ender. | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | | das | *eigene* | *An*teil*nehm*en |
| Lehre | *in* Bezug *auf* | die | *irdischen* | Sorgen |

22.) 22.)

| | | |
|---|---|---|
| | 3 p a2 ig | prp ak |
| εἶπεν | δὲ | πρὸς |
| (*Jetzt*) sagte er | aber | zu |
| | ak ma pl | ϰ, A, R: 3 p gn ma |
| τοὺς | μαθητὰς | αὐτοῦ |
| den | Lernenden, | seiner*seits* |
| | Jüngern | seinen, |
| | : | |
| | prp ak | pna ak ne |
| διὰ | τοῦτο | |
| Wegen | dieses | |
| | halb Des | |
| [A, R: | 2 p pl dt] | 1 p pr |
| | [ὑμῖν] | λέγω |
| [*zu* | euch] | worte ich |
| | | *die* Wort*e gebrauch*e ich |
| | | sage ich |
| | ϰ, B, P 075: | 2 p pl dt |
| | | \|ὑμῖν\| |
| | \|*zu* | euch\| |
| | : | |
| | 2 p pl pr i! | *prp dt* |
| μὴ | μεριμνᾶτε | |
| Nich*t* | *An*teil *nehm*et ihr | *aufgrund von* |
| | *euch* sorget ihr | *infolge von* |
| | dt fe | [R: 2 p pl gn] pn ak ne |
| τῇ | ψυχῇ | [ὑμῶν] τί |
| der | Erkaltenden | [eurer*seits*] was |
| | *zu* Kühlenden | [eurer,] |
| | Behauchten | |
| | Beatmeten | |
| | Seele | |
| | Psyche | |
| | | 2 p pl a2 kj kt |
| | φάγητε | |
| | (*de facto*) essen *könn*tet / *soll*tet / *würd*et ihr, | |
| | | *prp dt* |
| μη-δὲ | | τῷ |
| nich*t*-aber *auch* | *aufgrund von* | dem |
| | *infolge von* | |
| | dt ne | [B: 2 p pl gn] pn ak ne |
| σώματι | [ὑμῶν] | τί |
| Leib | [eurer*seits*] | was |
| Körper | [eurem,] | |
| | | 2 p pl a1 kj md kt |
| | ἐν-δύσησθε | |
| | (*de facto*) i*ndivudue*ll in-schlüpfen *könn*tet / *soll*tet / *würd*et ihr | |
| | (*de facto*) i*ndivudue*ll anziehen *könn*tet / *soll*tet / *würd*et ihr, | |
| | ! | |

[1]aL, **Codex Alexandrinus** schreibt (`Wortreihenfolge`):
„**Er aber sagte (*jetzt*)[a] zu seinen [d] Lernenden*:***
**Deshalb *gebrauch*e ich *zu* euch *die* Wort*e:***
**Sorget *euch* nicht *aufgrund von* der Seele Seele, was ihr (*de facto*)[a] essen *könn*tet,**
**aber *auch* nich*t aufgrund von* dem Leib, was ihr (*de facto*)[a] i*ndividue*ll anziehen *könn*tet!“**
[1]aL, **Codex Vaticanus** schreibt:
„**Er aber sagte (*jetzt*)[a] zu den Lernenden*:***
**Deshalb *gebrauch*e ich *die* Wort*e zu* euch*:***
**Sorget *euch* nicht *aufgrund von* der Seele, was ihr (*de facto*)[a] essen *könn*tet,**
**aber *auch* nich*t aufgrund von* eurem [d] Leib, was ihr (*de facto*)[a] i*ndividue*ll anziehen *könn*tet!“**
[1]aL, **Textus Receptus** schreibt (`auch Wortreihenfolge`):
„**Er aber sagte (*jetzt*)[a] zu seinen [d] Lernenden*:***
**Deshalb *gebrauch*e ich *zu* euch *die* Wort*e:***
**Sorget *euch* nicht *aufgrund von* eurer [d] Seele Seele, was ihr (*de facto*)[a] essen *könn*tet,**
**aber *auch* nich*t aufgrund von* dem Leib, was ihr (*de facto*)[a] i*ndividue*ll anziehen *könn*tet!“**
[1]aL, **Papyrus 075** schreibt:
„**Er aber sagte (*jetzt*)[a] zu den Lernenden*:***
**Deshalb *gebrauch*e ich *die* Wort*e zu* euch*:***
**Sorget *euch* nicht *aufgrund von* der Seele, was ihr (*de facto*)[a] essen *könn*tet,**
**aber *auch* nich*t aufgrund von* dem Leib, was ihr (*de facto*)[a] i*ndividue*ll anziehen *könn*tet!“**

**Lehre**
*in*
**Bezug**
*auf*
**die**
*irdischen*
**Sorgen** — Mat 6.25-34

[1]**Er**
[1]**aber**
[1]**sagte**
[1](*jetzt*)[a]
[1]**zu**
[1]**seinen [d] Lernenden*:***
[1]**Deshalb**
[1]*gebrauch*e
[1]**ich**
[1]*die*
[1]**Wort*e***
[1]*zu*
[1]**euch*:***
[1]**Sorget** — Luk 21.34, Php 4.6, 1 Petr 5.7
[1]*euch*
[1]**nicht**
[1]*aufgrund*
[1]*von*
[1]**der**
[1]**Seele,**
[1]**was**
[1]**ihr**
[1](*de facto*)[a]
[1]**essen** — Ps 37.25
[1]*könn*tet,
[1]**aber**
[1]*auch*
[1]**nich*t***
[1]*aufgrund*
[1]*von*
[1]**dem**
[1]**Leib,**
[1]**was**
[1]**ihr**
[1](*de facto*)[a]
i*ndividue*ll
[1]**anziehen**
[1]*könn*tet!

ohne (...) a+pt lesbar

| 23.) | | 23.) | |
|---|---|---|---|
| | | א, B, P 075 | |
| ἡ | | γὰρ | [1]Denn |
| Die | | denn | [1]die |
| | | | [1]Seele |
| | no fe | aj no ne kp | |
| ψυχὴ | | πλεῖόν | [1]ist |
| Erkaltende | | mehr | [1]mehr |
| *zu* Kühlende | | | [1]*trotz* |
| Behauchte | | | [1]der |
| Beatmete | | | [1]Nahrung |
| Seele | | | und |
| Psyche | | | der |
| | | | Leib |
| | 3 p pr | *prp gn* | *mehr* |
| ἐστιν | | | *trotz* |
| ist sie | | *trotz* | des |
| | | | anziehbaren |
| | | gn ne | *Gewandes*! |
| τῆς | | τροφῆς | |
| der | | Nahrung, | |
| | | Ernährung | |
| καὶ | | τὸ | [1]aL, |
| und | | der | Codex Alexandrinus |
| | | | und |
| | no ne | *aj no ne kp* | Textus Receptus |
| σῶμα | | | schreiben: |
| Leib | | *mehr* | „Die |
| Körper | | | Seele |
| | | | ist |
| | *prp gn* | | mehr |
| | | τοῦ | *trotz* |
| *trotz* | | des | der |
| | | | Nahrung,“ |
| | gn ne | | |
| ἐν-δύματος | | | |
| *hinein*-schlüpfbaren | | *Gewandes* | |
| anziehbaren | | | |
| | | | |
| | | | |
| | ! | | |

Ps 139.13+14

1 Tim 6.8

ohne (...) a+pt lesbar

24.) 24.)

2 p pl a1 i! kt — prp ak

κατα-νοήσατε

| | |
|---|---|
| (*De facto*) **herab-bedenket ihr** | *in Bezug auf* |
| (*De facto*) *all***bezüglich-bedenket ihr** | - |
| (*De facto*) *an***gemes***sen***-bedenket ihr** | - |
| (*De facto*) *in jeder* **Bezieh***ung***-bedenket ihr** | - |
| (*De facto*) **jeweils-bedenket ihr** | - |
| (*De facto*) *all***bezüglich-begreifet ihr** | - |
| (*De facto*) *in jeder* **Bezieh***ung***-begreifet ihr** | - |
| (*De facto*) **betrachtet ihr** | - |
| (*De facto*) **prüfend gewahret ihr** | - |
| (*De facto*) **prüfend wahrnehmet ihr** | - |

ak ma pl

| | | |
|---|---|---|
| τοὺς | κόρακας | |
| **die** | **Schrei***hälse* **Krächzenden** **Raben** | **!,** |

κ, D, L, Θ — [A, B, R]

| | | |
|---|---|---|
| ὅτι | \|οὔ-τε\| | [οὐ] |
| **daß** | **\|nicht-außerdem\|** | **[nicht]** |
| **da** | **\|weder\|** | |

3 p pl pr — κ, D, L, Θ

| | |
|---|---|
| σπείρουσιν | \|οὔ-τε\| |
| **säen sie** | **\|nicht-außerdem\|** **\|noch\|** |

[A, B, R] — 3 p pl pr

| | |
|---|---|
| [οὐ-δὲ] | θερίζουσιν |
| **[nicht-aber** *auch***]** | *Ge***wärmtes** *einfahr***en sie** **ernten sie,** *den* **Sommer** *nutz***en sie** |

pna dt ma pl — 3 p pr

| | | |
|---|---|---|
| οἷς | οὐκ | ἔστιν |
| **welchen** | **nicht** **k** | *zu eigen* **ist sie,** |

no ne

| | | |
|---|---|---|
| | ταμεῖον | οὐ-δὲ |
| *einen* *eine* *eine* *eine* | **Wirtschaft***sraum* **Vorratskammer** **Kammer,** **Kemenate** | **nicht-aber** *auch* **k-aber** *auch* |

no fe

| | | |
|---|---|---|
| | ἀπο-θήκη | καὶ |
| *eine* | **Weg-Setzung** **Scheune,** **Apo-Theke** | **und** |

ak ma — 3 p pr

| | | |
|---|---|---|
| ὁ | θεὸς | τρέφει |
| **der** | *Ein***setzer** *Ab***setzer** **Schau***end***e** **GOTT** | **nähren** *läßt* **er** *er***nähren** *läßt* **er** |

3 p pl ak ma — prp dt

| | | |
|---|---|---|
| αὐτούς | | |
| **sie** | *doch***.** | *In* |

aj dt ne — 2 p pl no — av kp

| | | |
|---|---|---|
| πόσῳ | ὑμεῖς | μᾶλλον |
| **was für** *eine Menge* **wie vielem** | **ihr,** | **viel mehr** |

2 p pl pr

διά-φέρετε

*hin***durch-tragt ihr**
**durch-Tragen** *von Leid zu einer höheren Vollendungsstufe gelang***t ihr**
*euch* **durch***weg-zur Vollendungs***bring***ung eign***et ihr**
*als* **Vorzüglich***ere leb***t ihr**

prp gn — gn ne pl

| | | | |
|---|---|---|---|
| | τῶν | πετεινὰ | |
| *trotz* | **der** | **fliegenden** *Wesen* **Flügler** **flatternden** *Wesen* | **!** |

[1]aL, **Codex Alexandrinus**, **Codex Vaticanus** und **Textus Receptus** schreiben:
„**daß sie nicht säen aber** *auch* **nicht ernten,**“

**Betrachtet**
(*de facto*)[a]
**die**
**Raben!,** — Hi 38.41, Ps 147.9
[1]**daß**
[1]**sie**
[1]**weder**
[1]**säen** — Mat 6.26
[1]**noch**
[1]**ernten,**
**welchen**
**k***eine*
**Kammer**
*zu*
*eigen*
**ist,**
**aber**
**auch**
**k***eine*
**Scheune,**
**und**
**der**
**GOTT** — MAT 6.26 (VATER)
*läßt*
**sie**
*doch*
*er***nähren.**
*In*
**wie**
**vielem**
**ihr,**
*eign***et**
**ihr**
*euch*
**durch***weg*
**viel**
**mehr** — Mat 12.12
*zur*
*Vollendungs***bring***ung* — Mat 10.31, Luk 12.7
*trotz*
**der**
**fliegenden**
*Wesen***!**

ohne (...) a+pt lesbar

| 25.) | | 25.) |
|---|---|---|
| | pna no ma | |
| | τίς | δὲ |
| | Wer | aber |
| | prp gn | 2 p pl gn |
| | ἐξ | ὑμῶν |
| | aus *sich heraus* | eurer*seits* |
| | aus | eu*ch* |
| | | pt pr no ma |
| | | μεριμνῶν |
| | *als* | *An*teil*nehm*ender |
| | | *sich* Sorgender |
| | 3 p pr md/ps dp | 3 p pr md/ps dp (Zustand) |
| | δύναται | |
| | *individuel*l vermag er | vermögen*d* ist er |
| | *individuel*l Können *hat* er | können*d* ist er |
| | *individuel*l Macht *hat* er | mächt*ig* ist er |
| | *individuel*l Fähig*keit hat* er | fähig ist er |
| | *individuel*l Dynam*ik hat* er | dynam*isch* ist er |
| | 3 p pr md/ps dp (Vorgang) | א, א¹, A, R: if a2 ps kt |
| | | \|προσ-θεῖναι\| |
| | vermögen*d* wird er | \|(*de facto*) hinzu-*zu*setzen\| |
| | können*d* wird er | |
| | mächt*ig* wird er | |
| | fähig wird er | |
| | dynam*isch* wird er | |
| | prp ak | |
| | ἐπὶ | τὴν |
| | auf | den |
| | ak fe | 3 p gn ma |
| | ἡλικίαν | αὐτοῦ |
| | *voll* ausgewachsenen *Leib*, | seiner*seits* |
| | | seinen, |
| | [B, P 075: if a2 ps kt] | ak ma |
| | [προσ-θεῖναι] | πῆχυν |
| | [(*de facto*) hinzu-*zu*setzen] | Elle |
| | | Ell*bogenlänge*, |
| | א, B, P 075 | [א¹, A, R: nu ak ma] |
| | | [ἕνα] |
| | \|*eine*\| | [eine] |
| | | |
| | | |
| | ? | |

[1]aL, 1. Korrektor Codex Sinaiticus, Codex Alexandrinus und Textus Receptus schreiben:
„**Wer eurer***seits hat* **aus** *sich heraus* **individuel**l **aber** *die* **Fähig***keit sich als* **Sorgender**
**(***de facto***)**[a] **eine Ell***bogenlänge* **auf den seinen** *voll* **ausgewachsenen** *Leib* **hinzu***zu***setzen?**“

[1]Wer
[1]eurer*seits*
[1]*hat*
[1]aus
[1]*sich*
[1]*heraus*
[1]*individuel*l
[1]aber
[1]*die*
[1]Fähig*keit*
[1]*sich*
[1]*als*
[1]Sorgender
[1](*de facto*)[a]
[1]*eine*
[1]Ell*bogenlänge*
[1]auf
[1]den
[1]seinen
[1]*voll*
[1]ausgewachsenen
[1]*Leib*
[1](*de facto*)
[1]hinzu*zu*setzen?

ohne (...) a+pt lesbar

| 26.) | | 26.) |
|---|---|---|
| εἰ | οὖν | |
| Wenn | daher | |
| | | |
| ℵ, B | [A, R] | |
| \|οὐ-δὲ\| | [οὔ-τε] | |
| \|nicht-aber *auch*\| | [nicht-außerdem] | |
| | [nicht einmal] | |
| | | |
| *prp ak* | ℵ | |
| | τι | |
| *in Bezug auf* | irgend | |
| | [1]etwas | |
| | | |
| aj ak ne sl | 2 p pl pr md/ps dp | |
| ἐλάχιστον | δύνασθε | |
| Geringstes | *individuell* vermögt ihr | |
| | *individuell* Können *habt* ihr | |
| | *individuell* Macht *habt* ihr | |
| | *individuell* Fähig*keit habt* ihr | |
| | *individuell* Dynam*ik habt* ihr | |
| | | |
| 2 p pr md/ps dp (Zustand) | 2 p pr md/ps dp (Vorgang) | |
| | | |
| vermögen*d* seid ihr | vermögen*d* werdet ihr, | |
| können*d* seid ihr | können*d* werdet ihr | |
| mächt*ig* seid ihr | mächt*ig* werdet ihr | |
| fähig seid ihr | fähig werdet ihr | |
| dynam*isch* seid ihr | dynam*isch* werdet ihr | |
| | | |
| pna ak ne | prp gn | |
| τί | περὶ | |
| was | betreffs | |
| | | |
| | gn ne pl | |
| τῶν | λοιπῶν | |
| der | Übrigen | |
| | *noch* Fehlenden | |
| | | |
| | 2 p pl pr | |
| | μεριμνᾶτε | |
| *Dinge* | *An*teil *nehm*et ihr | |
| | *euch* sorget ihr | |
| | | |
| | | |
| | | |
| ? | | |

[1]aL, 2. Korrektor Codex Sinaiticus und Codex Vaticanus schreiben („**irgend**“ `fehlt`):
„**Wenn ihr daher aber** *auch* **nicht Geringstes** *individuell* **vermögt,**“
[1]aL, Codex Alexandrinus und Textus Receptus schreiben („**irgend**“ `fehlt`):
„**Wenn ihr daher nicht einmal Geringstes** *individuell* **vermögt,**“

[1]Wenn
[1]ihr
[1]daher
[1]aber
[1]*auch*
[1]nicht
[1]irgend
[1]Geringstes
[1]*individuell*
[1]vermögt,
was
sorget
ihr
euch
betreffs
der
übrigen
*Dinge*?

27.) 27.)

2 p pl a1 i! kt — prp ak

κατα-νοήσατε

(*De facto*) **herab-bedenket ihr** — *in Bezug auf*
(*De facto*) *all*bezüglich-bedenket ihr — -
(*De facto*) *an*gemes*sen*-bedenket ihr — -
(*De facto*) *in jeder* Bezieh*ung*-bedenket ihr — -
(*De facto*) jeweils-bedenket ihr — -
(*De facto*) *all*bezüglich-begreifet ihr — -
(*De facto*) *in jeder* Bezieh*ung*-begreifet ihr — -
(*De facto*) betrachtet ihr — -
(*De facto*) prüfend gewahret ihr — -
(*De facto*) prüfend wahrnehmet ihr — -

ak ne pl

τὰ κρίνα
die *Be*urteil*sfäh*igen !,
Windröschen

av — 3 p pr

πῶς αὐξάνει
wie *alles* wächst es,
gedeiht es

3 p pr

οὐ κοπιᾷ
*wie* nicht *sich zer*hauen*d anstreng*t es
*sich* ermüden*d anstreng*t es

3 p pr

οὐ-δὲ νήθει
aber-*auch* nicht Junges-setzt es
spinnt es.

1 p pr

λέγω
Worte ich *zu*
*Die* Wort*e gebrauch*e ich
Sage ich

2 p pl dt

δὲ ὑμῖν
aber euch

ℵ, A, D, L, Ψ — [B, R, P 075]

|ὅτι|
|daß| [:]
|:|

οὐ-δὲ
nicht-aber *auch* *der*

hebrÜ: no ma — (NÜ)

Σολομὼν (Σολομὼν)
Friedende (Betuchte)
Salomon (Salomon)

prp dt — aj dt fe

ἐν πάσῃ τῇ
in all der

dt fe — 3 p gn ma

δόξῃ αὐτοῦ
*bewiesenen und anerkannten guten* Meinung seiner,
Bewährtheit*sbestätigung und Anerkenn*ung
Herrlichkeit
*Be*herrlichung / *Ver*herrlichung
Strahlkraft
*Ausstattung mit* Licht*ab*strahlung

3 p a2 md kt

περι-εβάλετο
(*de facto*) sich um-warf er
(*de facto*) sich *mit einem* um*hangähnlichen-Über*wurf *ausstatt*ete er

nu ak ne

ὡς ἓν
wie eine

*prp gn* — pn gn ne pl

τούτων
- dieser
*von* diesen.

[1]aL, Codex Vaticanus, Textus Receptus und Papyrus 075 schreiben:
„Ich aber *gebrauch*e *die* Wort*e zu* euch*:*
Aber *auch* Salomon *statt*ete sich nicht
in all der *Bestätigung und Anerkenn*ung seiner Bewährtheit
(*de facto*)[a] *mit einem* um*hangähnlichen Über*wurf *aus* wie eine *von* diesen.“

Betrachtet
(*de facto*)[a]
die
Windröschen!,
wie
*alles*
wächst,
*wie*
es
*sich*
nicht
ermüden*d*
*anstreng*t,
aber
auch
nicht
spinnt.
[1]Ich
[1]aber
[1]*gebrauch*e
[1]*die*
[1]Wort*e*
[1]*zu*
[1]euch,
[1]daß
[1]aber
[1]*auch*
[1]Salomon
[1]nicht
[1]in
[1]all
[1]der
[1]*Bestätigung*
[1]*und*
[1]*Anerkenn*ung
[1]seiner
[1]Bewährtheit
[1](*de facto*)[a]
[1]sich
[1]*mit*
[1]*einem*
[1]um*hangähnlichen*
[1]*Über*wurf
[1]*ausstatt*ete
[1]wie
[1]eine
[1]*von*
[1]diesen.

1 Kön 3.13
1 Kön 10.5
2 Chr 1.12

ohne (...) a+pt lesbar

28.) 28.)

κ, B: prp dt

| | | |
|---|---|---|
| εἰ | δὲ | ἐν |
| Wenn | aber | in |
| | | A, R = 3 |

dt ma

| | | |
|---|---|---|
| | ἀγρῷ | τὸν |
| *dem* | *Umher*führ*land* | das |
| | Feld | |
| | wilden *Ort* | |
| | Ackerland | |
| | A, R = 4 | A, R = 1 |

| ak ma | | pt pr ak ma |
|---|---|---|
| χόρτον | | ὄντα |
| Satt*machend*e | *das* | *da*seiende |
| Gras, | | |
| A, R = 2 | | A, R = 6 |

| av | | av |
|---|---|---|
| σ-ήμερον | καὶ | αὔριον |
| *diese*n-Tag, | und | anderntags |
| heute | | |
| A, R = 5 | | |

| prp ak | | ak ma |
|---|---|---|
| εἰς | | κλίβανον |
| hinein in | *den* | Ofen |

| pt pr ak md/ps | pt pr ak ma md/ps (Vorgang) |
|---|---|
| βαλλόμενον | |
| sich Werfen/*ass*ende | Geworfenwerdende |

| pt pr ak ma md/ps (Zustand) | |
|---|---|
| | ὁ |
| Geworfenseiende | der |

| no ma | av |
|---|---|
| θεὸς | οὕτως |
| *Ein*setzer | *auf* diese *Weise* |
| *Ab*setzer | also |
| Schau*end*e | so*lcherart* |
| Gott | |

| κ, R: 3 p pr | [B: aS] |
|---|---|
| \|ἀμφι-έννυσιν\| | [ἀμφι-άζει] |
| rings*um*-kleidet er, | |

| | prp dt | aj dt ne |
|---|---|---|
| οὐ | | πολλῷ |
| nicht | *in* | vielem |

| av kp | 2 p pl ak | vo |
|---|---|---|
| μᾶλλον | ὑμᾶς | |
| viel mehr | euch, | *ihr* |

| aj vo ma pl | |
|---|---|
| ὀλιγό-πιστοι | |
| wenig-Treue*verbindung Hab*enden | ? |
| wenig-*Ver*trauenden | |
| wenig-Gläubigen | |
| Kurz-Gläubigen | |

[1]Wenn
[1]aber
[1]im
[1]Feld
[1]das
[1]Gras,
[1]*das*
[1]*da*seiende
[1]*diese*n
[1]Tag
und
anderntags
hinein
in
*den*
Ofen
geworfenwerdende
der
*Ein*setzer
*auf*
diese
*Weise*
rings*um*
kleidet,
nicht
*in*
vielem
viel
mehr
euch,
*ihr*
wenig
Treue*verbindung*
*Haben*den?

Jes 40.7
Jes 51.12
Ps 90.5+6
Ps 103.15
1 Petr 1.24

Mat 6.30

der Sohn GOTTES spricht von sich in der 3. Person

Mat 8.25+26
Mar 4.38-40
Luk 8.24+25

Mat 14.14-23
Mar 6.47-52

Mat 16.8
Mar 8.17+18

[1]aL, **Codex Alexandrinus** und **Textus Receptus** schreiben:
„**Wenn aber das Gras im Feld,** *das diese*n **Tag** *da*seiende,“

29.) 29.)

ℵ: 2 p pl no

| | |
|---|---|
| καὶ | |ὑμεῖς |
| Und | |ihr |

2 p pl pr [ℵ¹, A, B, R, P 075: 2 p pl no

| | |
|---|---|
| ζητεῖτε| | [ὑμεῖς |
| sucht ihr,| | [ihr, |

2 p pl pr i!]

| | |
|---|---|
| μὴ | ζητεῖτε] |
| nicht | suchet ihr,] |

pn ak ne

| |
|---|
| τί |
| was |

2 p pl a2 kj kt

| |
|---|
| φάγητε |
| (*de facto*) essen *könn*tet / *soll*tet / *würd*et ihr |

ℵ, ℵ¹, B [A, R, P 075]

| | |
|---|---|
| |καὶ| | [ἢ] |
| |und| | [oder] |

pn ak ne

| |
|---|
| τί |
| was |

2 p pl a2 kj kt

| |
|---|
| πίητε |
| (*de facto*) trinken *könn*tet / *soll*tet / *würd*et ihr |

Sonderlesart ℵ: *prp dt*

| | |
|---|---|
| μη-δὲ | |
| nicht-aber | *aufgrund von* |
| | *infolge von* |

dt ne

| | |
|---|---|
| τῷ | σώματι |
| dem | Leib |
| | Körper |

ℵ:

| | |
|---|---|
| | |καὶ| |
| |! | auch |

[ℵ¹, A, B, R, P 075]

| | |
|---|---|
| [καὶ] | μὴ |
| [und] | nicht |

2 p pl pr i! md/ps

| |
|---|
| μετ-εωρίζεσθε |
| euch weiter*hin-in der* Luft *hän*gen *las*set ihr |

2 p pl pr i! md/ps (Zustand)

*zum* weiter*hin-in der* Luft *hän*gen *veranlaß*t seid ihr

2 p pl pr i! md/ps (Vorgang)

*zum* weiter*hin-in der* Luft *hän*gen *veranlaß*t werdet ihr

!

[1]aL, **1. Korrektor Codex Sinaiticus** und **Codex Vaticanus** schreiben:
„**Und ihr, suchet nicht,**
**was ihr** (*de facto*)[a] **essen** *könn*tet **und was ihr** (*de facto*)[a] **trinken** *könn*tet,
**und** *las*set **euch nicht weiter***hin in der* **Luft** *hän*gen!“
[1]aL, **Codex Alexandrinus**,**Textus Receptus** und **Papyrus 075** schreiben:
„**Und ihr, suchet nicht,**
**was ihr** (*de facto*)[a] **essen** *könn*tet **oder was ihr** (*de facto*)[a] **trinken** *könn*tet,
**und** *las*set **euch nicht weiter***hin in der* **Luft** *hän*gen!“

[1]Und
[1]ihr,
[1]ihr
[1]sucht,
[1]was
[1]ihr
[1](*de facto*)[a]
[1]essen
[1]*könn*tet
[1]und
[1]was
[1]ihr
[1](*de facto*)[a]
[1]trinken
[1]*könn*tet,
[1]aber
[1]nicht
[1]*aufgrund*
[1]*von*
[1]dem
[1]Leib!
[1]Auch
[1]*las*set
[1]euch
[1]nicht
[1]weiter*hin*
[1]*in*
[1]*der*
[1]Luft
[1]*hän*gen!

[1]aL,
**Codex Sinaiticus**
schreibt:
„**Und**
**ihr,**
**ihr**
**sucht,**
**was**
**ihr**
(*de facto*)[a]
**essen**
*könn*tet
**und**
**was**
**ihr**
(*de facto*)[a]
**trinken**
*könn*tet!
**Auch**
*las*set
**euch**
**nicht**
**weiter***hin*
*in*
*der*
**Luft**
*hän*gen!“

Siehe aber Lesart **1. Korrektor** bestätigt durch **Codex Vaticanus**

Mat 6.31

Mat 6.25

ohne (...) a+pt lesbar

| 30.) | | | 30.) |
|---|---|---|---|
| prp ak | pna ak ne pl | | |
| | ταῦτα | | |
| Nach | diesen | Dingen | |
| | | | aj ak ne pl |
| γὰρ | | πάντα | |
| denn | | allen | |
| | | | no ne pl |
| τὰ | | ἔ-θνη | |
| die | | sich-*selbst als Gruppe Ge*setzen<br>sich-*selbst als eigen*willig *Zeigend*en<br>*aneinander* Gewöhnten | |
| | | Nationen | |
| prp gn | | | gn ma |
| | | κόσμου | |
| {*aus*} | *dem*<br>*des* | Schmuck<br>Geschmückten | |
| | *der* | Welt | |
| | *des* | Kosmos | |
| | א, B, P 075: 3 p pl pr | | [A, R: |
| | \|ἐπι-ζητοῦσιν\| | | |
| | \|*all*gebiets-suchen sie\| | [*jede* | |
| | | | |
| | | | |
| *einzelne* | | *von* | |
| | | | 3 p pr] |
| | | [ἐπι-ζητεῖ] | |
| *ihnen* | | *all*gebiets-sucht sie]. | |
| | 2 p pl gn | | |
| ὑμῶν | | δὲ | |
| Euer | | aber | |
| Eurer*seits* | | | |
| | | | no ma |
| ὁ | | πατὴρ | |
| der | | Vater | |
| | 3 p def pe | | |
| οἶδεν | | ὅτι | |
| gewahrt er | | daß | |
| wahrnimmt er, | | | |
| | 2 p pl pr | | pn gn ne pl |
| χρῄζετε | | τούτων | |
| *für den* Gebrauch *benötig*t ihr | | dieser. | |
| bedürft ihr | | | |

| | |
|---|---|
| [1]Denn | |
| [1]*nach* | |
| [1]all | |
| [1]diesen | |
| [1]*Dingen* | |
| [1]suchen | |
| [1]*all*gebiets | |
| [1]die | |
| [1]Nationen | Röm 1.21-24<br>Röm 9.21<br>Mat 6.8 |
| [1]der | vgl.<br>Jak 2.5 |
| [1]Welt. | |
| Aber | |
| der | |
| Vater | |
| eurer*seits* | |
| nimmt | |
| wahr, | |
| daß | |
| ihr | |
| dieser | |
| *für* | |
| *den* | |
| Gebrauch | 2 Chr 16.9 |
| *benötig*t. | |

[1]aL, **Codex Alexandrinus** und **Textus Receptus** schreiben:
„**Denn** *nach* **all diesen** *Dingen:* **Die Nationen der Welt,** *jede einzelne von ihnen* **sucht** *all*gebiets,“

31.) 31.)

πλὴν
Vielig
mehrig
Indes,

2 p pl pr i! ℵ, ℵ1, A, B, R, P 075:

| | |
|---|---|
| ζητεῖτε | τῆ |
| suchet ihr | die |
| | die |
| | die |
| | die |
| | die |
| | die |
| | die |
| | das |
| | das |
| | die |

ak fe ℵ, ℵ1, B: 3 p gn ma

| | |
|---|---|
| βασιλείαν | \|αὐτοῦ\| |
| *voran*schreitende *Mann*schaft | \|seiner*seits*\| |
| *den Fort*schritt *bestimm*ende *Mann*schaft | \|seine\| |
| *auf Veranlassung auf*gestiegene *Mann*schaft | \|seine\| |
| Regentschaft | \|seine\| |
| Regierung | \|seine\| |
| König*sherr*schaft, | \|seine,\| |
| König*rei*ch | \|sein\| |
| Königtum | \|sein\| |
| basis*gebende Mann*schaft | \|seine\| |

[A, R: gn ma]

| | |
|---|---|
| [τοῦ | θεοῦ] |
| [des | *Ein*setzers] |
| | [*Ab*setzers] |
| | [Schau*end*en] |
| | [Gottes] |

pn no ne pl

| | |
|---|---|
| καὶ | ταῦτα |
| und | diese |

[ℵ1, A, R: aj no ne pl]

| | |
|---|---|
| | [πάντα] |
| *Dinge* | [alle], |
| *jedes* | *einzelne* |
| *von* | *ihnen* |

3 p ft ps 2 p pl dt

| | |
|---|---|
| προσ-τεθήσεται | ὑμῖν |
| wird hinzu-gesetzt werden es | euch. |

[1]Indes,
[1]suchet
[1]aber
[1]seine [d] König*sherr*schaft! Röm 14.17
[1]und
[1]diese
[1]*Dinge*,
[1]*jedes*
[1]*einzelne*
[1]*von*
[1]*ihnen*
[1]wird
[1]euch Kön 3.13 Ps 55.23 Ps 145.15 Eph 3.20
[1]hinzugesetzt
[1]werden.

[1]aL,
1. Korrektor Codex Sinaiticus
schreibt:
„Indes,
suchet
aber
seine [d] König*sherr*schaft!,
und
alle
diese
*Dinge*,
*jedes*
*einzelne*
*von*
*ihnen*
wird
euch
hinzugesetzt
werden.“

[1]aL, Codex Alexandrinus und Textus Receptus schreiben:
„Indes, suchet aber die König*sherr*schaft des Gottes!, und alle diese *Dinge*,
*jedes einzelne von ihnen* wird euch hinzugesetzt werden.“
[1]aL, Papyrus 075 schreibt:
„Indes aber suchet die König*sherr*schaft!, und diese *Dinge*,
*jedes einzelne von ihnen* wird euch hinzugesetzt werden.“

**Lehre**

**vom**

**richtigen**

**Setzen** *für den* **anderen Tag**
**Speichern**

32.) 32.)

2 p pr i! md/ps

| | |
|---|---|
| μὴ | φοβοῦ |
| **Nich***t* | **dich fürchte du** |
| **Nicht***s* | ***individuell be*fürchte du** |

| 2 p pr i! md/ps (Zustand) | 2 p pr i! md/ps (Vorgang) |
|---|---|
| **fürchtenge***macht* **sei du** | **fürchtenge***macht* **werde du** |
| *in* **Furcht** *versetzt* **sei du** | *in* **Furcht** *versetzt* **werde du** |
| *von* **Furcht** *erfaßt* **sei du** | *von* **Furcht** *erfaßt* **werde du** |

| | |
|---|---|
| | τὸ |
| *da* | **das** |

| aj no ne | no ne |
|---|---|
| μικρὸν | ποίμνιον |
| **kleine** | **Gehirtete** |
| | *vom* **Hirt***en* **Ge***hüt***ete** |
| | **Herdlein** |

| | |
|---|---|
| *bist du* | **!,** |

3 p a1 kt

εὐ-δόκησεν

(*de facto*) **wohl-meint er**
(*de facto*) *in Bezug auf das* **Wohl-***eine Grundsatz***mein***ung besitz***t **er**
(*de facto*) *eine* **wohl***wollende Überzeugung-als Grundsatz***mein***ung besitz***t **er**

κ: 2 p pl gn

|ὑμῶν|
**|eurer***seits***|**

no ma

| | |
|---|---|
| ὁ | πατὴρ |
| **der** | **Vater,** |

| [A, B, R: 2 p pl gn] | if a1 kt |
|---|---|
| [ὑμῶν] | δοῦναι |
| [euer,] | (*de facto*) **geben** *zu las***sen** |

2 p pl dt

| | |
|---|---|
| ὑμῖν | τὴν |
| **euch** | **das / die** |

ak fe

βασιλείαν

*einer voran***schreitenden** *Mann***schaft**
*einer den Fort***schritt** *bestimm***enden** *Mann***schaft**
*einer auf Veranlassung auf***gestiegenen** *Mann***schaft**
**Regentschaft**
**Regierung**
**König***herr***schaft**
**König***rei***ch**
**Königtum.**
*einer* **basis***gebenden Mann***schaft**

[1]aL, **Codex Alexandrinus**, **Codex Vaticanus** und **Textus Receptus** schreiben:
„**da euer** [d] **Vater** *in Bezug auf das* **Wohl** (*de facto*)[a] *als eine Grundsatz***mein***ung besitz***t,**“

**Lehre**
**vom**
**richtigen**
**Speichern** — Mat 6.19-21

**Fürchte** — Jes 41.14
**dich**
**nich***t,*
*da*
*du*
**das**
**kleine**
**Herdlein** — Jak 2.5
*bist*!,
[1]**da**
[1]**der**
[1]**Vater**
[1]**eurer***seits*
[1]*in*
[1]*Bezug*
[1]*auf*
[1]*das*
[1]**Wohl**
[1](*de facto*)[a]
[1]*als*
[1]*eine*
[1]*Grundsatz***mein***ung*
[1]*besitz***t,**
**euch**
(*de facto*)[a]
**das**
**Königtum** — Dan 7.18+27, Luk 22.30
**geben**
*zu*
*las***sen.**

ohne (...) a+pt lesbar

33.) 33.)

2 p pl a1 i! ig
πωλήσατε — τὰ
(*Jetzt*) **verkaufet ihr** — **die**

pt pr ak ne pl
ὑπ-άρχοντά
*im* **unteren-Anfang** *als Ausgangspunkt der Daseinsgrundlage Sei***enden**
*im* **unteren-Beginn** *als Ausgangspunkt der Daseinsgrundlage Sei***enden**
*gehör***enden Besitztümer,**

2 p pl gn — καὶ — 2 p pl a1 i! ig
ὑμῶν — καὶ — δότε
**eurer***seits* — **und** — (*jetzt*) **gebet ihr**
**eu***ch*,

ak fe
ἐλεημο-σύνην
**gesamte**[2]*-er***barmende**[1] *Gabe*
**gesamte**[2]**-barm***herz***ige**[1] *Gabe*
**gesamte**[2]**-bemitleidende**[1] *Gabe*
**Almosen** — !

2 p pl a1 i! ig — 3 p pl dt ma
ποιήσατε — ἑ-αυτοῖς
(*Jetzt*) **tät***ig geb***et ihr** — **euch-selbst**
(*Jetzt*) **machet ihr**

ak ne pl
βαλλ-άντια
**Wurf-Anstatt***seiend***e**
*etwas* **anstelle**[2] *von-für das Hinein***werfen**[1] *seiend***e**
**Beutel**
*Geld***beutel** — !,

pt pr ak ne pl md/ps
μὴ — παλαιούμενα
**nich***t* — **i***ndividuel***l veraltende**

pt pr ak ne pl md/ps (Zustand) — pt pr ak ne pl md/ps (Vorgang)
**veraltetseiende** — **veraltetwerdende,**

ak ma
θησ-αυρὸν
*ein* — **Gesetztes-***für* **anderntags** — *ein*
*ein* — **gespeichertes** *Gut* — *ein*
*eine* — **Wertsache,** — *eine*

aj ak ma
ἀν-έκ-λειπτον
**un-aus-fehlbares**
**aus***schließlich***-un-fehlen***haben***des**
*das / die nicht***-aus***geht-und sich als* **fehlend** *erweist*,

prp dt — dt ma
ἐν — τοῖς — οὐρ-ανοῖς — ὅ-που
**in** — **den** — **sichtbar-Oberen** — **der***weil***-wo**
**Himmel,** — **wo**

no ma
κλέπται — οὐκ
*ein* — *vom* **Ruf** *her Un***bekannt***er* — **nicht**
**Verhülltes** *Tuend***er** — **k**
**Verdecktes** *Tuend***er**
**Stehler**
**Dieb**

3 p pr
ἐν-γίζει
*es* — **im-Handschlag** *erreich***en** *will* **er**
- — *sich* **im-Handschlag** *erreichbar erweis***t er**
*es* — **im-Handschlag** *erreich***t er**
- — **naht sie**
- — *sich* **nähert sie**
- — **nahe***komm***t sie**
- — *heran***naht sie**

no ma
οὐ-δὲ — στὴς
**nicht-aber** *auch* — *eine* — **Motte**

3 p pr
δια-φθείρει
*es* — **durch** *und durch***-verderbt sie**
**duch***weg***-verderbt sie**
**durch***weg***-verderb***lich beeinfluß***t sie.**
**verwesen** *läß***t sie**

**Verkaufet**
(*jetzt*)[a]
**die**
**eu***ch*
*gehör***enden**
**Besitztümer** — Ps 62.11 Luk 3.11
**und**
**gebet** — Mat 19.21 Mar 10.21 Luk 18.22
(*jetzt*)[a]
**Almosen!** — Luk 6.38 Luk 11.41 Apg 2.46
**Machet**
**euch**
**selbst**
(*jetzt*)[a]
**Beutel!,**
*ja*
**nich***t*
**veraltetseiende,**
*eine*
**Wertsache,**
*die*
*nich***t**
**aus***geht*
*und*
*sich*
*als*
**fehlend**
*erweist*,
**in**
**den**
**Himmeln,** — Kol 3.1+2
**wo**
**k***ein*
**Dieb**
*sich*
**nähert,**
**aber**
*auch*
**nicht**
*eine*
**Motte** — Jes 51.8
*es*
**durch***weg*
**verderb***lich* — Hag 1.6
*beeinfluß***t.**

ohne (...) a+pt lesbar

| 34.) | | 34.) | | |
|---|---|---|---|---|
| | | | Denn | Kol 3.1-3 |
| ὅ-που | | γάρ | | |
| Der*weil*-wo | | denn | | |
| Wo | | | wo | Kol 2.3 |
| | 3 p pr | | | 1 Tim 6.19 |
| ἐστιν | | ὁ | eure d Wertsache | Heb 10.34 |
| ist es | | das | | |
| ist es | | das | ist, | |
| ist sie | | die | dort | |
| | | der | | |
| | no ma | 2 p pl gn | wird | |
| θησ-αυροὺς | | ὑμων | auch | |
| Gesetztes-*für* anderntags | | eurer*seits* | | |
| gespeichertes *Gut* | | eure | individuell | |
| Wertsache, | | eure, | | |
| Thes-auros | | euer | euer d Herz | Spr 21.2 |
| | | 3 p ft md (dp) | sein. | |
| ἐκεῖ | | ἔσται | | |
| dort | | individuell sein wird es | | |
| dort*hin* | | individuell gehören wird es | | |
| | | | Mahnung | |
| καὶ | | ἡ | zum | |
| auch | | das | | |
| | no fe | 2 p pl gn | Wachen | Mat 24.42-44 |
| κ-αρδία | | ὑμων | | |
| auch-Betränkten | | euer. | | |
| auch-Begossenen | | | | |
| auch-Bewässerten | | | [1]*Es* | |
| auch-Befruchteten | | | | |
| Herzen, | | | [1]seien | |
| Nebenlobung | | | [1]eurer*seits* | |
| *Mit* lobenden *Worten* unmittelbare *Anempfehl*ung | | | | |
| Mahnung | | | [1]die | 2 Mos 12.11 |
| | | | | Eph 6.14 |
| zum | | | [1]Lenden | 1 Petr 1.13 |
| | | | [1]*solche*, | |
| Erweckt*bleib*en | | | | |
| Wachen | | | *die* | |
| 35.) | | 35.) | (*im Verlauf dieses Zeitlaufs*)pt | |
| | 3 p pl pr i! | ℵ, B, R: 2 p pl gn | | |
| ἔστωσαν | | \|ὑμῶν\| | umgürtet | |
| Seien sie | | \|eurer*seits*\| | | |
| | | no fe pl | worden | |
| αἱ | | ὀσφύες | | |
| die | | Lenden | sind | |
| | [A: 2 p pl gn] | pt pe no fe pl md/ps | und | |
| [ὑμῶν] | | περι-εζωσμέναι | | |
| [eurer*seits*] | | sich Um-Gürten*lass*enhabende | die | Mat 5.16 |
| [eure,] | | | | Mat 25.1-13 |
| | pt pe no fe pl md/ps (Vorgang + Zustand) | | Leuchter | |
| | | καὶ | *solche*, | |
| Um-Gürtetworden(seiend)e | | und | | |
| | | no ma pl | *die* | |
| οἱ | | λύχνοι | (*im weiteren Zeitverlauf*)pt | |
| die | | Leuchter | | |
| | pt pr no ma pl md/ps | pt pr no ma pl md/ps (Zustand) | *zum* | |
| καιόμενοι | | | | |
| sich *zum* Brennen *Bring*en*lass*ende | | *zum* Brennen Ge*bracht*seiende | Brennen | |
| | pt pr no ma pl md/ps (Vorgang) | | ge*bracht* | |
| *zum* Brennen Ge*bracht*werdende | | ! | sind! | |

[1]aL, **Codex Alexandrinus** schreibt:
„*Es* seien eure d Lenden *solche*,“

interlinearer |Text| = danebenstehend eine abweichende Lesart: [Text] - gelb = ausgewählter Text der Interlinear-Übersetzung - unterstrichen = DaBhaR-Konkordanz
ef = Endpunkt, ig = Anfangspunkt, kp = Zusammenziehung in einem Punkt, kt = Tatsache feststellend, gm = Sprichwort (Auslegung!) – md/ps = medio-passiv

| 36.) | | | | 36.) |
|---|---|---|---|---|
| | | 2 p pl no | 2 p pl pr i! | aj no ma pl |
| καὶ | | ὑμεῖς | | ὅμοιοι |
| Und | | ihr, | sein sollt ihr | gleiche<br>ähnliche |
| | | | | dt ma pl |
| | | | | ἀν-θρ-ώποις |
| | den | | | Hinauf-Gewandt-Eraugenden<br>empor-ragend-Augenden<br>Hinauf-Gedrehten<br>Männer-Augen<br>Antlitzen[2]-*der* Männer[1]<br>Angesichtern[2]-*der* Männer[1]<br>Menschen,<br>Leuten |
| | | | | pt pr dt ma pl md/ps dp |
| | | προσ-δεχομένοις | | |
| | | sich zu-*als* Empfangs*bereiterweis*ende | | |
| | | | | pt pr dt ma pl md/ps dp (Zustand) |
| | | zu-*als* Empfangs*bereit*seiende | | |
| | | | | pt pr dt ma pl md/ps dp (Vorgang) |
| | | zu-*als* Empfangs*bereit*werdende | | |
| | | | ak ma | 3 p pl gn |
| τὸν | | κύριον | | ἑ-αυτῶν |
| dem | | Geltenden<br>Herrn, | | ihrer-selbst |
| | | | | ! , |
| | | | kj-Einleitung | kj-Einleitung |
| πότε | | | | |
| wann | | | | gleichsam<br>in diesem Fall |
| | | | | 3 p a1 kj kt |
| | | ἀνα-λύσῃ | | |
| | | (*de facto*) hinauf-lösen *würd*e / *könn*te / *soll*te er<br>(*de facto*) *nach* oben *hin*-lösen *würd*e / *könn*te / *soll*te er<br>(*de facto*) wieder-lösen *würd*e / *könn*te / *soll*te er<br>(*de facto*) ana-lysieren *würd*e / *könn*te / *soll*te er | | |
| | | prp gn | | gn ma pl |
| ἐκ | | τῶν | | γάμων |
| aus | | den | | Heirats*feiertag*en |
| aus*grund* | | der | | Hochzeit*feiertag*e, |
| | | | prp gn | |
| ἵνα | | | | |
| auf daß | | voraus<br>angesichts<br>ausgrund | | des |
| | | | pt a2 gn ma dp kt | |
| | | ἐλ-θόντος | | καὶ |
| | | (*faktischen*) Gekommenseienden | | und |
| | | | prp gn | |
| | | voraus<br>angesichts<br>ausgrund | | des |
| | | | pt a1 gn ma kt | av |
| | | κρούσαντος | | εὐ-θέως |
| | | (*de facto*) Angeklopfthabenden | | *für das* Wohl-gesetzt<br>gerade*wegs*<br>sofort |
| | | | | 3 p pl a1 kj kt |
| | | ἀν-οίξωσιν | | |
| | | (*de facto*) hinauf-öffnen *würd*en / *könn*ten / *soll*ten sie<br>(*de facto*) wieder-öffnen *würd*en / *könn*ten / *soll*ten sie<br>(*de facto*) oben-öffnen *würd*en / *könn*ten / *soll*ten sie<br>(*de facto*) öffnen[hf] *würd*en / *könn*ten / *soll*ten sie | | |
| | ℵ, B, R: 3 p dt ma | | [A: *prp gn* | 3 p gn ma] |
| | \|αὐτῷ\| | | | [αὐτοῦ] |
| | \|ihm\| | | [*voraus*<br>[*angesichts*<br>[*ausgrund*] | seiner*seits*]<br>seiner]. |

[1]aL, **Codex Alexandrinus** schreibt:
„*angesichts* **seiner** (*de facto*)[a] *für das* **Wohl gesetzt hinauföffnen** *würd*en.“

| | |
|---|---|
| Und | |
| ihr, | |
| *ihr* | *e: Vers 35 i!-Einleitung |
| *sollt** | |
| *den* | |
| Menschen | |
| gleiche | |
| *sein**, | |
| *die* | |
| (*im weiteren Zeitverlauf*)[pt] | |
| sich | |
| zu | |
| dem | |
| Herrn | Luk 8.40 |
| ihrer | |
| selbst | |
| *als* | |
| empfangs*bereit* | |
| *erweis*en*!*, | Apk 16.15 |
| wann | |
| *gleichsam* | |
| er | |
| (*de facto*)[a] | vgl. |
| aus*grund* | EH 3.10 |
| der | |
| Hochzeits*feiertag*e | Mat 13.37-50<br>1 Petr 4.16+17<br>EH 19.7 |
| *nach* | |
| oben | |
| *hin* | |
| lösen | Php 1.23<br>2 Tim 4.6 |
| *würd*e, | |
| auf | |
| daß | |
| sie | |
| *angesichts* | |
| *des* | |
| (*faktischen*)[a] | |
| (*im weiteren Zeitverlaufs*)[pt] | |
| Gekommenseins | |
| und | |
| *ausgrund* | |
| *des* | |
| (*de facto*)[a] | |
| (*in der Folge*)[pt] | |
| *An*geklopfthabens | |
| [1]ihm | |
| [1](*de facto*)[a] | |
| [1]*für* | |
| [1]*das* | |
| [1]Wohl | |
| [1]gesetzt | |
| [1]hinauföffnen | |
| [1]*würd*en. | |

ohne (...) a+pt lesbar

| 37.) | | 37.) | |
|---|---|---|---|
| | | aj no ma pl | Selige |
| | μακάριοι | | sind |
| | Selige | | die |
| | Glückselige | | dortigen |
| | Glückliche | | Sklaven, |
| | | | welche |
| | | οἱ | der |
| | sind sie | die | Herr, |
| | | | wenn |
| no ma pl | | pna no ma pl | er |
| δ-οῦλοι | | ἐκεῖνοι | (de facto)[a] |
| Durch-Narbten | | dortige, | (im weiteren Zeitverlauf)[pt] |
| Sklaven, | | jene | gekommen |
| | | | ist, |
| pn ak ma pl | | | als |
| οὓς | | | solche |
| welche, | | als | finden |
| | | | wird, |
| pt a2 no ma dp kt | | | die |
| ἐλθὼν | | ὁ | (fortlaufend)[pt] |
| (de facto) Gekommenseiender | | der | wachen. |
| | | | Wahrlich, |
| no ma | | 3 p ft | ich |
| κύριος | | εὑρήσει | gebrauche |
| Geltende | | finden wird er | die |
| Herr, | | | Worte |
| | | | zu |
| | | pt pr ak ma pl | euch: |
| | | γρ-ηγοροῦντας | Er |
| als | | Erweckt Bleibende | wird |
| | | Wachende. | sich |
| | | | umgürten, |
| hebrÜ: inde | | 1 p pr | und |
| ἀμὴν | | λέγω | er |
| Treulich ist es | | worte ich | wird |
| Es ist wahrheitsgetreu | | die Worte gebrauche ich | sie |
| Es ist treuewürdig | | sage ich | wieder |
| Wahrlich, | | | lagern |
| Amen | | | lassen. |
| | | | [Und |
| | | 2 p pl dt | er |
| | | ὑμῖν | wird, |
| - | | euch | wenn |
| zu | | | er |
| - | | | (de facto)[a] |
| | | | (allmählich)[pt] |
| | | 3 p ft md | vorbeigekommen |
| | | περιζώσεται | ist, |
| | | sich um-gürten wird er, | ihnen |
| | | | dienen.] |
| | | 3 p ft | |
| | | ἀνα-κλινεῖ | |
| | | herauf-neigen lassen wird er | |
| | | wieder-neigen lassen wird er | |
| | | herauf-lagern lassen wird er | |
| | | wieder-lagern lassen wird er | |
| 3 p pl ak ma | | [κ[1], A, B, R: | |
| αὐτοὺς | | [καὶ | |
| sie. | | [Und | |
| | | pt a2 no ma dp kt | |
| | | παρ-ελθὼν | |
| als | | (de facto) Vorbei-Gekommenseiender | |
| | | [(de facto) Herbei-Gekommenseiender | |
| | | 3 p ft | |
| | | δια-κονήσει | |
| | | durch-Staub gehen wird er | |
| | | durchweg-mit Staub in Berührung kommen wird er | |
| | | [dienen wird er | |
| | | [als Dia-kon wirken wird er | |
| prp dt | | 3 p pl dt ma] | |
| | | αὐτοῖς | |
| aufgrund von | | ihnen.] | |
| aufgrund von] | | | |
| -] | | | |
| -] | | | |

Mat 24.46
Luk 12.43

Apk 22.20

Apk 16.15

Joh 13.4

Ps 90.4

ohne (...) a+pt lesbar

38.) 38.)

| | | |
|---|---|---|
| א, B | | |
| \|κ-ἂν\| | | |
| \|Und-so | *er*\| | |
| [A, R: | | |
| [καὶ | ἐὰν | |
| [Und | so | |
| 3 p a2 kj kt] | prp dt | |
| ἔλθῃ] | ἐν | |
| (*de facto*) kommen *soll*te / *würde* / *könn*te er] | in | |
| | nu dt fe | |
| τῇ | δευτέρᾳ | |
| der | zweiten | |
| dem | | |
| [A, R: dt fe] | | |
| [φυλακῇ | κ-ἂν | |
| [Bewahrung{*szeit*} {*hin*}] | und-so | |
| [Wachabschnitt {*hin*}] | | |
| prp dt | | |
| ἐν | τῇ | |
| in | der | |
| | dem | |
| nu dt fe | dt fe | |
| τρίτῃ | φυλακῇ | |
| dritten | Bewahrung{*szeit*} {*hin*} | |
| | Wachabschnitt {*hin*} | |
| א, B: 3 p a2 kj kt | | |
| \|ἔλθῃ\| | καὶ | |
| \|(*de facto*) kommen *soll*te / *würde* / *könn*te er\| | und | |
| 3 p a2 kj kt | av | |
| εὕρῃ | οὕτως | |
| (*de facto*) finden *soll*te / *würde* / *könn*te er | *auf* diese *Weise* | |
| | also | |
| | so*lcherart* | |
| | so | |
| aj no ma pl | 3 p pl pr | |
| μακάριοί | εἰσιν | |
| Selige | sind sie | |
| Glückselige | | |
| Glückliche | | |
| [A, R: | no ma pl] | |
| [οἱ | δοῦλοι] | |
| [die | Sklaven] | |
| | [א¹, A, B, R: pna no ma pl] | |
| | [ἐκεῖνοι] | |
| | [dortige]. | |
| | [jene] | |

[1]Und
[1]so
[1]*er*
[1]in
[1]dem
[1]zweiten
[1]und
[1]so
[1]er
[1]in
[1]dem
[1]dritten
[1]Wachabschnitt
[1](*de facto*)[a]
[1]{*hin*}kommen
[1]*soll*te,
[1]und
[1]er
[1]sie
[1]*auf*
[1]diese
[1]*Weise*
[1](*de facto*)[a]
[1]finden
[1]*soll*te,
[1]Selige
[1]sind
[1]sie.

Sach 14.1-7
Mar 13.27

EH 7.1-8
EH 12.1-6, 13.17

Sach 14.5
Mat 24.15-22
Mar 13.14-20

Mat 24.30
Mar 13.26

[1]aL, **1. Korrektor Codex Sinaiticus** und **Codex Vaticanus** schreiben:
„**Und so** *er* **in dem zweiten**
**und so er in dem dritten Wachabschnitt** (*de facto*)[a] {*hin*}**kommen** *soll*te,
**und er** *soll*te **sie** (*de facto*)[a] *auf* **diese** *Weise* **finden, Selige sind dortige.**“
[1]aL, **Codex Alexandrinus** und **Textus Receptus** schreiben (auch Wortreihenfolge):
„**Und so er** (*de facto*)[a] {*hin*}**kommen** *soll*te **in dem zweiten Wachabschnitt**
**und so in dem dritten Wachabschnitt,**
**und er** *soll*te **sie** (*de facto*)[a] *auf* **diese** *Weise* **finden, Selige sind die dortigen Sklaven.**“

ohne (...) a+pt lesbar

39.) 39.)

| pna ak ne | | 2 p pl pr | |
|---|---|---|---|
| τοῦτο | δὲ | γινώσκετε | |
| Dies | aber | wissen sollt ihr | !, |
| | | *er*kennen sollt ihr | |

(unw. kj)

| | |
|---|---|
| ὅτι | εἰ |
| daß, | wenn |
| : | |

| 3 p plpe (unw. kj) | |
|---|---|
| ᾔδει | ὁ |
| gewahrt hätte er | der |
| wahrgenommen hätte er | |

no ma

οἰκο-δεσ-πότης

Wohn*zugehöri*ges-*als zu* Bindendes-Tränkende
Wohn*zugehöri*ges[1]-tränken[3]-Müssende[2]
Haus-Eigentümer

| prp dt | pn dt fe | dt fe | |
|---|---|---|---|
| | ποίᾳ | ὥρᾳ | ὁ |
| *in* | was für einem | Zeitabschnitt | der |
| | was für einer | Jahreszeit | |
| | was für einer | Stunde | |

| no ma | 3 p pr md/ps dp |
|---|---|
| κλέπτης | ἔρχεται |
| *vom* Ruf *her Un*bekannte | *individuell* kommt er |
| Verhülltes *Tuende* | |
| Verdecktes *Tuende* | |
| Stehler | |
| Dieb | |

| 3 p pr md/ps dp (Zustand) | 3 p pr md/ps dp (Vorgang) |
|---|---|
| *zum* Kommen *veranlaß*t ist er | *zum* Kommen *veranlaß*t wird er, |

| [ℵ[1], ℵ[2], A, B, R: (unw. kj) | 3 p a1 kt (unw. kj)] |
|---|---|
| | [ἐγρηγόρησεν] |
| [*so* | (*de facto*) erweckt *bleiben würde* er] |
| | [(*de facto*) wachen *würde* er] |

| [ℵ[2], A, B, R: pk] | [ℵ[1], ℵ[2], A, B, R] | |
|---|---|---|
| [ἂν] | [καὶ] | οὐκ |
| [gleichsam] | [und] | nicht |
| [*in diesem* Fall] | | |

| ℵ[1], ℵ[2], A, R: pk (unw. kj) | 3 p a1 kt (unw. kj) |
|---|---|
| \|ἂν\| | ἀφ-ῆκεν |
| \|gleichsam\| | (*de facto*) weg-lassen *würde* er, |
| \|*in diesem* Fall\| | (*de facto*) *gewähren* lassen[vn] *würde* er |

| ℵ, ℵ[1], ℵ[2], B: if a1 ps kt | [A, R: if a2 ps kt] |
|---|---|
| \|δι-ορυχθῆναι\| | [δι-ορυγῆναι] |
| (*de facto*) durch-graben *zu* werden | |

| prp ak | | ak ma | 3 p gn ma |
|---|---|---|---|
| | τὴν | οἰκίαν | αὐτοῦ |
| *in Bezug auf* | die | Wohn*stätte*, | seiner*seits* |
| | | Wohnung | seine. |

[1]aL, **1. Korrektor Codex Sinaiticus** schreibt (`ohne erstes` „**gleichsam**“):
„*so würde* **er** (*de facto*)[a] **wachen,**
**und er** *würde* (*jetzt*)[a] **gleichsam nicht** *in Bezug auf* **seine** [d] **Wohn***stätte gewähren* **lassen**[vn]**,**“
[1]aL, **2. Korrektor Codex Sinaiticus**, **Codex Alexandrinus** und **Textus Receptus** schreiben:
„*so würde* **er gleichsam** (*de facto*)[a] **wachen,**
**und er** *würde* (*jetzt*)[a] **gleichsam nicht** *in Bezug auf* **seine** [d] **Wohn***stätte gewähren* **lassen**[vn]**,**“
[1]aL, **Codex Vaticanus** schreibt („**gleichsam**“ `fehlt`):
„*so würde* **er gleichsam** (*de facto*)[a] **wachen,**
**und er** *würde* (*jetzt*)[a] **nicht** *in Bezug auf* **seine** [d] **Wohn***stätte gewähren* **lassen**[vn]**,**“

Dies
aber
sollt
ihr
wissen!,
daß,
wenn
der
Hauseigentümer
wahrgenommen
hätte,
*in*
was
für
einer
Stunde
der
Dieb
*individuell*
kommt,
[1]*würde*
[1]er
[1](*jetzt*)[a]
[1]gleichsam
[1]nicht
[1]*in*
[1]*Bezug*
[1]*auf*
[1]seine [d] Wohn*stätte*
[1]*gewähren*
[1]lassen[vn],
(*de facto*)[a]
durchgraben
*zu*
werden.

Mat 25.13
1 Thes 5.2
Mat 24.43

ohne (...) a+pt lesbar

40.) 40.)

siehe Mat 24.44 — 2 p pl no

| | |
|---|---|
| καὶ | ὑμεῖς |
| Auch | ihr |

[A, R] — 2 p pl pr i! md/ps dp

| | |
|---|---|
| [οὖν] | γίνεσθε |
| [daher] | *individuell* **werdet ihr** |
| | **euch entwickelt ihr** *als* |

2 p pl pr i! md/ps dp (Zustand) — 2 p pl pr i! md/ps dp (Vorgang)

| | |
|---|---|
| **werdenge***mach***t seid ihr** | **werdenge***mach***t werdet ihr** |
| *in die* **Entwicklung ge***bracht***t seid ihr** *als* | *in die* **Entwicklung ge***bracht***t werdet ihr** *als* |

aj no ma pl

| | |
|---|---|
| ἕτοιμοι | |
| **Bereite** | **!,** |

*prp dt* — pna dt fe

| | | | |
|---|---|---|---|
| ὅτι | | ᾗ | |
| **da** | *in* | **welcher,** | *da* |

2 p pl pr — dt fe

| | | | |
|---|---|---|---|
| οὐ | δοκεῖτε | | ὥρᾳ |
| **nicht** | **meint ihr** | *es*, | **Zeitabschnitt** |
| | | | **Jahreszeit** |
| | | | **Stunde** |

no ma

| | | |
|---|---|---|
| ὁ | υἱὸς | τοῦ |
| **der** | **Sohn** | **des** |

gn ma — 3 p pr md/ps dp

| | |
|---|---|
| ἀν-θρ-ώπου | ἔρχεται |
| **Hinauf-Gewandt-Eraugenden** | *individuell* **kommt er** |
| **empor-ragend-Augenden** | |
| **Hinauf-Gedrehten** | |
| **Mannes-Auges** | |
| **Antlitz**[2]*-des* **Mannes**[1] | |
| **Angesicht**[2]*-des* **Mannes**[1] | |
| **Menschen** | |

3 p pr md/ps dp (Zustand) — 3 p pr md/ps dp (Vorgang)

| | |
|---|---|
| *zum* **Kommen** *veranlaß***t ist er** | *zum* **Kommen** *veranlaß***t wird er.** |

**Werdet**
**[daher]**
**auch**
**ihr**
*individuell*
**Bereite!,**
**da**
*in*
**welcher**
**Stunde,**
*da*
**ihr**
*es*
**nicht**
**meint,**
**der**
**Sohn**
**des**
**Menschen**
*individuell*
**kommt.**

| | | | |
|---|---|---|---|
| | Der | | |
| | treue | | |
| | treuewürdige | | |
| | vertrauenswürdige | | |
| | glaubwürdige | | |
| | zuverlässige | | |
| | (und | | |
| | üble) | | |
| | Durchnarbte | | |
| | Sklave | | |
| 41.) | | | 41.) |
| 3 p a2 ig | | | ϰ, A, R: |
| εἶπεν | δὲ | | |
| (Jetzt) sagte er | aber | zu | |
| 3 p dt ma | | | no ma |
| αὐτῷ | ὁ | Πέτρος | |
| ihm | der | Felsige | |
| | | Petrus | |
| | : | | |
| vo | vo ma | | |
| | κύριε | | |
| O | Geltender | {allein} | |
| | Herr, | {einzig} | |
| | | {nur} | |
| prp ak | 1 p pl ak | | |
| πρὸς | ἡμᾶς | τὴν | |
| zu | uns | den | |
| | | den | |
| | | die | |
| | | die | |
| | | den | |
| | | | ak fe |
| | παρα-βολὴν | | |
| | Daneben-Wurf | | |
| | unmittelbaren-Entwurf anhand eines grundlegenden lehrhaften Beispiels | | |
| | Darstellung neben einer verhüllten Gegebenheit-an einem indirekt veranschaulichten Entwurf | | |
| | Para-bel | | |
| | Vergleich | | |
| pna ak fe | 2 p pr | | |
| ταύτην | λέγεις | ἢ | |
| diesen | wortest du | oder | |
| diesen | als Worte gebrauchst du | | |
| diese | sagst du | | |
| diese | | | |
| diesen | | | |
| | prp ak | | aj ak ma pl |
| καὶ | πρὸς | πάντας | |
| auch | zu | allen | |
| | ? | | |

Der
treue
(und
üble)
Sklave

[1]Es
[1]sagte
[1]aber
[1](jetzt)[a]
[1]zu
[1]ihm
[1]der
[1]Petrus:
O
Herr,
Gebrauchst
du
{nur}
zu
uns
als
Worte
die
diese
Parabel
oder
auch
zu
allen?

[1]aL,
Codex Vaticanus
und
Papyrus 075
schreiben
(„zu ihm“ fehlt):
„Es
sagte
aber
(jetzt)[a]
der
Petrus:“

Mat 24.45-51

42.) 42.)

| | | |
|---|---|---|
| | ℵ, ℵ², B | 3 p a2 kp |
| \|καὶ\| | εἶπεν | |
| \|Und\| | (*alles überschauend*) **sagte** er | |
| | [A, R] | |
| [δὲ] | ὁ | |
| [aber] | der | |
| | no ma | |
| κύριος | | |
| Geltender | : | |
| **Herr,** | | |
| | pn no ma | |
| τίς | ἄρα | |
| Wer | **demnach** | |
| | ℵ, ℵ², B, R: 3 p pr | [A: 3 p ft md (dp)] |
| \|ἐστὶν\| | [ἔσται] | |
| \|ist er\| | [*individuel*l sein wird er] | |
| | | aj no ma |
| ὁ | πιστὸς | |
| der | **treue** | |
| | treu*ewürd*ige | |
| | *ver*trauen*swürd*ige | |
| | glaub*würd*ige | |
| | zuverlässige | |
| | | ℵ: no ma |
| | \|δ-οῦλος\| | |
| | \|Durch-Narbte\| | |
| | **\|Sklave\|** | |
| | | [ℵ², A, B, R: no ma] |
| | [οἰκο-νόμος] | |
| | [*Hüter des zum* Denken *bestimmten-Wohnortes*] | |
| | [Wohn-Bestimmung*shüter*] | |
| | [Wohn-Gesetz*hüter*] | |
| | [Haushalt*sverwalter*] | |
| | [Öko-nom] | |
| | ℵ, ℵ², A, R | [B] |
| καὶ | [ὁ] | |
| und | [der] | |
| | | aj no ma |
| | φρόνιμος | |
| | **Besonnene** | |
| | *in* ziel*gerichteter* Denk*halt*ung *seiende*, | |
| | Kluge | |

[1]aL, **Codex Alexandrinus** schreibt:
„**Aber der Herr sagte** (*alles überschauend*)[a]:
**Wer wird demnach** *individuel*l **der treue**
**und** *in* ziel*gerichteter* Denk*halt*ung *seiende* **Haushalt***sverwalter* **sein**,“
[1]aL, **Codex Vaticanus** schreibt:
„**Und der Herr sagte** (*alles überschauend*)[a]:
**Wer ist demnach der treue**,
*ja* **der** *in* ziel*gerichteter* Denk*halt*ung *seiende* **Haushalt***sverwalter*,“
[1]aL, **Textus Receptus** schreibt:
„**Aber der Herr sagte** (*alles überschauend*)[a]:
**Wer ist demnach der treue**
**und** *in* ziel*gerichteter* Denk*halt*ung *seiende* **Haushalt***sverwalter*,

[1]Und
[1]der
[1]Herr
[1]sagte
[1](*alles überschauend*)[a]:
[1]Wer
[1]ist
[1]demnach
[1]der
[1]treue
[1]und
[1]*in*
[1]ziel*gerichteter*
[1]Denk*halt*ung
[1]*seiende*
[1]Sklave,

1 Kor 4.2
Heb 3.5
Luk 19.15-19

[1]aL,
**2. Korrektor Codex Sinaiticus**
schreibt:
„**Und**
**der**
**Herr**
**sagte**
(*alles überschauend*)[a]:
**Wer**
**ist**
**demnach**
**der**
**treue**
**und**
*in*
ziel*gerichteter*
Denk*halt*ung
*seiende*
**Haushalt***sverwalter*,“

| | | |
|---|---|---|
| pna ak ma | | |
| ὃν | | |
| welchen | | |
| | | |
| א: 3 p a1 kt | | |
| \|κατ-έστησεν\| | | |
| \|(*de facto*) herab-*be*ständigt er\| | | |
| \|(*de facto*) *von oben* herab-*in den* Stand *einsetz*t er\| | | |
| \|(*de facto*) *all*bezüglich-Stand *gib*t er\| | | |
| | | |
| [א², A, B, R: 3 p ft] | | |
| [κατα-στήσει] | | |
| \|herab-*be*ständigen wird er] | | |
| [*von oben* herab-*in den* Stand *einsetz*en wird er] | | |
| [*all*bezüglich-stand*geb*en wird er] | | |
| | | |
| | no ma | |
| ὁ | κύριος | |
| der | Geltende | |
| | Herr | |
| | | |
| prp gn | | |
| ἐπὶ | τῆς | |
| gebiets | der | |
| | der | |
| | des | |
| | der | |
| | der | |
| | der | |
| | | |
| gn fe | 3 p gn ma | |
| θερ-απείας | αὐτοῦ | |
| Wärme[2]-Ab*leit*ung[1] | seiner, | |
| Genesung | seiner, | |
| Genesung*swerk*s | seines, | |
| Heilbehandlung | seiner, | |
| Dienstleistung | seiner, | |
| Ther-apie | seiner, | |
| | | |
| *prp gn* | gn ne | |
| | τοῦ | |
| *betreffs* | dessen, | |
| | | |
| | | |
| | | |
| *um* | *ihm* | |
| | | |
| א: if a2 kt | [א², A, B, R: if pr] | |
| \|δια-δοῦναι\| | [διδόναι] | |
| \|(*de facto*) durch*weg*-zu *über*geben\| | [*zu* geben] | |
| | | |
| prp dt | | |
| ἐν | | |
| in | *bestimmter* | |
| | | |
| dt ma | א, א², A, R | |
| καιρῷ | \|τὸ\| | |
| Frist | \|das\| | |
| Gelegenheit | | |
| Zeitspanne | | |
| | | |
| [B] | ak ne | |
| | σιτο-μέτριον | |
| [*das*] | Getreide-Maß | |
| | | |
| | | |
| | | |
| ? | | |

[1]aL, Codex Vaticanus schreibt:
„welchen der Herr *von oben* herab gebiets seiner [d] Heilbehandlung *in den* Stand *einsetz*en wird,
*betreffs* dessen,
*um ihm* in *bestimmter* Zeitspanne (*de facto*)[a] *das* Getreidemaß *zu* geben?“

[1]welchen
[1]der
[1]Herr
[1](*de facto*)[a]
[1]*von*
[1]*oben*
[1]herab
[1]gebiets
[1]seiner [d] Heilbehandlung
[1]*in*
[1]*den*
[1]Stand
[1]*einsetz*t,
[1]*betreffs*
[1]dessen,
[1]*um*
[1]*ihm*
[1]in
[1]*bestimmter* — *Mat 24.45*
[1]Zeitspanne
[1](*de facto*)[a]
[1]das
[1]Getreidemaß — 1 Petr 4.10
[1]durch*weg* — Apk 16.15
[1]*zu*
[1]*über*geben?

[1]aL,
2. Korrektor Codex Sinaiticus,
Codex Alexandrinus
und
Textus Receptus
schreiben:
„welchen
der
Herr
*von*
*oben*
herab
gebiets
seiner [d] Heilbehandlung
*in*
*den*
Stand
*einsetz*en
wird,
*betreffs*
dessen,
*um*
*ihm*
in
*bestimmter*
Zeitspanne
(*de facto*)[a]
das
Getreidemaß
*zu*
geben?“

ohne (...) a+pt lesbar

43.) 43.)

aj no ma
μακάριος
Selig
Glückselig
Glücklich

ist er

no ma
ὁ
der

δ-οῦλος
Durch-Narbte
Sklave,

pna no ma
ἐκεῖνος
dortige,
jener

pna ak ma
ὃν
welchen,

pt a2 no ma dp kt
ἐλθὼν
als
(de facto) Gekommenseiender

no ma
ὁ
der

κύριος
Geltende
Herr,

3 p gn ma
αὐτοῦ
seinerseits
sein,

3 p ft
εὑρήσει
finden wird er

ℵ, L, Ψ, P 075: av
οὕτως
auf diese Weise
also
solcherart
so
A, B, R = 2

pt pr ak ma
ποιοῦντα
als
Tuenden.
Machenden
A, B, R = 1

[1]aL, Codex Alexandrinus, Codex Vaticanus und Textus Receptus schreiben (Wortreihenfolge):
„als Tuenden finden wird auf diese Weise."

44.) 44.)

av
ἀ-ληθῶς
Un-verhehlend
Mahlend
Wahrhaft(ig)

1 p pr
λέγω
worte ich
die Worte gebrauche ich
sage ich

2 p pl dt
ὑμῖν
zu
euch

ὅτι
daß
:

prp dt
ἐπὶ
Auf

aj dt ne pl
πᾶσιν
allen

τοῖς
den

pt pr dt ne pl
ὑπ-άρχουσιν
im unteren-Anfang als Ausgangspunkt der Daseinsgrundlage Seienden
im unteren-Beginn als Ausgangspunkt der Daseinsgrundlage Seienden
gehörenden Besitztümern,

3 p gn ma
αὐτοῦ
seinerseits
seinen,

3 p ft
κατα-στήσει
herab-beständigen wird er
jeweils-in den Stand einsetzen wird er
allbezüglich-standgeben wird er

3 p ak ma
αὐτόν
ihn.

Selig
ist
der
dortige
Sklave, Luk 12.37
welchen
sein [d] Herr,
wenn
er
(de facto)[a]
(im weiteren Zeitverlauf)[pt]
gekommen Apk 16.15
ist,
[1]auf
[1]diese
[1]Weise
[1]als
[1]Tuenden
[1]finden
[1]wird.

Wahrhaft{ig},
ich
gebrauche
die
Worte
zu
euch:
Er
wird
ihn
auf
all
den
seinen
gehörenden
Besitztümern
jeweils
in
den
Stand Mat 25.21+23 Luk 19.17 Apk 3.21
einsetzen.

ohne (...) a+pt lesbar

45.) 45.)

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | 3 p a2 kj kt | |
| ἐὰν | δὲ | εἴπῃ | |
| So | aber | (*de facto*) sagen *soll*te er | |
| | no ma | pna no ma | |
| ὁ | δ-οῦλος | ἐκεῖνος | |
| der | Durch-Narbte | dortige, | |
| | Sklave, | jener | |
| prp dt | | dt ma | |
| ἐν | τῇ | κ-αρδίᾳ | |
| in | dem | auch-Beträankten<br>auch-Begossenen<br>auch-Bewässerten<br>auch-Befruchteten | |
| | | Herzen, | |
| ℵ, ℵ², A, B, R: 3 p gn ma | | [P 075: 3 p gn ma] | |
| \|αὐτοῦ\| | | [ἑ-αυτοῦ] | |
| \|seiner*seits*\| | | [seiner-selbst] | |
| \|seinem\| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | : | |
| 3 p pr | | ℵ: 1 p gn | |
| χρονίζει | ὁ | \|μου\| | |
| *Ver*zeitet er | der | \|meiner*seits*\| | |
| *Sich* Zeit *läß*t er | | \|mein*ige*\| | |
| *Sich* zeit*lich verzöger*t er | | | |
| | no ma | [ℵ², A, B, R, P 075: 1 p gn] | |
| κύριος | | [μου] | |
| Geltende | | [meiner*seits*] | |
| Herr, | | [mein,] | |
| if pr md/ps dp | | if pr md/ps dp (Zustand) | |
| ἔρχεσθαι | | | |
| i*ndividuel*l *zu* kommen | | *zum* Kommen *veranlaß*t *zu* sein | |
| if pr md/ps dp (Vorgang) | | | |
| | | καὶ | |
| *zum* Kommen *veranlaß*t *zu* werden, | | und | |
| 3 p a1 kj md kt | | if pr | |
| ἄρξηται | | τύπτειν | |
| (*de facto*) i*ndividuel*l anfangen *soll*te er | | *zu* schlagen | |
| (*de facto*) i*ndividuel*l beginnen *soll*te er | | typ*isch zu meiß*eln<br>*als* Vorbild *zu schlag*en | |
| | ak ma pl | | |
| τοὺς | παῖδας | καὶ | |
| die | *oft* Verletzt*word*enen | und | |
| | Knappen | | |
| | ak fe pl | if pr | |
| τὰς | παιδίσκας | ἐσθίειν | |
| die | *oft* Verletzt*word*enen | *zu* essen, | |
| | Mägde | | |
| | | if pr | |
| τε | καὶ | πίνειν | |
| außerdem | auch | *zu* trinken | |
| | | if pr md/ps | |
| καὶ | | μεθύσκεσθαι | |
| und | | sich *zu be*rauschen | |
| if pr md/ps dp (Zustand) | | if pr md/ps dp (Vorgang) | |
| | | | |
| *be*rauscht *zu* sein | | *be*rauscht *zu* werden, | |

[1]So
[1]aber
[1]der
[1]dortige — *Prd 8.12*
[1]Sklave
[1](*de facto*)[a]
[1]in
[1]seinem [d] Herzen — Codex ℵ: Mat 24.48
[1]sagen
[1]*soll*te:
[1]Der
[1]mein*ige*
[1]Herr
[1]*läß*t
[1]*sich*
[1]Zeit — Mat 25.5, 2 Petr 3.4
[1]individuel*l*
[1]*zu*
[1]kommen,
und
(*de facto*)[a]
individuel*l*
anfangen
*soll*te,
die
Knappen
und
die
Mägde
*zu*
schlagen, — Mat 18.28
*zu*
essen,
außerdem
auch
*zu*
trinken,
und
sich
*zu* — Jes 5.11, Röm 13.13, Luk 21.34
*be*rauschen,

[1]aL, 2. Korrektor Codex Sinaiticus, Codex Alexandrinus, Codex Vaticanus und Textus Receptus schreiben:
„So aber der dortige Sklave (*de facto*)[a] in seinem [d] Herzen sagen *soll*te:
Mein [d] Herr *läß*t *sich* Zeit i*ndividuel*l *zu* kommen,“
[1]aL, Papyrus 075 schreibt:
„So aber der dortige Sklave (*de facto*)[a] in dem Herzen seiner selbst sagen *soll*te:
Mein [d] Herr *läß*t *sich* Zeit i*ndividuel*l *zu* kommen,“

ohne (...) a+pt lesbar

| 46.) | | 46.) |
|---|---|---|
| | | 3 p ft |
| | ἥξει | |
| so | eintreffen wird er | |
| | | no ma |
| ὁ | κύριος | |
| der | Geltende | |
| | Herr | |
| | | gn ma |
| τοῦ | δ-ούλου | |
| des | Durch-Narbten | |
| | Sklaven | |
| pna gn ma | | prp dt |
| ἐκείνου | ἐν | |
| dortigen, | in | |
| jenes | | |
| | | dt fe |
| | ἡμέρᾳ | |
| einem | Tag, | |
| pna dt fe | | |
| ᾗ | οὐ | |
| welchen | nicht | |
| | | 3 p pr |
| προσ-δοκᾷ | | |
| zugeordnet-meint er | | |
| tatsächlich hinsichtlich seiner auf sicheren Annahme beruhenden-Meinung erwartet er | | |
| erhofft er | | |
| vermeintlich annimmt er | | |
| | | prp dt |
| καὶ | ἐν | |
| und | in | |
| | | dt fe |
| | ὥρᾳ | |
| einem | Zeitabschnitt | |
| einer | Jahreszeit | |
| einer | Stunde, | |
| pna dt fe | | |
| ᾗ | οὐ | |
| welchen | nicht | |
| welche | | |
| welche | | |
| 3 p pr | | |
| γινώσκει | καὶ | |
| weiß er | und | |
| kennt er, | | |
| 3 p ft | | prp ak |
| δι-χοτομήσει | | |
| entzwei-schneiden wird er | {in Bezug auf} | |
| 3 p ak ma | | |
| αὐτὸν | καὶ | |
| ihn, | und | |
| | | |
| | τὸ | |
| ihm | das | |
| ak ne | | 3 p gn ma |
| μέρος | αὐτοῦ | |
| Teil, | seinerseits | |
| | sein, | |
| prp gn | | |
| μετὰ | τῶν | |
| mit | den | |
| aj gn ma pl | | 3 p ft |
| ἀ-πίστων | θήσει | |
| Un-Treuen | setzen wird er. | |
| Treu[2]-losen[1] | | |
| keine-Treuebeziehung Habenden | | |
| Un-Zuverlässigen | | |
| Un-Gläubigen | | |

so
wird
der
Herr
des
dortigen
Sklaven
in
einem
Tag
eintreffen,
welchen
er
tatsächlich
nicht
hinsichtlich
seiner
auf
sicheren
Annahme
beruhenden
Meinung
erwartet,
und
in
einer
Stunde,
welche
er
nicht
kennt,
und
er
wird
{in Bezug auf}
ihn
entzweischneiden,
und
er
wird
ihm
sein d Teil
mit
den
Treulosen
setzen.

Mat 24.42
Mar 13.33
Luk 12.40

1 Thes 5.3

ohne (...) a+pt lesbar

| 47.) | | 47.) |
|---|---|---|
| | pna no ma | |
| ἐκεῖνος | δὲ | |
| Dortiger | aber | |
| Jener | | |
| | | no ma |
| ὁ | δ-οῦλος | |
| der | Durch-Narbte | |
| | Sklave | |
| | | pt a2 no ma kt |
| ὁ | γνοὺς | |
| der | (*de facto*) Gewußthabende | |
| | (*de facto*) Gekannthabende | |
| | (*de facto*) Kennenge*lern*thabende | |
| | (*de facto*) *zur* Kennt*nis* Ge*nomm*enhabende | |
| | (*de facto*) *Er*kannthabende | |
| | (*de facto*) *Aner*kannthabende | |
| | | ak ne |
| τὸ | θέλημα | |
| den | Willen | |
| | | gn ma |
| τοῦ | κυρίου | |
| des | Geltenden | |
| | Herrn | |
| א, B: 3 p gn ma | | [A, R: 3 p gn ma] |
| \|αὐτοῦ\| | [ἑ-αυτοῦ] | |
| \|seiner*seits*\| | [seiner-selbst] | |
| \|seines,\| | | |
| | | |
| καὶ | μὴ | |
| und | nich*t* | |
| | | pt a1 no ma kt |
| ἑτοιμάσας | \|ἢ\| | |
| (*de facto*) Bereitethabende | \|oder\| | |
| | | |
| [A, R] | | pt a1 no ma kt |
| [μη-δὲ] | ποιήσας | |
| [nich*t*-aber *auch*] | (*de facto*) Getanhabende | |
| | (*de facto*) Gemachthabende | |
| | | |
| | prp ak | |
| πρὸς | τὸ | |
| zu *hin* | den | |
| | | |
| | ak ne | 3 p gn ma |
| θέλημα | αὐτοῦ | |
| Willen, | seiner*seits* | |
| | seinem, | |
| | | |
| | 3 p ft2 ps | aj ak fe pl |
| δαρήσεται | πολλάς | |
| wird Haut ge*schlag*en worden sein er | viele *Male*. | |
| wird geprügelt worden sein er | | |

Aber
der
dortige
Sklave,
der
den
Willen
[1]seines [d] Herrn
[1](*de facto*)[a]
[1](*im Verlauf dieses Zeitlaufs*)[pt]
[1]gekannt — Joh 9.41, Jak 4.17, 2 Petr 2.21
[1]hat
[1]und
[1](*de facto*)[a]
[1](*im Verlauf dieses Zeitlaufs*)[pt]
[1]nicht*s*
[1]zu
[1]seinem [d] Willen — Mat 21.30
[1]*hin*
[1]bereitet
[1]hat
[1]oder
[1](*de facto*)[a]
[1](*im Verlauf dieses Zeitlaufs*)[pt]
[1]getan
[1]hat,
wird
viele
*Male*
geprügelt — 5 Mos 25.2+3
worden
sein.

[1]aL, **Codex Alexandrinus** und **Textus Receptus** schreiben:
„**der den Willen des Herrn seiner selbst** (*de facto*)[a] (*im Verlauf dieses Zeitlaufs*)[pt] **gekannt hat und** (*de facto*)[a] (*im Verlauf dieses Zeitlaufs*)[pt] **nicht*s* zu seinem** [d] **Willen** *hin* **bereitet hat, aber** *auch* **nicht** (*de facto*)[a] (*im Verlauf dieses Zeitlaufs*)[pt] **getan hat,**“

ohne (...) a+pt lesbar

48.) 48.)

| | |
|---|---|
| ὁ | δὲ |
| Der | aber |
| | |
| | μὴ |
| *ihn* | nich*t* |
| | pt a2 no ma kt |
| γνούς | |
| (*de facto*) Gewußthabende | |
| (*de facto*) Gekannthabende, | |
| (*de facto*) Kennenge*lernt*habende | |
| (*de facto*) *zur* Kennt*nis* Ge*nomm*enhabende | |
| (*de facto*) *Er*kannthabende | |
| (*de facto*) *Aner*kannthabende | |
| pt a1 no ma kt | |
| ποιήσας | δὲ |
| (*de facto*) Getanhabende | aber |
| (*de facto*) Gemachthabende | |
| | aj ak ne pl |
| ἄξια | |
| *aufgrund der Un*be*währ*t*heit sich zu* führ*en als angemessener Lohn Erach*tete | |
| Würdige | |
| | gn fe pl |
| | πληγῶν |
| *der* | Plagen, |
| | 3 p ft2 ps |
| δαρήσεται | |
| wird *auf die* Haut ge*schlag*en worden sein er | |
| wird geprügelt worden sein er | |
| aj ak fe pl | aj dt ma |
| ὀλίγας | παντὶ |
| wenige *Male*. | All*jed*em |
| | Jedem |
| [κ¹, A, B, R] | pna dt ma |
| [δὲ] | ᾧ |
| [aber,] | welchem |
| 3 p a1 ps kt | aj ak ne |
| ἐδόθη | πολύ |
| (*de facto*) gegeben wurde es | viel, |
| [κ¹, A, B, R: aj no/ak ne] | 3 p ft ps |
| [πολύ] | ζητηθήσεται |
| [viel] | wird gesucht werden es |
| | wird *unter*sucht werden es |
| prp gn | 3 p gn ma |
| παρ’ | αὐτοῦ |
| seits | seiner |
| | pna dt ma |
| καὶ | ᾧ |
| und | welchem |
| | 3 p pl a1 md kt |
| παρ-έθεντο | |
| (*de facto*) i*ndividuel*l neben-*ge*setzt *haben* sie | |
| (*de facto*) i*ndividuel*l unmittelbar-*ge*setzt *haben* sie | |
| (*de facto*) i*ndividuel*l anbefohlen *haben* sie | |
| aj no/ak ne | aj ak ne kp |
| πολύ | περισσότερον |
| viel, | um *und* um mehr |
| | mehr *als* über *das* Maß *hinausgehend* |
| | 3 p pl ft |
| αἰτήσουσιν | |
| ursäch*lich ersuch*en werden sie | |
| erbitten werden sie | |
| fordern werden sie | |
| *prp ak* | 3 p ak ma |
| | αὐτόν |
| *in Bezug auf* | ihn. |

| | |
|---|---|
| Aber | |
| der*jenige*, | |
| *der* | |
| *ihn* | |
| (*de facto*)[a] | 3 Mos 5.17<br>1 Tim 1.12+13 |
| (*im Verlauf dieses Zeitlaufs*)[pt] | |
| nich*t* | |
| gekannt | |
| hat, | |
| aber | |
| (*de facto*)[a] | |
| (*im Verlauf dieses Zeitlaufs*)[pt] | |
| *Dinge* | |
| getan | |
| hat, | |
| *die* | |
| *der* | |
| Plagen | |
| Würdige | |
| *sind*, | |
| wird | |
| wenige | |
| *Male* | |
| geprügelt | |
| worden | |
| sein. | |
| All*jed*em | |
| [aber], | |
| welchem | |
| (*de facto*)[a] | |
| viel | |
| gegeben | |
| wurde, | |
| wird | |
| seinerseits | |
| [viel] | |
| gesucht | Jak 3.1 |
| werden. | |
| Und | |
| welchem | |
| sie | |
| (*de facto*)[a] | |
| i*ndividuel*l | |
| viel | |
| anbefohlen | 2 Petr 2.21 |
| *haben*, | |
| mehr | |
| *als* | |
| über | |
| *das* | |
| Maß | |
| *hinausgehend* | |
| werden | |
| sie | 2 Kor 5.10 |
| *in Bezug auf* | |
| ihn | |
| fordern. | |

| | | |
|---|---|---|
| **Der** | | **Der** |
| **gesetzte** *Be***kümmerung** | | **Grund** |
| **Grund** | | **des** |
| **des** | | **Kommens** |
| **Kommens** | | **Jesu** |
| **Jesu** | | |
| 49.) | 49.) | *Um* |
| | ak ne | (*de facto*)[a] |
| | πῦρ | **Feuer** |
| *Um* | **Feuer** | **auf** |
| 1 p a2 dp ig | if a2 ig | **die** |
| ἦλθον | βαλεῖν | **Erde** |
| (*jetzt*) **gekommen** *bin* **ich,** | (*de facto*) *zu* **werfen** | *zu* |
| | (*de facto*) *zu* **treiben** | **werfen** |
| | (*de facto*) *auszus***chütten** | *bin* |
| prp ak | | **ich** |
| ἐπὶ | τὴν | (*jetzt*)[a] |
| **auf** | **das** | **gekommen,** |
| | **die** | **und** |
| ak fe | | **was** |
| γῆν | καὶ | *würd***e** |
| **Erdland** | **und** | **ich** |
| **Erde,** | | *anderes* |
| pn ak ne | | **wollen,** |
| τί | | *als* |
| **was** | *anderes* | **wenn** |
| 1 p pr / 1 p pr kj | | **es** |
| θέλω | | (*de facto*)[a] |
| **will ich / wollen** *würd***e ich,** | *als* | **schon** |
| (unw. kj) | | **angezündet** |
| εἰ | ἤδη | **worden** |
| **wenn** | **schon** | *wäre***!** |
| | **bereits** | |
| | 3 p a1 ps kt (unw. kj) | |
| | ἀν-ήφθη | |
| | (*de facto*) **hinauf-gezündet worden** *wäre* **es** | |
| | (*de facto*) **angezündet worden** *wäre* **es** | |
| | (*de facto*) **oben-berührt worden** *wäre* **es** | |
| | (*de facto*) *in* **Berühr***ung* **ge***komm***en worden** *wäre* **es** | |
| | | |
| | | |
| **!** | | |

Mat 10.34-38

ohne (...) [a+pt] lesbar

| 50.) | | 50.) | |
|---|---|---|---|
| prp ak | | | Aber |
| *Hinein in* | | *ein* | [h]*in* |
| [h]*In* | | *eine* | *eine* |
| ak ne | | | |
| βάπτισμα | | δὲ | **Taufe** |
| *Hinein***tauchen** | | **aber** | **habe** |
| **Taufe** | | | **ich** |
| 1 p pr | | if a1 ps ig | (*jetzt*)[a] |
| ἔχω | | βαπτισθῆναι | **getauft** |
| **habe ich** | | (*jetzt*) *unter***getaucht** *zu* **werden** | *zu* |
| | | (*jetzt*) *hinein***getaucht** *zu* **werden** | **werden,** |
| | | (*jetzt*) **getauft** *zu* **werden** | **und** |
| καὶ | | πῶς | **wie** |
| **und** | | **wie** | **bin** |
| 1 p pr md/ps | | | **ich** |
| συν-έχομαι | | | *in* |
| **i***ndividuel***l** *in diesem* **Zusammen***hang-große Last* **habe ich** | | | *diesem* |
| **mich zusammen-drücken** *lass***e ich** | | | **Zusammen***hang* |
| **i***ndividuel***l** *in diesem* **Zusammen***hang-unter* **Druck** *steh***e ich** | | | *wegen* |
| **mich** *in diesem* **Zusammen***hang-in* **Reichweite** *befind***e ich** | | | *des* |
| 1 p pr md/ps (Zustand) | | | *großen* |
| *in diesem* **Zusammen***hang-wegen des großen Last***habens be***drängt* **bin ich** | | | *Last***habens** |
| **zusammen-gedrückt bin ich** | | | **be***drängt***,** |
| *in diesem* **Zusammen***hang-wegen des unter* **Druck***stehens* **be***drängt* **bin ich** | | | **bis** |
| *in diesem* **Zusammen***hang-wegen des sich in* **Reichweite** *Befind***ens be***drängt* **bin ich** | | | [w]**daß** |
| 1 p pr md/ps (Vorgang) | | | **irgend** |
| *in diesem* **Zusammen***hang-wegen des großen Last***habens be***drängt* **werde ich** | | | **sie** |
| **zusammen-gedrückt werde ich** | | | (*de facto*)[a] |
| *in diesem* **Zusammen***hang-wegen des unter* **Druck***stehens* **be***drängt* **werde ich** | | | **[zusammen]** |
| *in diesem* **Zusammen***hang-wegen des sich in* **Reichweite** *Befind***ens be***drängt* **werde ich** | | | **vollendigt** |
| pn gn ne | | | **werden** |
| ἕως | | ὅ-του | *könn***te.** |
| **bis** | | **welches-irgend** | |
| | | [w]**daß-irgend** | |
| κ, A, B, R: 3 p a1 kj ps kt | | | |
| \|τελεσθῇ\| | | | |
| \|(*de facto*) **vollendigt werden** *könn***te** / *würd***e sie**\| | | | |
| \|(*de facto*) *zum* **voll***en* **End***e* **ge***brach***t werden** *könn***te** / *würd***e sie**\| | | | |
| \|(*de facto*) **verwirklicht werden** *könn***te** / *würd***e sie**\| | | | |
| \|(*de facto*) **gezollt werden** *könn***te** / *würd***e sie**\| | | | |
| [κ²: 3 p a1 ps kj kt] | | | |
| [συν-τελεσθῇ] | | | |
| [(*de facto*) **zusammen-vollendigt werden** *könn***te** / *würd***e sie**] | | | |
| [(*de facto*) **zusammen-***zum* **voll***en* **End***e* **ge***brach***t werden** *könn***te** / *würd***e sie**] | | | |
| [(*de facto*) *ins***gesamt-verwirklicht werden** *könn***te** / *würd***e sie**] | | | |
| [(*de facto*) *das* **Gesamt-Ziel** *erreich***t werden** *könn***te** / *würd***e sie**] | | | |

Mat 20.18
Mar 10.33

Mat 20.22
Mar 10.38+39

(Mat 20.17)
(Mar 10.32)
Luk 18.31

ohne (...) [a+pt] lesbar

| 51.) | | 51.) |
|---|---|---|
| | | 2 p pl pr |
| | δοκεῖτε | |
| | **Meint ihr,** | |
| | | |
| | | |
| ὅτι | | |
| **daß** | *um* | |
| | | |
| | | ak fe |
| | εἰρήνην | |
| *die* | **Aneinanderknüpfung** | |
| *den* | **Frieden** | |
| *die* | **Friedensgöttin** | |
| *die* | **Eirene** | |
| | | |
| | | 1 p a2 md dp ig |
| | παρ-εγενόμην | |
| | (*jetzt*) *individuell* **herbei**-*zum Ort des* **Werdens** **ge**kom**men** *bin* **ich** | |
| | (*jetzt*) *individuell* **herbei**-*zum Ort des* **Geschehens** **ge**kom**men** *bin* **ich** | |
| | | |
| if a2 kt | | prp dt |
| δοῦναι | ἐν | |
| (*de facto*) *zu* **geben** | **in** | |
| | **in**nerhalb *von* | |
| | | |
| | | dt fe |
| τῇ | γῇ | |
| **dem** | **Erdland** | |
| **der** | **Erde** | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | **?** | |
| | | |
| | | |
| οὐχί | | |
| **Nicht ist**'*s* | *so*, | |
| | | |
| 1 p pr | | |
| λέγω | | |
| **worte ich** | - | |
| *die* **Wort**e *gebrauch*e **ich** | *zu* | |
| **sage ich** | - | |
| | | |
| 2 p pl dt | | |
| ὑμῖν | | |
| **euch** | *:* | |
| | | |
| | | |
| ἀλλ' | | |
| *Etwas* **anderes** *ist bestimmt* | *nichts* | |
| **Sondern** | | |
| | | |
| | | ak ma |
| ἢ | δια-μερισμόν | |
| **als** | **Durch-Teilung** | |
| | **durch** *Trennung bewirkte*-**Teilung.** | |
| | | |
| | | |
| | *:* | |

**Meint**
**ihr,**
**daß**
**ich**
(*de facto*)[a]
*um*
**in**nerhalb
*von*
**der**
**Erde**
*die*
**Aneinanderknüpfung**
*zu*
**geben,**
(*jetzt*)[a]
**individuell**
**herbei**
*zum*
*Ort*
*des*
**Geschehens**
**ge**kom**men**
*bin***?**
**Nicht**
**ist**'*s*
*so*,
*gebrauch***e**
**ich**
*die*
**Wort**e
*zu*
**euch***:*
**Sondern**
*nichts*
**als**
**durch**
*Trennung*
*bewirkte*
**Teilung***:*

Joh 7.12
Joh 9.16
Apg 14.2+4

| 52.) | | 52.) | |
|---|---|---|---|
| | [ℵ1, A, B, R: 3 p pl ft md (dp) | | |
| [ἔσονται | | γὰρ | [Denn |
| [Individuell sein werden sie | | denn | es |
| | | | werden |
| | prp gn | gn ne | individuell |
| ἀπὸ | | τοῦ | von |
| von an | | dem | dem |
| | | | Nun |
| | | no ma pl | an |
| νῦν | | πέντε | fünf |
| Nun | | fünfe | in |
| | | | einer |
| | prp dt | [ℵ1, B: nu dt ma | Wohnstätte |
| ἐν] | | [ἑνὶ | als |
| in] | | [einer | solche |
| | | | sein, |
| | dt ma] | [A, R: dt ma | die |
| οἴκῳ] | | [οἴκῳ | (im weiteren Zeitverlauf)pt |
| Wohnstätte] | | [Wohnstätte, | durch |
| [Wohnung] | | [Wohnung] | Trennung |
| | | | geteilt |
| | nu dt ma] | [ℵ1, A, B, R: | worden |
| ἑνὶ] | | | sind:] |
| einer,] | | [als | Drei |
| | | | aufgrund |
| | | pt pe no ma pl md/ps | von |
| | διαμεμερισμένοι] | | zweien |
| | sich Durch-Teilen/assenhabende | | und |
| | [sich durch Trennung-Teilen/assenhabende | | zwei |
| | | | aufgrund |
| | | pt pe no ma pl md/ps (Vorgang + Zustand)] | von |
| | | | dreien. |
| | Durch-Geteiltworden(seiend)e] | | |
| | durch Trennung-Geteiltworden(seiend)e,] | | |
| | | | |
| nu no ma pl | prp dt | nu dt ma pl | |
| τρεῖς | ἐπὶ | δυσὶν | |
| Dreie | aufgrund von | zweien | |
| | | | |
| | | nu no ma pl | |
| καὶ | | δύο | |
| und | | zweie | |
| | | | |
| | prp dt | nu dt ma pl | |
| ἐπὶ | | τρισίν | |
| aufgrund von | | dreien. | |

53.) 53.)

3 p pl ft ps
δια-μερισθήσονται
Werden durch-geteilt werden sie
Werden durch *Trennung*-geteilt werden sie

:

no ma | ℵ, B: prp dt
πατὴρ | |ἐπὶ|
der | Vater | aufgrund von

[A, R: aS] | dt ma
[ἐφ᾽] | υἱῷ
dem | Sohn

no ma
καὶ | υἱὸς
und | der | Sohn

prp dt | dt ma
ἐπὶ | πατρί
aufgrund von | dem | Vater

ℵ | no fe
καὶ | μήτηρ
und | die | Mutter

ℵ, ℵ², B: prp ak | ak fe
|ἐπὶ | θυγατέρα|
|auf zu | die | Tochter|

[A, R: prp dt | dt fe]
[ἐπὶ | θυγατρὶ]
[aufgrund von | der | Tochter]

no f
καὶ | θυγάτηρ
und | die | Tochter

ℵ, ℵ², B: prp ak | ℵ, ℵ² | [B]
|ἐπὶ | [τὴν]
|auf zu | |die| | [die]

ℵ, ℵ², B: ak fe | [A, R: prp dt
μητέρα| | [ἐπὶ
Mutter,| | [aufgrund von | der

dt fe] | no fe
μητρί] | πενθερὰ
Mutter] | die | Schwiegermutter

prp ak | ak fe
ἐπὶ | τὴν | νύμφην
auf zu | die | Sohnesbraut

[ℵ², A, B, R: 3 p gn fe]
[αὐτῆς] | καὶ
[ihrerseits] | und
[ihre,]

no fe | prp ak
νύμφη | ἐπὶ | τὴν
die | Braut | auf zu | die
Sohnesbraut
Nymphe

ak fe | [ℵ², A, R: 3 p gn fe]
πενθεράν | [αὐτῆς]
Schwiegermutter | [ihrerseits]
[ihre].

[1]aL, **2. Korrektor Codex Sinaiticus** schreibt:
„**und** *der* **Sohn auf***grund von dem* **Vater,**
*die* **Mutter auf** *die* **Tochter** *zu*
**und** *die* **Tochter auf** *die* **Mutter** *zu*,
*die* **Schwieger***mutt***er auf ihre** [d] *Sohnes***braut** *zu*
**und die** *Sohnes***braut auf ihre** [d] **Schwieger***mutt***er** *zu*.“
[1]aL, **Codex Alexandrinus** und **Textus Receptus** schreiben:
„**und** *der* **Sohn auf***grund von dem* **Vater,**
*die* **Mutter auf***grund von der* **Tochter**
**und** *die* **Tochter auf***grund von der* **Mutter,**
*die* **Schwieger***mutt***er auf ihre** [d] *Sohnes***braut** *zu*
**und die** *Sohnes***braut auf ihre** [d] **Schwieger***mutt***er** *zu*.“
[1]aL, **Codex Vaticanus** schreibt:
„**und** *der* **Sohn auf***grund von dem* **Vater,**
*die* **Mutter auf** *die* **Tochter** *zu*
**und** *die* **Tochter auf die Mutter** *zu*,
*die* **Schwieger***mutt***er auf ihre** [d] *Sohnes***braut** *zu*
**und die** *Sohnes***braut auf die Schwieger***mutt***er** *zu*.“

*Es*
**werden**
**durch**
*Trennung*
**geteilt**
**werden***:*
*Der*
**Vater**
**auf***grund*
*vom*
**Sohn**
[1]**und**
[1]*der*
[1]**Sohn**
[1]**auf***grund*
[1]*vom*
[1]**Vater**
[1]**und**
[1]*die*
[1]**Mutter**
[1]**auf**
[1]*die*
[1]**Tochter**
[1]*zu*
[1]**und**
[1]*die*
[1]**Tochter**
[1]**auf**
[1]*die*
[1]**Mutter**
[1]*zu*,
[1]*die*
[1]**Schwieger***mutt***er**
[1]**auf**
[1]**die**
[1]*Sohnes***braut**
[1]*zu*
[1]**und**
[1]**die**
[1]*Sohnes***braut**
[1]**auf**
[1]**die**
[1]**Schwieger***mutt***er**
[1]*zu*.

Mi 7.6
Mat 10.21

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | *Untersuchen zur Meinungsbildung* | |
| Das | | *Untersuchen auf Bewährtheit* | Das |
| | | Prüfen | Prüfen |
| | | Gelegenheit | der |
| der | | Frist | Frist |
| | | Zeitspanne | |
| 54.) | | | 54.) |
| 3 p ipe | | | |
| ἔλεγεν | δὲ | καὶ | Er |
| Wortete er | aber | auch | aber |
| *Die* Worte *gebrauchte* er | | | auch |
| Sagte er | | | *gebrauchte* |
| | | | *die* |
| dt ma pl | | | |
| | τοῖς | ὄχλοις | Worte |
| *zu* | den | Belästigenden | *zu* |
| | | Mengen | den |
| | | *Volksmengen* | *Volksmengen:* |
| 2 p pl a2 kj kt | | | |
| ὅτ-αν | | ἴδητε | [1]Wann |
| Wann-gleichsam | | (*de facto*) gewahren *soll*tet ihr | [1]gleichsam |
| Wenn-*der* Fall *eintritt*, *daß* | | (*de facto*) wahrnehmen *soll*tet ihr | [1]ihr |
| | | | [1](*de facto*)[a] |
| ⲛ, A, B | [R] | ak fe | ⲛ, A, B | [1]*eine* |
| | [τὴν] | νεφέλην | | [1]aufgehende |
| \|*eine*\| | [die] | *Um*nachtung | \|*eine*\| | [1]Wolke |
| | | Wolke, | | [1]gebiets |
| | [R] | | pt pr ak fe | [1]*der* |
| | | ἀνα-τέλλουσαν | | [1]west*lichen* |
| [*die*] | | hinauf-*zum* Vollendig*ungsort geh*ende | | [1]*Orte* |
| | | hinauf-ziel*nehm*ende | | wahrnehmen |
| | | aufgehende | | [1]*soll*tet, |
| ⲛ, B: prp gn | | gn fe pl | | sagt |
| \|ἐπὶ | | δυσμῶν\| | | ihr |
| \|gebiets | *der* | Schlupf*orte der Sonne*\| | | sofort: |
| | | west*lichen Orte*\| | | *Ein* |
| | | \|*Sonnen*untergänge\| | | Regenschauer |
| [A, R: prp gn | | gn fe pl] | | kommt |
| [ἐπὶ | | δυσμῶν] | | *individuell*, |
| [von | *den* | Schlupf*orten der Sonne*] | | und |
| | | [west*lichen Orte*] | | es |
| | | [*Sonnen*untergängen] | | geschieht |
| av | | 2 p pl pr | | so |
| εὐ-θέως | | λέγετε | | *individuell*. |
| *für das* Wohl-gesetzt | | wortet ihr | | |
| gerade*wegs* | | *die* Worte *gebrauch*t ihr | | |
| sofort | | sagt ihr | | |
| | | | | |
| ὅτι | | | | |
| daß | | *ein* | | |
| : | | | | |
| no ma | | | | |
| ὄμ-βρος | | (ὄμβ-ρος) | | |
| gleich*artig-starker* Regen | | (gleich*artig-starker Wasser*fluß) | | |
| Regenschauer | | (Regenschauer) | | |
| 3 p pr md/ps dp | | 3 p pr md/ps dp (Zustand) | | |
| ἔρχεται | | | | |
| *individuell* kommt er | | *zum* Kommen *veranlaß*t ist er | | |
| 3 p pr md/ps dp (Vorgang) | | | | |
| *zum* Kommen *veranlaß*t wird er | | !, | | |
| | | | | |
| καὶ | | | | |
| und | | | | |
| 3 p pr md/ps dp | | 3 p pr md/ps dp (Zustand) | | |
| γίνεται | | | | |
| *individuell* wird es | | *zum* Werden ge*brach*t ist es | | |
| *individuell* geschieht es | | *zum* Geschehen ge*brach*t ist es | | |
| sich entwickelt es | | *zum* Entwickeln ge*brach*t ist es | | |
| 3 p pr md/ps dp (Vorgang) | | | av | |
| | | | οὕτως | |
| *zum* Werden ge*brach*t wird es | | | *auf diese Weise* | |
| *zum* Geschehen ge*brach*t wird es | | | also | |
| *zum* Entwickeln ge*brach*t wird es | | | *solcherart* | |
| | | | so. | |

1 Kön 18.44

[1]aL, **Textus Receptus** schreibt:
„Wann gleichsam ihr (*de facto*)[a] die aufgehende Wolke
von *den* west*lichen Orten* wahrnehmen *soll*tet,“

[1]aL,
**Codex Alexandrinus**
schreibt:
„Wann
gleichsam
ihr
(*de facto*)[a]
*eine*
aufgehende
Wolke
von
*den*
west*lichen*
*Orten*
wahrnehmen
*soll*tet,“

55.) 55.)

| | |
|---|---|
| καὶ | ὅτ-αν |
| Und | wann-gleichsam |
| | wenn-der Fall eintritt, daß |
| | ak ma |
| | νότον |
| den | Anfeuchtenden |
| | Südwind, |
| | pt pr ak ma |
| | πνέοντα |
| den | Geistenden |
| | Wehenden, |
| ℵ, ℵ¹, ℵ², A, B, R: 2 p pl a2 kj kt | [P 045: 2 p pl a2 kj kt] |
| | [ἴδητε] |
| \|(de facto) gewahren solltet ihr\| | [(de facto) gewahren solltet ihr] |
| \|(de facto) wahrnehmen solltet ihr\| | [(de facto) wahrnehmen solltet ihr], |
| | 2 p pl pr |
| λέγετε | |
| wortet ihr | |
| die Worte gebraucht ihr | |
| sagt ihr | |
| ℵ, ℵ¹ | [ℵ², A, B, R] |
| | [ὅτι] |
| \|:\| | [daß] |
| | [:] |
| no ma | ℵ: 3 p pr md/ps dp |
| καύσων | [ἔρχεται\| |
| brennende Hitze | \|individuell kommt er |
| Glutiges | |
| Gluthitze | |
| 3 p pr md/ps dp (Zustand) | 3 p pr md/ps dp (Vorgang) |
| zum Kommen veranlaßt ist er | zum Kommen veranlaßt wird er\| |
| [ℵ¹, A, B, R: 3 p ft md (dp)] | |
| [ἔσται] | |
| [individuell sein wird es] | !, |
| καὶ | |
| und | |
| 3 p pr md/ps dp | 3 p pr md/ps dp (Zustand) |
| γίνεται | |
| individuell wird es | zum Werden gebracht ist es |
| individuell geschieht es | zum Geschehen gebracht ist es |
| sich entwickelt es | zum Entwickeln gebracht ist es |
| 3 p pr md/ps dp (Vorgang) | av |
| | οὕτως |
| zum Werden gebracht wird es | auf diese Weise |
| zum Geschehen gebracht wird es | also |
| zum Entwickeln gebracht wird es | solcherart |
| | so. |

[1]aL, 2. Korrektor Codex Sinaiticus, Codex Alexandrinus, Codex Vaticanus und Textus Receptus schreiben:
„sagt ihr:
Es wird individuell Gluthitze sein!,“

Und*
wann*
gleichsam*
ihr*
(de facto)[a]*
den*
wehenden*
Südwind*
wahrnehmen*
solltet*,
[1]sagt
[1]ihr:
[1]Es
[1]wird
[1]individuell
[1]Gluthitze
[1]kommen!,
und
es
geschieht
so
individuell.

[1]aL,
1. Korrektor Codex Sinaiticus
schreibt:
„sagt
ihr:
Es
wird
individuell
Gluthitze
sein!,“

ähnlich in Mat 16.2+3 Codex Ephraemi Textus Receptus

*Hinweis: Struktureller Textaufbau wie Vers 54 im ak

Hi 37.17

56.) 56.)

*Ihr*

no ma pl

ὑπο-κριταὶ

**unter***halb einer versteckten Maske-Be***urteiler**
**unter** *dem nach außen Dargestellten-ein anderes persönliches* **Urteil** *Verberg***enden**
**unter***halb einer versteckten Maske-***Richtenden**
**unter** *dem nach außen Dargestellten-anders* **Richtenden**
**Heuchler**
**Schauspieler**

**!,**

ak ne

| τὸ | πρόσ-ωπον |
|---|---|
| **das** | **Zu-Augende**<br>**Zu***geordnete-den* **Aug***en*<br>**zu** *jemand Richten***de-***das die* **Aug***en*<br>**Angesicht** |

ℵ, A, B: gn fe

| τῆς | γῆς | καὶ |
|---|---|---|
| **des** | **Erdlands** | **und** |
| **der** | **Erde** | |
| ℵ², R, P 075 = 4 | ℵ², R, P 075 = 5 | ℵ², R, P 075 = 3 |

gn ma 2 p pl def pe

| τοῦ | οὐρ-ανοῦ | οἴδατε |
|---|---|---|
| **des** | **sichtbar-Oberen** | **gewahrt ihr** |
| | **Himmels** | **wahrnehmt ihr** |
| ℵ², R, P 075 = 1 | ℵ², R, P 075 = 2 | |

if pr

| δοκιμάζειν | τὸν |
|---|---|
| *zur* **Mein***ungsbildung zu untersuch***en**<br>*auf* **Bewähr***theit zu untersuch***en**<br>*zu* **prüfen,** | **die** |

ℵ, ℵ², A, R ak ma [B, P 075]

| |δὲ| | καιρὸν | [δὲ] |
|---|---|---|
| **\|aber\|** | **Frist** | **[aber]** |
| | **Gelegenheit** | |
| | **Zeitspanne** | |

pna ak ma

| τοῦτον | πῶς | |
|---|---|---|
| **diese,** | **wie***so* | *es* |

ℵ, ℵ², B: 2 p pl def pe

| |οὐκ | οἴδατε |
|---|---|---|
| **\|nicht** | | **gewahrt ihr** |
| | | **\|wahrnehmt ihr\|** |

if pr

| | δοκιμάζειν\| |
|---|---|
| *sie* | *zur* **Mein***ungsbildung zu untersuch***en\|**<br>**\|***auf* **Bewähr***theit zu untersuch***en\|**<br>**\|***zu* **prüfen\|** |

[A, R: 2 p pl pr]

| [οὐ | δοκιμάζετε] |
|---|---|
| **[nicht** | *zur* **Mein***ungsbildung untersuch***t ihr]**<br>**[***auf* **Bewähr***theit untersuch***t ihr]**<br>**[prüft ihr]** |

**?**

[1]aL, **Codex Alexandrinus** schreibt:
„**das Angesicht der Erde und des Himmels nehmt ihr wahr** *zu* **prüfen,**
„**aber die diese Frist, wie***so* **prüft ihr** *sie* **nicht?**“
[1]aL, **Codex Vaticanus** schreibt (`Wortreihenfolge`):
„**das Angesicht der Erde und des Himmels nehmt ihr wahr** *zu* **prüfen,**
**die diese Frist aber, wie***so* **nehmt ihr** *es* **nicht wahr,** *sie zu* **prüfen?**“
[1]aL, **Textus Receptus** schreibt (`auch Wortreihenfolge`):
„**das Angesicht des Himmels und der Erde nehmt ihr wahr** *zu* **prüfen,**
**aber die diese Frist, wie***so* **prüft ihr** *sie* **nicht?**“
[1]aL, **Papyrus 075** schreibt (`Wortreihenfolge`):
„**das Angesicht des Himmels und der Erde nehmt ihr wahr** *zu* **prüfen,**
**die diese Frist aber, wie***so* **nehmt ihr** *es* **nicht wahr,** *sie zu* **prüfen?**“

*Ihr*
**Heuchler!,** Mat 23.29
[1]**das**
[1]**Angesicht**
[1]**der** Mat 24.32
[1]**Erde** Mar 13.28
[1]**und** Luk 21.30+31
[1]**des**
[1]**Himmels**
[1]**nehmt**
[1]**ihr**
[1]**wahr**
[1]*zu*
[1]**prüfen,**
[1]**aber**
[1]**die**
[1]**diese**
[1]**Frist,**
[1]**wie***so*
[1]**nehmt**
[1]**ihr**
[1]*es*
[1]**nicht**
[1]**wahr,**
[1]*sie*
[1]*zu*
[1]**prüfen?**

[1]aL,
**2. Korrektor Codex Sinaiticus**
schreibt:
„**das**
**Angesicht**
**des**
**Himmels**
**und**
**der**
**Erde**
**nehmt**
**ihr**
**wahr**
*zu*
**prüfen,**
**aber**
**die**
**diese**
**Frist,**
**wie***so*
**nehmt**
**ihr**
*es*
**nicht**
**wahr,**
*sie*
*zu*
**prüfen?**“

| Warnung | in Bezug auf | den | Rechtsstreit |
|---|---|---|---|
| 57.) | | | 57.) |
| | pn ak ne | | |
| τί | | | |
| Was | | ist es | |
| | | | |
| | | | |
| δὲ | | | |
| aber, | | daß | |
| | | | prp gn |
| καὶ | | ἀφ’ | |
| auch | | von | |
| | | von aus | |
| | | | |
| | 2 p pl gn ma | | |
| ἑ-αυτῶν | | οὐ | |
| euer-selbst | | nicht | |
| euch-selbst | | | |
| | | | |
| | 2 p pl pr | | |
| κρίνετε | | τὸ | |
| beurteilt ihr | | das | |
| richtet ihr | | | |
| für richtig haltet ihr | | | |
| | | | |
| | aj ak ne | | |
| δί-καιον | | | |
| durchweg-Gebrannte | | ? | |
| Aufzeigende | | | |
| Gerechte | | | |
| Rechte | | | |
| Rechtgemäße | | | |

Warnung
in
Bezug
auf
den
Rechtsstreit

Mat 5.25+26

Was
ist
es
aber,
daß
ihr
auch
von
euch
selbst
aus
nicht
das
Aufzeigende
für
richtig
haltet?

| 58.) | | 58.) | |
|---|---|---|---|
| ὡς | γὰρ | | Denn |
| Wie | denn | | *so*wie |
| *So*wie | | | du |
| | | 2 p pr | mit |
| | ὑπ-άγεις | | deinem [d] Rechtsgegner |
| | *dich nach* **unten-führst du** | | auf |
| | *dich dar*unter-führst du | | *einen* |
| | *dich nach* **unten-begibst du** | | Fürsten |
| | *dich* **unter***halb*-begibst du | | *zu* |
| | **weggehst du** | | weggehst, |
| | prp gn | | gib |
| μετὰ | τοῦ | | *ihm* |
| mit | dem | | (*de facto*)[a] |
| | | gn ma | *noch* |
| | ἀντι-δί-κου | | in |
| | **anstatt-***des* **durch***weg*-**Gebrannten** *Auftretend*en | | dem |
| | *sich als* **Gegner-***Auf***zeigenden** | | Weg |
| | **Gegner-***des* **Rechts** | | Erarbeites!, |
| | **wider-***dem* **Recht** *Streitend*en | | [1]*um* |
| | 2 p gn | prp ak | [1]*zuvor* |
| σου | ἐπ’ | | [1]von |
| deiner*seits* | auf *zu* | | [1]*ihm* |
| deinem, | | | [1]*individuell* |
| | | ak ma | [1]Abänder*ung* |
| | ἄρχοντα | | [1]ge*schaff*en |
| *einen* | Anfänglichen | | [1]*zu* |
| | *Rang*anfänglichen | | [1]haben, |
| | *am* **Anfang** *Stehend*en | | |
| | Fürsten, | | |
| | | prp dt | |
| | ἐν | | |
| *noch* | in | | |
| | | dt fe | |
| τῇ | ὁδῷ | | |
| dem | Weg | | |
| | 2 p a2 i! kt | | |
| δὸς | | | |
| (*de facto*) gib du | *ihm* | | |
| | ak fe | | |
| ἐργασίαν | | | |
| Erwirktes | !, | | |
| Erarbeitetes | | | |
| | | | |
| | | | |
| *um* | *zuvor* | | |
| | | if pe md/ps | |
| | ἀπ-ηλλάχθαι | | |
| | *individuell* **ab-geändert** *zu* **haben** | | |
| | *individuell* **Ab-Änder***ung* **ge***schaff***en** *zu* **haben** | | |
| | *individuell* **losgekommen** *zu* **sein** | | |
| | | if pe md/ps (Vorgang + Zustand) | |
| | | | |
| | **ab-geändert worden** *zu* **sein** | | |
| | *zum* **Ab-Änder***ung schaff***en** *veranlaß***t worden** *zu* **sein** | | |
| | *zum* **Loskommen** *veranlaß***t worden** *zu* **sein** | | |
| | a, A, R: prp gn | 3 p gn ma | |
| ἀπ’ | αὐτοῦ | | |
| von | seiner | | |
| von *weg* | *ihm*, | | |

Mat 6.14+15
Spr 25.8

1 Kor 6.7

[1]aL,
**Codex Vaticanus**
schreibt
(„**von** *ihm*“ `fehlt`):
„*um*
*zuvor*
*individuell*
**Abänder***ung*
**ge***schaff***en**
*zu*
**haben,**“

ohne (...) a+pt lesbar

| | |
|---|---|
| | μή-ποτε |
| *auf daß* | **nicht-*irgend*wann** |
| | **nicht-einst** |
| 3 p pr kj | 2 p ak |
| κατα-σύρῃ | σε |
| **hinab-schleppen** *würde* **er** | **dich** |
| prp ak | |
| πρὸς | τὸν |
| **zu** | **dem** |
| ak ma | |
| κριτήν | καὶ |
| *Be***urteiler** | **und** |
| **Richter** | |
| | no ma |
| ὁ | κριτής |
| **der** | *Be***urteiler** |
| | **Richter** |
| 2 p ak | 3 p ft |
| σε | παρα-δώσει |
| **dich** | **daneben-geben wird er** |
| | **unmittelbar-geben wird er** |
| | **ausliefern wird er** |
| | dt ma |
| τῷ | πράκτορι |
| **dem** | *Urteil in die* **Praxis** *Umsetz***enden** |
| | *Urteil in* **Anwendung** *Umsetz***enden** |
| | **Gerichtsdiener** |
| καὶ | ὁ |
| **und** | **der** |
| no ma | 2 p ak |
| πράκτωρ | σε |
| *Urteil in die* **Praxis** *Umsetz***ende** | **dich** |
| *Urteil in* **Anwendung** *Umsetz***ende** | |
| **Gerichtsdiener** | |
| א, B: 3 p ft | [A: 3 p a2 kj kt] |
| \|βαλεῖ\| | [βάλῃ] |
| \|**werfen wird er**\| | [(*de facto*) **werfen** *würde* **er**] |
| \|**treibenwird er**\| | [(*de facto*) **treiben** *würde* **er**] |
| [R: 3 p pr kj] | prp ak |
| [βάλλῃ] | εἰς |
| [**werfen** *würde* **er**] | **hinein in** |
| [**treiben** *würde* **er**] | **hin** |
| | ak fe |
| | φυλακήν |
| *das* | **Gewahrsam** |
| *die* | **Verwahrung.** |
| *die* | **Obhut** |

[1]aL, **Textus Receptus** schreibt:
„**und der Gerichtsdiener dich** [h]**in** *die* **Verwahrung werfen** *würde***.**“

*auf*
*daß*
**er**
**dich**
**nicht**
*irgend***wann**
**zu**
**dem**
**Richter**
**hinabschleppen**
*würde***,**
**und**
**der**
**Richter**
**dich**
**dem**
**Gerichtsdiener**
**ausliefern**
**wird,**
[1]**und**
[1]**der**
[1]**Gerichtsdiener**
[1]**dich**
[1][h]**in**
[1]*die*
[1]**Verwahrung**
[1]**werfen**
[1]**wird.**

Mat 18.34

[1]aL,
**Codex Alexandrinus**
schreibt:
„**und**
**der**
**Gerichtsdiener**
**dich**
[h]**in**
*die*
**Verwahrung**
(*de facto*)[a]
**werfen**
*würde***.**“

| 59.) | | | 59.) |
|---|---|---|---|
| | 1 p pr | | |
| λέγω | | | |
| Worte ich | | - | |
| *Die* **Wort***e gebrauch***e ich** | | *zu* | |
| **Sage ich** | | - | |
| | 2 p dt | | |
| σοι | | | |
| **dir** | | *:* | |
| | | | |
| οὐ | | μὴ | |
| **Nicht,** | *ja* | **nich***t* | |
| **Keinesfalls** | | | |
| | | | 2 p a2 kj ef |
| | ἐξ-έλθῃς | | |
| **(***de facto***) heraus-kommen** *kann***st / *würd***est du** | | | |
| | av | | |
| ἐκεῖ-θεν | | ἕως | |
| **dort-***ge***setzt** | | **bis** | |
| **dort-sitzig** | | | |
| ***von* dort,** | | | |
| | [A: *prp gn* | | gn ne] |
| | | [τοῦ] | |
| [*betreffs* | | **dessen]** | |
| | [R: gn ma] | | ℵ, B, R: ak ne |
| [οὗ] | | \|τὸ\| | |
| **[welches]** | | **\|das\|** | |
| **[[w]daß]** | | **\|den\|** | |
| | [ℵ², A] | | aj ak ne |
| [τὸν] | | ἔσχατον | |
| **[das]** | | **letzte** | |
| **[den]** | | **letzten** | |
| | ak ne | | 2 p a2 kj ef |
| λεπτὸν | | ἀπο-δῷς | |
| **Schüppchen** | | **(***definitiv***) weg-geben** *kann***st / *würd***est du** | |
| **Lepton** | | **(***definitiv***) bezahlen** *kann***st / *würd***est du.** | |

[1]aL, **Codex Alexandrinus** schreibt:
„**bis** *betreffs* **dessen du (***definitiv***)[a] den letzten Lepton bezahlen** *kann***st.**“
[1]aL, **Textus Receptus** schreibt:
„**bis [w]daß du (***definitiv***)[a] den letzten Lepton bezahlen** *kann***st.**“

**Ich**
*gebrauch***e**
*die*
**Wort***e*
*zu*
**dir***:*
**Du**
*kann***st**
**(***de facto***)[a]**
**keinesfalls**
*von*
**dort**
**herauskommen,**
[1]**bis** Luk 12.50
[1]**du**
[1]**(***definitiv***)[a]**
[1]**den**
[1]**letzten**
[1]**Lepton**
[1]**bezahlen**
[1]***kann*st.**